भारतीय साहित्य के निर्माता

ग़ालिब

लेखक
मुहम्मद मुजीब

लिप्यंतरकार
रमेश गौड



साहित्य अकादेमी

Ghalib Devanagari transliteration by Ramesh Gaur of the monograph in Urdu by M Mujeeb Sahitya Akademi, New Delhi fourth edition (1982), Rs 4

प्रथम संस्करण १९७५
द्वितीय संस्करण १९८१
तृतीय संस्करण १९८१
चतुर्थ संस्करण १९८२

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फीरोजशाह रोड, नई दिल्ली ११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम कलकत्ता ७०००२९
१७२, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०००१४
२९ एलडाम्स रोड (दूसरा तल्ला) तेनामपेट, मद्रास ६०००१८

मूल्य चार रुपये

मुद्रक रूपाभ प्रिंटर्स, दिल्ली ११००३२

क्रम

१

गालिब का जमाना

मिर्जा असद उल्लाह खा 'गालिब' २७ दिसबर १७९७ को पैदा हुए।

सितबर १७९६ मे एक फ्रासीसी—पर्रों—जो अपनी किस्मत आजमाने हिदुस्तान आया था दौलत राव सिंधिया की 'शाही फौज' का सिपहसालार बना दिया गया। इस हैसियत से वह हिदुस्तान का गवनर भी था। उसने देहली का मुहासरा करके[1] उसे फतह[2] कर लिया, और अपने एक कमाडर—ले मारशा—को शहर का गवनर और शाह आलम का मुहाफिज[3] मुकरर[4] किया। उसके बाद उसने आगरा पर कब्जा किया। अब शुमाली[5] हिदुस्तान मे उसके मुकाबले का कोई नही था, और उसकी हुकूमत एक इलाके पर थी जिसकी सालाना मालगुजारी[6] दस लाख पाउड से ज्यादा थी। वह अलीगढ के करीब एक महल मे शाहाना[7] शानो शौकत[8] से रहता था। यही से वह राजाओ और नवाबो के नाम अहकामात[9] जारी करता और बगैर किसी मदाखलत[10] के चबल से सतलुज तक अपना हुक्म चलाता था।

१५ सितबर १८०३ ई० को जनरल लेक सिंधिया के एक सरदार बोर्गाई को शिकस्त[11] देकर फातिहाना[12] अदाज से देहली मे दाखिल हुआ। बोर्गाई का कुछ अर्से तक शहर पर कब्जा रह चुका था और उसने इसे अग्रेजो के लिए खाली करने से पहले बहुत एहतेमाम[13] से लूटा था। जनरल लेक शहशाह की खिदमत मे हाजिर हुआ उसे बड़े-बडे खिताब[14] दिए गए और शाह आलम और उसके जा नशीन[15] ईस्ट इडिया कपनी के वजीफा-ख्वार[16] हो गए।

---

१ घेर कर २ जीत ३ रक्षक ४ नियुक्त ५ उत्तरी ६ भूमि-कर ७ राजसी ८ ठाट बाट ९ आदेश १० रोक-टोक हस्तक्षेप ११ पराजय १२ विजयी विजेता १३ आयोजन १४ उपाधियाँ अलकरण १५ उत्तराधिकारी १६ वजीफा पाने वाले।

अट्ठारहवी सदी का दूसरा हिस्सा वह ज़माना था जब यूरोप से सिपाही और ताजिर[1] हिन्दुस्तान में अपनी किस्मत आज़माने आए और उन्होने खूब हंगामे किए। इसके मुकाबले में वस्त[2] एशिया से मौके और मआश[3] की तलाश में आने वालो की तादाद कम थी मगर थोडे बहुत आते ही रहे। इन्ही में से एक मिर्ज़ा काकान बेग, मुहम्मद शाही दौर के आखिर में समरकंद से आए और लाहौर में मुईन उल मुल्क के यहाँ मुलाज़िम[4] हुए। उनके बारे में हम बहुत कम मालूम है। उनके दो लडके थे, मिर्ज़ा गालिब के वालिद[5] अब्दुल्लाह बेग और नस्र उल्लाह बेग। अब्दुल्लाह बेग को सिपहगरी[6] के पेशे में कोई खास कामयाबी नही हुई, पहले वह आसिफ उद्दौला की फौज में मुलाज़िम हुए, फिर हैदराबाद में और फिर अलवर के राजा बख्तावर सिंह के यहाँ। बेशतर[7] वक्त उन्होने 'खाना दामाद'[8] की हैसियत से गुज़ारा। सन् १८०२ ई० में वह एक लडाई में काम आए, जब ग़ालिब की उम्र पाँच साल की थी। उनके सबसे करीबी[9] अज़ीज़[10], लोहारू के नवाब, भी तुर्किस्तान से आए हुए खानदान के थे और उनके जद्दे आला[11] भी उसी ज़माने में हिन्दुस्तान आए थे जबकि मिर्ज़ा कोकान बेग।

ऐसे हालात जबकि निज़ामे ज़िंदगी[12] के कायम रहने का ऐतबार[13] न हो और निज़ाम[14] और तसद्दुद[15] का दौर-दौर हो, जब मालूम होता हो कि सब कुछ चंद[16] जांबाज़ों[17] के हाथ में है, समाज पर अपना असर डालते हैं और मुस्तकिल[18] मायूसी[19] की फिज़ा[20] पैदा कर देते हैं। वैसे भी हस्सास[21] तबीअतें खुशी से ज़्यादा दर्द और ग़म की तरफ माइल[22] रहती हैं। ग़ालिब की ज़िन्दगी का पसे मंज़र[23] मुगल सल्तनत का ज़वाल[24], देहाती सरदारो का उभरना और इक्तिदार[25] हासिल करने के लिए उनके मुसलसल[26] मुकाबिले हैं मगर इन्हे कुछ खास अहमियत[27] नही दी जा सकती। हिन्दुस्तान मे सियासी[28] ज़िन्दगी का दायरा वसीअ[29] नही था, नमक हलाली की कद्र की जाती थी लेकिन सियासी वफादारी को आम तौर पर एक अख्लाकी[30] उसूल[31] नही माना जाता था। रिआया[32] के खैर-ख्वाह[33] हाकिम[34] अम्न[35] और इत्मीनान[36] कायम रखने की अपने बस भर कोशिश करते थे, मगर देहाती आबादी में ऐसे अनासिर[37] थे जो मौका पाते ही रहज़नी[38] शुरू कर देते। हम अगर अंदाज़ा करना चाहें कि शुमाली[39] हिन्दुस्तान की मुश्तरिक[40] शहरी

---

१ व्यापारी २ मध्य ३ जीविका ४ नौकर ५ पिता ६ सिपाहीगीरी ७ अधिकाश ८ घरजवाई ९ निकट के १० प्रिय व्यक्ति ११ पूर्वज १२ जीवन व्यवस्था १३ विश्वास १४ व्यवस्था १५ हिंसा १६ कुछ १७ जान पर खेले जाने वाले लडाके १८ स्थायी १९ निराशा २० वातावरण २१ संवेदनशील २२ प्रवृत्त २३ पृष्ठभूमि २४ पतन २५ सत्ताधिकार प्रभुत्व २६ निरंतर २७ महत्त्व २८ राजनैतिक २९ विस्तृत ३० नैतिक ३१ सिद्धांत ३२ प्रजा ३३ शुभचिंतक ३४ अधिकारी ३५ शांति ३६ संतोष विश्वास ३७ तत्त्व ३८ डाका डालना ३९ उत्तरी ४० मिली-जुली साझे की।

ही म महफ्लिें हो सक्ती थी जिनको शम्मएँ रोशन[१] करती और जहाँ परवान शोले पर फिदा होते, जहाँ आशिक और माशूक की मुलाकात होती। हम शहरो पर इसका इल्जाम[२] नही रख सकते कि उन्होन शहर को यह अहमियत दे दी, शहर और देहात की बेगानिगी सदियो से चली आ रही थी, य गोया हिन्दुस्तान के दो मुतजाद[३] हिस्से थे।

मुल्क की तकसीम[४] इसी एक नहज[५] पर नही थी। बादशाह, उमरा[६], सिपहसालार इक्तिदार[७] की कशमकश[८] मे मुब्तिला[९] थे, एक जुए के खेल म जहाँ हर एक हिम्मत, मौका और अपनी मस्लेहत[१०] के लिहाज से[११] बाजी लगाता, बाकी आबादी को बस अपनी सलामती[१२] की फिक्र थी। जमीर[१३] और अख्लाकी[१४] उसूल बहस मे नही आते थे, बाजी हारना और जीतना किस्मत की बात थी। आम मफाद[१५] का कोई तसव्वुर था भी तो वह जाती[१६] अगराज[१७] की गजलक[१८] म खो जाता और अगर कोई आम मफाद को महसूस करता और उसे बयान करना चाहता तो उसे दीनी[१९] और फिकही[२०] इस्तलाहो[२१] का सहारा लना पडता, जिसका लाजमी[२२] नतीजा यह होता कि एक मजहबी बहस खडी हो जाती। शाह इस्माइल शहीद की तसानीफ[२३] म जहा कही सियासी मसाइल[२४] मौजू ए बहस[२५] हैं वहा हम दखते है कि एक नेकनीयत इसान जिसकी ख्वाहिश यह थी कि हुकूमत की बुनियाद अदल[२६] पर हो सिफ अपन गम और गुस्स का इजहार[२७] कर सकता था, कोई वाजिह[२८] और मुदल्लल[२९] बात कहना मुमकिन ही नही था। शाइर को इख्तियार था कि अहले दौलतो सवत[३०] की शान मे कसीदे[३१] लिखे या तवक्कुल[३२] पर दरवेशा की सी जिन्दगी गुजारे। किसी मुरब्बी[३३] पर भरोसा करने से आला[३४] मेयार[३५] की शाइरी करने म रुकावट पैदा नही होती थी, मुरब्बी का अहसान मानना एक रस्मी[३६] बात थी, इश्क और वफादारी का मुस्तहक[३७] सिफ माशूक था और शाइर अपनी तारीफ भी जिस अदाज स चाहता कर सकता था। अगर वह किसी हद तक भी नाम पैदा करता तो उसका शुमार मुन्तखब[३८] लोगो म होता था और उसकी दुनिया मुन्तखब लोगो की दुनिया होती थी।

---

१ प्रकाशित २ आरोप ३ प्रतिकूल परस्पर विरोधी ४ विभाजन ५ ढग ६ अमीर का बहुवचन ७ सत्ताधिकारी ८ सघर्ष ९ व्यस्त १० स्वार्थ हित ११ दृष्टि से १२ कुशल क्षेम सुरक्षा १३ अन्तरात्मा १४ नतिक १५ लाभ १६ व्यक्तिगत १७ स्वार्थ (गर्ज का बहुवचन) १८ उलझन १९ धार्मिक २० धर्मशास्त्रीय २१ पारिभाषिक शब्दावली २२ अनिवार्य २३ प्रथा रचनाओ २४ समस्याए २५ विवाद का विषय २६ न्याय २७ अभिव्यक्ति २८ स्पष्ट २९ तक-सगत ३० धनाढय और समद्ध लोग ३१ प्रशसा-काव्य ३२ अल्लाह क भरोसे ३३ सरक्षक अभिभावक ३४ ऊचा श्रष्ठ ३५ आदश ३६ पारपरिक ३७ अधिकारी ३८ चुने हुए।

एक और तक्सीम[1] आज़ाद यानी शरीफ मर्दों और औरतों की थी। आम तौर पर लोगों को अंदेशा[2] था कि देखने से गुफ्तगू[3] और गुफ्तगू से बदन छूने तक बात पहुँचती है, और बदन छूने का नतीजा यह हो सकता था कि दोनो फरीक[4] बेकाबू हो जाएँ। इस अंदेशे ने एक रस्म बनकर आज़ाद ना महरम[5] मर्दों औरतों को सख्ती के साथ एक दूसरे से अलग कर दिया। इसी वजह से आज़ाद औरतों के बारे में लिखना उन्हें ज़बान और अदब की आंखों से देखने के बराबर और इसलिए ना मुनासिब[6] करार दिया गया।[7] इश्क से मुराद[8] मर्द-औरत की वह मुहब्बत नहीं थी जिसका मकसद[9] रफीके हयात[10] बनना हो, और इस बिना[1] पर शाइर यह ज़ाहिर नहीं कर सकता था कि उसका माशूक मर्द है या औरत। माशूक के चेहरे और कमर का ज़िक्र किया जा सकता था, इसके अलावा उसके जिस्म के बारे में कुछ कहना बेहूदगी में शुमार होता था, अगरचे[1] एक दौर भी गुज़रा है जब बदन में उरयानी[11] वज़[12] के खिलाफ नहीं समझी जाती थी। लेकिन कायदे की पाबन्दी का मतलब यह नहीं था कि औरत के वुजूद[13] का भी नज़रन्दाज़[14] किया गया। उन मिसालों को छोड़कर जहां ईरानी रिवायत[15] की पाबन्दी में माशूक को अमरद[16] माना गया है, यह साफ ज़ाहिर हो जाता है कि उर्दू के शाइर का माशूक औरत है। अलबत्ता इस बात का पता उसके तौर-तरीके [illegible] से चलता है जिस्मानी[17] तफसीलात[18] से नहीं, और पसमंज़र भी नहीं है बल्कि [illegible] की वजह[19]।

थी। उनकी शख्सियत[1] में बड़ा वकार[2] था और अगरचे उन्हें इस्लाह[3] का काम शुरू किए ज्यादा अर्सा नहीं हुआ था, साहिबे खान[4] ने उन्हें फौरन पहचान लिया। उसके सवाल के जवाब में कि वह कैसे तशरीफ लाए हैं शाह साहब ने कुरआन की एक आयत[5] पढ़ी और एक वाज[6] कहा जिसको सुनकर तवाइफें आबदीद[7] हो गई। नदामत[8] से आँसू बहाना तवाइफों की तहजीब में शामिल था, अगरचे निजात[9] की खातिर पेशा तक कर देना[10] काबिले तारीफ[11] मगर खिलाफे-मामूल[12] समझा जाता था। तवाइफें अपने खास कायदों और रस्मों के मुताबिक[13] जिन्दगी बसर करती थी और अगर एक तरफ उनका पेशा बहुत गिरा हुआ माना जाता था तो दूसरी तरफ वाज[14] ऐतबार से[15] इस नुक्सान की कुछ तलाफी[16] भी हो जाती थी।

वह बज्म, जिसका उर्दू शाइरी में इतना जिक्र आता है, दोस्तों की महफिल नहीं होती थी, लोग किसी मेजबान की दावत[17] पर जमा नहीं होते थे, न तहजीबी मशागिल[18] के लिए आम इजतमा[19] होता था। ऐसी महफिलों में माशूक और रकीब[20] और गैर[21] का क्या काम होता, मगर तवाइफ की बज्म में यह सब मुमकिन था। गालिब ने ये शेर कहे तो ऐसी ही बज्म उनकी नजर में होगी—

मैंने कहा कि बज्मे नाज[22] चाहिए गैर से तही[23]
सुनकर सितम-जरीफ[24] ने मुझको उठा दिया कि यूँ

हाँ वो नहीं खुदापरस्त[25] जाओ वो बेवफा सही
जिसको हो दीनो दिल अजीज[26] उसकी गली में जाए क्यों

हम जितना उन सूरतों पर गौर करें जिनमें कि माशूक एक औरत है और देखें कि वह आशिक के साथ क्या बर्ताव करती है उतना ही यह वाजह[27] हो जाता है कि इस शाइराना इस्तआर[28] से मुराद क्या है और उतना ही साफ बज्म का नक्शा हो जाता है। इसका हरगिज यह मतलब नहीं है कि वो तमाम शाइर जो माशूक की बज्म का जिक्र करते हैं तवाइफों की बज्म में शरीक[29] होते थे जैसे शराब और मयखाना का जिक्र करने का यह मतलब नहीं है कि वो शराब की

---

१ व्यक्तित्व २ वैभव ३ सुधार ४ मेजबान आतिथेय गृह-स्वामी (स्वामिनी) ५ वाक्य ६ प्रवचन ७ आँखें भर लाई ८ लज्जा पश्चात्ताप ९ मुक्ति १० छोड़ देना ११ प्रशंसनीय १२ सामान्य आचरण के प्रतिकूल १३ अनुसार १४ कुछ १५ दृष्टियों से १६ क्षतिपूर्ति १७ आमंत्रण १८ कार्यों १९ सभा सम्मेलन २० प्रतिद्वन्द्वी २१ पराया २२ प्रेमिका की महफिल २३ खाली २४ विनोद विनोद में सताने वाला सितम करने वाला २५ खुदा भक्त २६ प्यारा प्रिय २७ स्पष्ट २८ रूपक २९ सम्मिलित।

दुकान पर बैठकर ठर्रा चलाते थे। मगर इसमे शक नही कि शहर म लौंडियो और खादिमाओं[1] और मज़दूर-पेशा औरतो के अलावा सिर्फ तवाइफें बे नकाब[2] नजर आती थी नाजो-अदा दिखाने, तल्ख[3] और शीरी[4] गुफ्तगू करने, लुत्फ और सितम से पेश आने का मौका उन्ही को था। उन्हें नाच और गाने के अलावा गुफ्तगू का फन[5] सिखाया जाता था और तवाइफो की बज्म ही एक ऐसी जगह थी जहा मर्द बे तकल्लुफी[6] और आजादी के साथ रंगीन गुफ्तगू फिकरेबाजी और हाजिर जवाबी मे अपना कमाल दिखा सकते थे। बडी खानदानी तकरीबो[7] मे तवाइफा का नाच-गाना कराना खुशहाल घरानों का दस्तूर[8] था और जो लोग 'बज्म' म शिरकत करना पसद न करते व ऐसे मौको पर गुफ्तगू के फन म अपना हुनर[9] दिखा सकते थे। शरीफो और तवाइफा के यक जा[10] होन के मौके उस फराहम[11] करते थे, जिनमे से अक्सर मे तवाइफो को शरीक होने की इजाजत थी। अब हम खुद ही सोच सकते हैं कि माशूक की तस्वीरें किस बुनियादी अक्स[12] को सामने रखकर बनाई गई होंगी और ऐसी औरत कौन हो सकती थी जिसका कोई खानदान न हो, ताल्लुकात[13] और जिम्मेदारियाँ न हो और जो इस वजह से एक वुजूदे महज़[14] एक खालिस[15] जमालियाती[16] तसव्वुर[17] म तब्दील की जा सके।

उन्नीसवी सदी के निस्फ आखिर[18] की जहनी कैफियत[19] और इस्लाह की मुख्लिसाना[20] कोशिशो ने इस हकीकत[21] पर पर्दा डाल दिया है। दूसरी तरफ पारसा मिजाज[22] और हया-जदा[23] लोग इस पर मुसिर[24] रहे हैं कि मयखाना और शराब की तरह माशूक भी एक अलामत[25], एक इस्तआर है, जिसे मजाज़ी[26] कसाफता[27] से कोई निस्बत[28] नही। उन्हें अपनी जिद पूरी करने मे कोई दुश्वारी[29] नहीं होती, इसलिए कि सूफियाना[30] शाइरी की रिवायत[31] न तमाम कैफियता[32] को और खास तौर से आसिको माशूक के रिश्ते को एक रूहानी[33] हकीकत का अक्स माना है। लेकिन इस वजह न हमारे ज़माने के नक्काद[34] क्या समाजी हालात को नजरदाज करें और क्यो शाइर को इस इल्ज़ाम से न बचाएँ कि उसका माशूक बिलकुल फर्जी[35], उसका इश्क महज़ धोका और एहसासात[36] 'खालिस तम ना'[37] हैं।

जब कुछ और समाजी हालात को देखिए जिनका अदब पर असर पडा।

---

१ सेविकाओं २ बेपर्दा ३ कड़वी ४ मीठी ५ कला ६ अनौपचारिक [illegible] उत्सव-आयोजन ८ चलन ९ कौशल १० एक स्थान पर [illegible] उपलब्ध १२ प्रतिबिम्ब १३ संबंध १४ अस्तित्व मात्र १५ शुद्ध १६ सौन्दर्यशास्त्रीय १७ कल्पना १८ उत्तरार्ध १९ मानसिक स्थिति मनोदशा २० सौहार्दपूर्ण २१ वास्तविकता २२ धर्मनिष्ठा २३ लोक-लाज के मारे हुए २४ आग्रही २५ प्रतीक २६ लौकिक २७ विकारों २८ संबंध २९ कठिनाई ३० सूफियों (सांसारिक मोहों से मुक्त होकर ईश्वर साधना में लगे लोगों)—जैसी ३१ परंपराओं ३२ स्थिति ३३ आध्यात्मिक ३४ आलोचक ३५ कृत्रिम ३६ अनुभूतियाँ ३७ बनावटी।

शहरा म शरीफा के लिए पदल चलना दस्तूर न था, किसी किस्म की सवारी पर आना जाना लाजिमी था। घाड गाडी का रिवाज अंग्रेजा की वजह से हुआ, घाडे की सवारी लम्बे सफर पर की जाती शहर के अन्दर इसका रिवाज न था। आम सवारी किसी किस्म की पालकी थी। इसका नतीजा यह था कि कोई हैसियत वाला अकेला टहल नही सकता था, रास्ते म खडे होकर लोगो को अपने काम से आते-जाते नही देख सकता था, सेहत[1] की खातिर भी पैदल सैर नही कर सकता था अवाम[2] घुल मिल नही सकता था, अवाम म घुलन मिलने का और कोई इम्कान[3] नही था। शरई[4] कानून के मुताबिक सब इसान बराबर थे और इस कानून को मानने से किसी न इन्कार नही किया। लेकिन कानून न इसका हुक्म नही दिया था कि लोग आला[5] और अदना[6] अमीर और गरीब के फक को नजरदाज करके सबसे बराबर की हैसियत वालों की तरह मिलें, और उस कायदो पर, जिनकी वजह से मुख्तलिफ[7] तब्क़[8] अलग रहते थे, सख्ती से अमल किया जाता था। मुमकिन है कि यह जातो की तक्सीम[9] का असर हो, क्योंकि हिन्दुस्तानी मुसलमानो के तौर तरीक म बाज बातें है जो इस्लामी मुल्को म नही मिलती हैं बहरहाल, समाजी तक्सीम के इन कायदो के वुजूद[10] से इन्कार नहीं किया जा सकता। इनकी वजह से शाइर अवाम से अलग और शाइरी अवाम के जज्बात[11] से दूर रही। सिफ 'नजीर अकबराबादी' ने शाइरी को इस कर्तीन[12] से निकाला और उनके कलाम का हुस्न[13] और उसकी रगीनी इसकी शहादत[14] देती है कि उर्दू शाइरी ने समाजी पाबदी का लिहाज करके अपने आपको बहुत सी वारदाते कल्बी[15] से महरूम[16] रखा। लेकिन 'नजीर अकबराबादी' के तरीके को शाइरा और नक्कादो[17] न पसद नही किया, और उनके हम-अस्र[18] लोगो पर उनके कलाम का असर नही हुआ। इस तरह शाइर के एहसासात[19] का ताल्लुक[20] उनकी जात[21] से ही रहा, उसकी कफियतें[22] समाज की खुशी और रज से अलग और मुख्तलिफ[23] रही।

सफर का रिवाज भी इसानो को एक दूसरे के करीब लाने का जरिया[24] है, लेकिन यह भी समाज मे रब्त[25] पदा न कर सका। सफर करना मुश्किल था, लोग शहर से बाहर निकलने से घबराते थे। 'गालिब' का एक फारसी का शेर है—

---

१ स्वास्थ्य २ जनता साधारण लोग ३ सभावना ४ इस्लाम धम के ५ उच्च ६ साधारण तुच्छ ७ विभिन्न ८ वग ९ विभाजन १० अस्तित्व ११ भावों भावनाओं १२ दायरा १३ सौंदय १४ साक्षी गवाही १५ हार्दिक घटनाए १६ वचित १७ आलोचको १८ समकालीन १९ भावनाओ २० सबध २१ निज से शरीर से २२ स्थिति २३ भिन्न २४ माध्यम २५ सपक।

अगर ब-दिल[1] न खलद[2] हर चे[3] हर नजर[4] गुजरद[5]
खुशा[6] रवानी ए उम्रे[7] कि दर सफर[8] गुजरद

लेकिन दर-असल वह सफर की जहमतो[9] से बचना चाहते थे। कलकत्ता जाते हुए उन्हें जो लुत्फ[10] आया वह मुलाकातो और सुहबतो[11] का लुत्फ था, या फिर नए शहर देखने का। बनारस और कलकत्ता दोनो की उन्होने फारसी की मस्नवियो मे बहुत तारीफ की है।

कानून और रस्मो रिवाज दोनो हर फर्द[12] को समाज और उस जमात[13] का, जिसका वह रुक्न[14] होता, मातहत[15] और पाबंद रखते थे। शायद इसीसे रिहाई[16] हासिल करने[17] के लिए हस्सास[18] अफराद[19] दिलो दिमाग की तनहाई[20] मे अपनी जिन्दगी अलग बनाते थे। इसके अलावा उस दौर मे अलग अलग जहनी[21] खानो मे बन्द होकर सोचने और अमल[22] करने की एक अजीबो-गरीब कैफियत थी। शाइर को उन सियासी[23] तब्दीलियो[24] से, जिनका शुरू मे जिक्र किया गया, इस कद्र कम वास्ता[25] था कि गोया[26] शाइरी और सियासी जिन्दगी मे कोई लाजिमी[27] और कुदरती[28] ताल्लुक नही। 'गालिब' ने अपनी एक फारसी की मस्नवी मे वुजूदियो[29] और शहूदियो[30] के इख्तलाफात[31] का जिक्र किया है, मगर इसके बावजूद यह कहना गलत नही है कि उस दौर की इस्लाही[32] तहरीरो[33] का जिनकी रहनुमाई[34] सैयद अहमद शहीद और शाह इस्माइल शहीद जैसे बुजुर्ग कर रहे थे, शाइरी पर कोई खास असर नही पडा। 'गालिब' ने जहा कही जाहिद[35] और वाइज[36] का जिक्र किया है उससे मुराद[37] रिवायती[38] जाहिद और वाइज है, उनके अपने जमाने के लोग नही है। खुद गजल का तर्ज[39] खानो मे बंद होकर सोचने की एक नुमाया[40] मिसाल[41] है कि गजल के हर शेर का अलग मौजू[42] होता है और उसका पिछले और बाद के शेर से कोई ताल्लुक नही होता। बेशक गजलो मे भी कभी कभी खयाल का तसल्सुल[43] मिलता है और इसकी भी मुमानियत[44] नही थी, लेकिन मुनासिब[45] यह था कि हर शेर का मजमून[46] अलग हो। मालूम होता है

---

१ दिल मे २ न चुभे ३ जो कुछ ४ नजर मे ५ गुजरे ६ कितना अच्छा है ७ उम्र की रवानी ८ सफर मे ९ कष्टो १० आनन्द ११ संग-साथ १२ व्यक्ति १३ समुदाय वर्ग १४ सदस्य १५ अधीन १६ मुक्ति १७ प्राप्त करने १८ संवेदनशील १९ व्यक्ति (फर्द का बहुवचन) २० एकांत २१ मानसिक २२ आचरण २३ राजनैतिक २४ परिवर्तन २५ सबंध २६ मानो २७ अनिवार्य २८ प्राकृतिक स्वाभाविक २९ अस्तित्ववादी सूफी ३० साक्ष्यवादी सूफी ३१ मतभेद ३२ सुधारक सुधारवादी ३३ आदोलन ३४ पथ प्रदर्शन ३५ ईश्वर भक्त खुदापरास्त ३६ धर्मोपदेशक ३७ आशय ३८ पारंपरिक ३९ शैली ४० प्रकट खुला ४१ उदाहरण ४२ विषय ४३ नैरंतर्य ४४ वर्जना ४५ उचित ४६ विषय।

9620

कि 'गालिब' के दौर मे शाइर व सियासत[1], समाज और मजहब[2] के मुआमलात[3] से अलग रहने का असल सबब[4] यह था कि जिन्दगी का मुख्तलिफ[5] खानो म तकसीम[6] होना आम तौर पर तस्लीम[7] कर लिया गया था। शाइरो म इन-फरादियत[8] को फरोग[9] वहदत उल-वुजूद[10] के नजरिये[11] की वजह स भी हुआ। इस नजरिये के मुताबिक[12] इसान और उसके खालिक[13] के दरमियान व राहे रास्त[14] ताल्लुक हो सकता था, किसी वसीले[15] की जरूरत नही थी, इस तरह शाइर अकीदे[16] और अमल के मुआमलात म खुद फैसला करने का इख्तियार[17] रखता था, और समाज स अलग होकर वह अपनी इनफरादियत का जो तसव्वुर[18] चाहता कायम कर सकता था, अपनी जिन्दगी का अलग नस्ब उल एन[19] मुकरर करक चाहता तो कह सकता था कि इश्क, आशिक और माशूक के सिवा जो कुछ है सब हेच[20] है।

---

१ राजनीति २ धर्म ३ मामला ४ कारण ५ भिन्न भिन्न ६ विभाजन ७ स्वीकार ८ व्यक्तित्ववाद ९ प्रोत्साहन १० अद्वैतवाद ११ विचारधारा दृष्टिकोण १२ अनुसार १३ स्रष्टा १४ सीधा १५ माध्यम १६ दृढ विश्वास आस्था १७ अधिकार १८ विचार कल्पना १९ उद्देश्य लक्ष्य २० तुच्छ।

:

गालिब का उर्दू कलाम

मिर्जा 'गालिब' न लिखा है कि उन्हें शेरो शाइरी का शौक उसी जमाने से हुआ जब से कि वह लहू-वो लइब[1] और 'फिस्को-फुजूर'[2] में पड गए, गोया यह शौक उनकी शख्सियत[3] के फरोग[4] की अलामतों[5] मे से एक अलामत थी। उनके इब्तिदाई[6] कलाम के नमूने हमारे सामने होते और उन्हें वक्ते तसनीफ[7] के एतबार से[8] तरतीब[9] दिया जा सकता तो हम अदाजा कर सकते कि उनकी जौलानी[10] उन्हे किन सम्तों[11] मे कितनी दूर तक ले गई, और उन्हें अपनी खास सलाहियतों[12] और असल[13] जौक[14] का एहसास[15] किस तरह हुआ। बडे अफसोस की बात है कि 'गालिब' ने अपना सारा कलाम, रद्दी को रद्दी समझकर भी पडा नही रहने दिया, और पहले इन्तखाब[16] मे जो कुछ उन्होंने शामिल नही किया वह हमेशा के लिए जायअ[17] हो गया है। जो रहा सहा इम्कान[18] 'गालिब' की अदबी[19] और जमालियाती[20] नश्वो नुमा[21] का पता लगाने का था, वह गजलों को रदीफवार[22] तरतीब देने के दस्तूर[23] ने बाकी न रखा। अब क्या मालूम कि यह शेर पद्रह, सोलह या बीस बाईस बरस की उम्र मे कहा गया था—

उरूजे-नाउमीदी[24] चश्मे-जख्मे चर्ख[25] क्या जाने
बहारे बेखिजां[26] अज[27] आहे बेतासीर[28] है पैदा

---

१ खेल कूद २ दुराचार ३ व्यक्तित्व ४ व्यापकता ५ प्रतीकों ६ प्रारंभिक ७ रचना कला ८ दृष्टि से ९ क्रमबद्ध १० स्फूर्ति उमंग ११ दिशाओं १२ योग्यताओं समझदारी १३ वास्तविक १४ आनंद १५ अनुभव होना १६ चयन १७ नष्ट १८ संभावना १९ साहित्यिक २० सौन्दर्यशास्त्रीय २१ विकास २२ तुकांत क्रम से २३ नियम २४ नैराश्य का उत्थान २५ आकाश के घाव की आंख २६ बिना पतझड की बहार २७ से २८ प्रभावहीन विलाप।

और जब कहा गया था तो 'गालिब' आहे बेतासीर की रूहानी[1] और फलसफयाना[2] गहराइयो से वाकिफ[3] थे या महज[4] अल्फाज[5] जोडने की एक तरकीब उनकी समझ मे आई थी।

'गालिब' के उर्दू के पहले और दूसरे दौर के कलाम म बाज[6] खसूसियतें[7] मुश्तरिक[8] हैं जिनम सबसे नुमाया यह है कि वह चन्द[9] खतूत[10] खीचकर छोड देते हैं और तस्वीर का मुकम्मल[11] करना पढन या सुनन वाले पर छोड दते है जिनसे एक स ज्यादा तस्वीरें बन सकती है, कभी ऐसे कि जिस तरह भी जोडिए और तोडिए कोई वाजेह[12] तस्वीर बनती ही नही। दरबार मे रसूख[13] पदा होने की वजह स 'गालिब' ने अपनी इन्फरादियत[14] तर्क[15] नही कर दी, हुस्न[16] की जुल्फो मे अक्ल के पेच डालते रहे, लेकिन सामईन[17] का लिहाज[18] रखना जरूरी था, खास तौर पर बहादुर शाह की रूमानियत का। यही सामईन का लिहाज है जिसने 'गालिब' को मुहावरे बरतने और आम मजाक[19] के मुताबिक शेर कहने पर आमादा[20] किया, इसीने उन्हें हर-दिल-अजीज[21] बना दिया। उसके इब्तिदाई दौरे के आला[22] कलाम मे वह शान है जो पहाड की चोटी की चमकती बर्फ मे होती है दूसरे दौरे म यह बर्फ पिघलती, चश्मे बनकर नीचे बहती है, सिर्फ चोटी नही बल्कि पूरा पहाड सामने आ जाता है जगल नजर आते है, हवाएँ चलती हैं, चश्म गीत गाते हुए नदी म उतरते है। मगर बुलंदी[23] फिर बुलंदी है आबशार[24] और सब्जाजार[25] उसके नीचे ही होते हैं।

यह एक कुदरती बात थी कि 'गालिब' पर दूसरे शाइरो का असर हो। जहाँ तक मुझे मालूम है, दुनिया के किसी शाइर ने किसी दूसरे शाइर की अजमत[26] का उस तरह एतराफ[27] नही किया जसे कि 'गालिब' ने 'बेदिल' का—

जोशे दिल है मुझसे हुस्ने फितरते 'बेदिल'[28] न पूछ
कतरे[29] से मयखान ए दरिया-ए बेसाहिल[30] न पूछ

'बेदिल' के तर्ज पर उर्दू म शेर कहने के इरादे ने 'गालिब' को मुश्किल-पसद बना दिया कभी इस मुश्किल पसदी का खयाल स कोई निस्बत नही होती है। मसलन्[31] एक जगह एक औरत को झुककर सलाम करने की तस्वीर इन अल्फाज म खीचते

---

१ आध्यात्मिक २ दार्शनिक ३ परिचित ४ मात्र ५ शब्द (लफ्ज का बहुवचन) ६ कुछ ७ विशेषताए ८ समान ९ कुछ १० लकीरें रेखाएँ ११ पूर्ण १२ स्पष्ट १३ मेल जोल पहुच, १४ वयक्तिकता विशिष्टता १५ छोडना १६ सौन्दर्य १७ श्रोताओं १८ ध्यान सम्मान १९ रुचि प्रवृत्ति २० तत्पर सन्नद्ध २१ सर्वप्रिय २२ श्रेष्ठ २३ ऊचाई २४ झरना २५ जगल झाडी २६ महत्ता बडप्पन २७ स्वीकृति स्वीकार करना २८ 'बेदिल' की प्रकृति का सौन्दर्य २९ बूँद ३० तटहीन नदी ३१ उदाहरणार्थ।

हैं, गोया एक खूबसूरत मूसल से सकाती[1] की मश्क[2] कर रहे हैं—

> सरोकारे-तवाजअ[3] ताखम[4] गेसू, रसानीदन[5]
> व साने शान[6] जीनतरेज[7] है दस्ते सलाम[8] उसका

इस शुरू के दौरे मे 'गालिब' का कलाम लोगो को हैरत मे डाल देता होगा, शेर सुनकर लुत्फ आना चाहिए, इसके बजाय उनके इल्म[9] और अक्ल[10] का इम्तहान होता था। लेकिन 'गालिब' के कलाम को नजरदाज[11] करना भी मुमकिन[12] न था, इसका मतलब तो यह होता कि अपनी आजिजी[13] का एतराफ[14] किया जाए, कहा जाए कि 'गालिब' की जबान म फारसी ज्यादा है, इतनी फारसी हम नही समझते, 'गालिब' आम फहम[15] नही हैं, और हमारी समझ बस इतनी है जितनी कि आम तौर पर लोगो म होती है, 'गालिब' नुक्ता शिनासी[16] का मुतालबा[17] करते हैं, हमारी रसाई[18] सिफ उन एहसासात[19] तक है जो मामूली इल्म और तजुर्बा[20] पैदा करते हैं हम उन्ही कफियतो को जानते हैं जो सबके दिलो पर गुजरती हैं, 'गालिब' की मानी आफरीनी[21] हमे मुअम्मा आफरीनी[22] मालूम होती है और मुअम्मे[23] हल करने की हमम काब्लियत[24] नही। इस तरह लोग सुनन और समझन की कोशिश करने पर मजबूर हो जाते होगे। 'गालिब' न फारसी और उर्दू को एक नए ढग से मिलाकर अपनी अलग और अनोखी जबान बनाई थी जिसमे ईजाज[25] की हैरत-अगज[26] गुजाइश थी और जो शेर के मैदान को मानी आफरीनी के लिए वसीअ[27] से वसीअतर कर दती थी।

यह मानी आफरीनी, यह दिलो दिमाग म नई कफियतें, नए हगामे पदा करने वाली ताकत क्या थी? पहले दौर का एक शेर मिसाल के तौर पर लीजिए—

> कुल्फते[28]-रब्ते[29]-ईनो[30]-आं[31] गफलते[32] मुद्दआ[33] समझ
> शौक[34] करे जो मर गरां[35], महमले[36] ख्वाबे पा[37] समझ

कहा जाता है कि इसान को दुनिया और आकिबत[38] के दरमियान रब्त[39]

---

१ सुलेख २ अभ्यास ३ आदर आवभगत ४ बाला के पेचोखम तक ५ पहुचाना ६ कघे की तरह ७ बनाव-श्रृगार का प्रदर्शन ८ सलाम करने क लिए उठा हुआ हाथ ९ नान १० बुद्धि ११ उपेक्षा करना १२ सभव १३ विवशता १४ स्वीकृति स्वीकार करना १५ सबको समझ म आने वाला १६ ममज्ञता १७ माग १८ पहुच १९ मनोभावो २० अनुभव २१ अर्थोत्पत्ति २२ पहेलियाँ बनाना २३ पहेलियाँ २४ योग्यता २५ सक्षिप्तता २६ आश्चयजनक २७ विस्तत २८ दुख २९ सबध ३० इस ३१ उस ३२ विस्मरण ३३ उद्देश्य ३४ जिज्ञासा ३५ सिर को भारी ३६ ऊट पर कसा जाने वाला कजावा ३७ सोए हुए पर का स्वप्न ३८ दूसरी दुनिया ३९ सबध।

और हम-आहंगी[1] पैदा करना और काइम[2] रखना चाहिए। लेकिन 'गालिब' के नजदीक इसकी कोशिश करना इंसानी जिंदगी के मुद्दआ और मकसद[3] से गाफिल[4] हो जाने के बराबर है। जिंदगी का मुद्दआ यह है कि इंसान शौक को रहनुमा[5] बनाए, जोशे इश्क[6] हुस्न परस्ती[7], तखय्युल[8] की जौलानी[9] को अस्ले-हयात[10] समझे, अगर कभी थकन मालूम हो तो यह न खयाल करे कि इसका सबब मुसलसल[11] सरगर्दानी[12] है कि जो चलता रहे उसका पैर नहीं सोता, अलबत्ता जो चलते चलते रुक जाए, बैठ जाए, उसका पैर सो जाएगा। सरगरानी शौक की वजह से नहीं, सुस्ताने के खयाल से पैदा होती है। यह खयाल दिल से निकल जाए तो सरगरानी न हुआ करेगी।

बाज लोग कहेंगे कि यहां 'गालिब' ने दीन[13] के एक बुनियादी[14] उसूल[15] से इंकार किया है अख्लाकी[16] बेलगामी[17] की दावत दी है, बाज मुतालिबा[18] करेंगे कि शौक की और उस बे-मंजिल सफर की वजाहत[19] की जाए जो शौक का नतीजा होता है, बाज इस शेर को शेर न मानेंगे। तीनों किस्म के तास्सुरात[20] का सबब समझ में आ सकता है। जो लोग दीन को इंसान से और इंसान को दीन से अलग करके मंतिक[21] का हक अदा करना चाहते हैं जिन लोगों का अकीदा[22] है कि जिंदगी में अख्लाकी[23] नज्म[24] और जब्त[25] होना चाहिए वो भूल जाते हैं कि यह नज्म और जब्त मकसद[26] नहीं है जरिया[27] है आगे की मंजिलों तक पहुँचने का, जो लोग तसव्वुरात[28] की वजाहत[29] चाहते हैं उन्हें तसव्वुरात से ज्यादा वजाहत से मतलब होता है जिन लोगों को इस शेर में शेरियत नजर ही नहीं आती वो शेर से लुत्फ-अंदोज[30] होना चाहते हैं अपने जज्बात[31] के लिए एक महर्रिक[32] चाहते हैं, तबीअत को हल्का करना, गमे रोजगार[33] को गमे-इश्क[34] के सहारे से भुलाना चाहते हैं उन्होंने जिंदगी को जैसी कि वह है, तस्लीम[35] कर लिया है, इम्कानात[36] पर गौर नहीं करते, आदमी जिस हद तक इंसान बन गया है, उसे काफी समझते हैं, उसके आगे उन्हें और कुछ नजर नहीं आता। 'गालिब' ने आजाद इंसानियत की तलाश में क्या कुछ महसूस और मालूम किया यह वो हम नहीं बताते, शाइर का मनसब[37] रहनुमाई[38] करना नहीं है बल्कि आम इम्कानात की सैर का ऐसा शौक पैदा करना है कि आदमी खुद बेचैन होकर निकल खड़ा हो।

---

१ वार्तालाप साथ मिलकर बोलने की क्रिया २ कायम ३ उद्देश्य ४ असावधान बेसुध ५ पथ प्रदर्शक ६ प्रेमोत्कर्ष ७ सौन्दर्य प्रेम ८ कल्पना ९ स्फूर्ति १० जीवन का मूल ११ निरंतर १२ सिर घूमना १३ धर्म १४ आधारभूत १५ सिद्धांत नियम १६ नैतिक १७ स्वच्छंदता १८ माँग १९ स्पष्टीकरण २० प्रभावों २१ तर्कशास्त्र २२ विश्वास २३ नैतिक २४ व्यवस्था २५ आत्म नियंत्रण २६ साध्य २७ साधना २८ कल्पनाओं, विचारों २९ स्पष्टीकरण ३० रसास्वादन ३१ मनोभावों ३२ प्रेरक ३३ सांसारिक दुःख ३४ प्रेम पीड़ा ३५ स्वीकार ३६ संभावनाओं ३७ कर्तव्य ३८ पथ प्रदर्शन।

उसी इब्तिदाई दौर की एक ग़ज़ल है जिसके चार शेर कैफ़ियतों का एक सिलसिला पेश करते हैं—

मिज़[1] पहलू ए चश्मे[2]-जल्व ए इदराक[3] बाक़ी है
हुआ वो शोला दाग़ और शोखी[4] ए खाशाक[5] बाक़ी है
गुदाज़े[6] सई[7] ए बीनिश[8] शुस्तो-शू[9] से नक्शे[10] खुदनुमाई
सरापा[11] शबनम आईं[12], यक निगाहे पाक[13] बाक़ी है
चमन ज़ारे तमन्ना[14] हो गया सर्फ़े खिज़ां[15] लेकिन
बहारे-नीम रंगी[16]-आहे हसरतनाक[17] बाक़ी है
न हैरत[18] चश्मे-साक़ी[19] की, न सुहबत[20] दौरे सागर[21] की
मेरी महफ़िल में 'ग़ालिब' गर्दिशे अफ़लाक[22] बाक़ी है

(मैंने इन अशआर का इन्तख़ाब[23] अंग्रेज़ी में तर्जुमा[24] करने के लिए किया था, इस वजह से कि इनकी ज़बान में कशिश[25] थी, इनमें वह "मग़्ज़"[26] मालूम होता था जो तर्जुमे को किसी क़द्र आसान कर देता है और उम्मीद थी कि ये समझ में भी आ जाएँगे। यह उम्मीद मेरी अपनी कोशिश से नहीं, बल्कि जनाब 'रविश' सिद्दीक़ी साहब की रहनुमाई से पूरी हुई। आख़िर में मालूम हुआ कि ये अशआर तर्जुमे के लिए निहायत[27] मौज़ूं[28] हैं।)

बज़ाहिर[29] इन अशआर[30] में यासो हिरमां[31] की कैफ़ियतें बयान की गई हैं। ऐसा बयान और शाइरों ने शायद ज़्यादा साफ़ और सुलझी हुई ज़बान में किया होगा लेकिन इन्हें मुतफ़र्रिक़[32] अशआर के बजाय कतेबंद समझिए तो इनमें एक मुकम्मल कैफ़ियत का नक्शा मिलता है। शाइर का हुस्ने कामिल[33] का दीदार[34] नसीब हुआ है बिजली सी गिरी है, आँखें अंधी हो गई हैं, नज़र जल गई है, बस कुछ पलकें सुलगती रह गई हैं, और जब शोला नहीं रहा तो इन खाशाक का सुलगते रहना महज़ शोखी है। मगर आंख देखने के लिए बनी थी वह अपना मन्सब[35] कैसे छोड़ दे, वह देखने की कोशिश में आंसू बहाती रहती है और

१ पलक २ आँख ३ विवेक ४ चपलता ५ कूड़ा करकट तिनके ६ मृदुलता ७ प्रयत्न ८ दृष्टि ९ धुलाई सफ़ाई १० स्वाद का चिह्न ११ सम्पूर्ण, सिर से पैर तक १२ ओस-जैसा धर्म रखने वाले १३ पवित्र दृष्टि १४ अभिलाषाओं का बाग़ १५ पतझड़ के लिए ख़र्च हो गया १६ आधे रंग वाली बहार १७ हसरतभरी आह १८ आश्चर्य १९ माशूक़ की आँख २० मिलन संयोग २१ शराब के प्याले का दौर २२ आकाश का चक्कर २३ चयन २४ अनुवाद २५ आकर्षण खिंचाव २६ सारतत्त्व गूदा २७ अत्यधिक २८ उपयुक्त २९ प्रकट रूप में ३० शेर का बहुवचन ३१ निराशा ३२ विविध ३३ पूर्ण सौन्दर्य ३४ दर्शन ३५ कर्तव्य।

आखिर म घुलते घुलते एक निगाह पैदा कर लेती है जिसमे शबनम की सी चमक है। इसी बात को दूसरी तरह कहिए तो गोया चमन की शादाबी[1] खिज़ाँ[2] पर निसार[3] हो चुकी है, उसका निसार हो जाना ज़रूरी था, कि खिज़ाँ तो लाज़िमी तौर पर आती ही है, और अब तमन्ना भी क्या कर सकती है सिवा इसके कि एक बहार पैदा करे जिसके रंग फीके होंगे, और वैसे ही बेदम जैसे हसरत नाक अहं। या एक और मिसाल लीजिए तो कहा जा सकता है कि साकी की हैरत भरी निगाहों से देखने और ऐसी सुहबतों में बैठने का ज़माना गया जहाँ साग़र का दौर चलता हो। अब जो कुछ है आसमान की गर्दिश है, बे-माना[4] बे सूद[5]।

'ग़ालिब' को समझने के लिए इसका लिहाज़ रखना ज़रूरी है कि शाइरी उनके लिए इस्बाते खुदी[6] का ज़रिया थी और उनकी खुदी का भी एक खास रंग था। उनका दिल अपनी जौलागाह[7] के लिए वह वुसअत[8], वह शिद्दत[9], निशात[10] की वह कैफ़ियत चाहता था जिसकी मिसाल गर्दबाद यानी बगूला है ऐसी ही कैफ़ियत से उनकी तबीयत को उक्दा कुशाई[11] की लज़्ज़त नसीब हो सकती थी—

पहने गश्तनहा-ए दिल[12] बज़्मे निशाते-गर्दबाद[13]
लज़्ज़ते अर्ज़े कुशादे उक्दा-ए मुश्किल[14] न पूछ

बेशक इस्बाते खुदी की यही एक सूरत नहीं थी, लेकिन 'ग़ालिब के कलाम में इसका अक्स[15] किसी-न किसी एतबार[16] से तकरीबन्[17] तमाम दूसरी कैफ़ियतों में नज़र आता है, खास तौर से उनकी बेचैनी, बेज़ारी[18], दर्द, मायूसी[19] में, जो उन्हें खुद वुजूद[20] से इन्कार पर आमादा करती है इसलिए कि वुजूद की पाबन्दियाँ उन्हें इन्सानियत के लिए कैदखाना मालूम होती हैं, उसी इन्सानियत के लिए जिसके सुराग़[21] मे वह शोरे-महशर[22] बन गए हैं।

सुराग़ आवार ए अर्ज़े-दो आलम[23] शोरे महशर हूँ
पर-अफ़शाँ[24] है गुबार[25] आँ[26] सू ए सहरा-ए-अदम[27] मेरा

फिर इस खयाल से कि शायद लोग इसको एक बहुत बड़ा दावा समझें कि उनके लिए आगाही[28] का मतलब ज़हन[29] का सीधी पटरियो पर चलना है, वह अपनी

---

१ हराभरापन २ पतझड़ ३ न्योछावर ४ निरर्थक ५ बेफायदा ६ अहम् की स्वीकृति ७ कार्यक्षेत्र ८ विस्तार ९ तीव्रता १० आनन्द ११ रहस्योद्घाटन (समस्या सुलझाना) १२ दिल के कार्यक्षेत्र का विस्तार १३ बवंडर की आनंद सभा १४ कठिन समस्या को हल करने का आनन्द १५ प्रतिबिम्ब १६ प्रकार दृष्टि से १७ लगभग १८ असंतोष मन का उचाट होना १९ निराशा २० अस्तित्व २१ तलाश करना भेद २२ प्रलय का हाहाकार २३ दोनों दुनियाओं का भेद पाने की आतुरता में आवारा २४ पंख फैलाए हुए २५ धूल २६ वह २७ शून्य के मरुस्थल की ओर २८ ज्ञान २९ मस्तिष्क विवेक।

बेकसी[1] का भी एतराफ[2] कर लेते हैं—

न हो वहशतकशे[3] दर्स[4]-सराबे[5] सत्र[6] आगाही
गुबारे-राह[7] हूँ बे मुद्दआ[8] है पेचो खम[9] मेरा

मगर इसका रंज इंतहाई[10] गम भी है—

मिली न वुसअते[11]-जौलाने[12] यक जुनूँ[13] हमको
अदम[14] को ले गए दिल मे गुबार सहरा का

दश्त[15], सहरा[16], बर्क[17], जंजीरें, जख्म, सब अलामतें[18] हैं उस जंग की जो माद्दी[19] हकीकत[20] और इंसानियत के दरमियान मुसलसल[21] जारी रहती है, जिसमे इंसानियत बराबर शिकस्त[22] खाती मगर नए अज़्म[23] के साथ फिर मैदान मे आती रहती है। शायद यह सब न होता अगर आगही न होती, दिल न होता।

शिकव[24]-ओ-शुक्र[25] को समर[26], बीमो[27]-उमीद[28] का समझ
खान ए आगही[29] खराब, दिल न समझ बला समझ

खुदाया चश्म ता दिल[30] दर्द है अफसूने[31]-आगाही
निग[32] हैरत[33] सवादे[34] ख्वाबे[35] बेताबीर[36] बेहतर है

मुसीबत मे आदमी खुदा की रहमत[37] मे पनाह[38] लेता है। रहमत मे सिर्फ़ पनाह नही मिलती, दिलो दिमाग की कुशादगी[39] नसीब होती है। 'गालिब' ने कभी कभी सीधे सादे मुसलमान की तरह बात कही है—

जान दी, दी हुई उसी की थी
हक[40] तो ये है कि हक[41] अदा न हुआ

या वहदत उल वजूद[42] का फलसफा[43] बयान किया है—

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता

---

१ असहाय होने की स्थिति २ स्वीकृति ३ घबराने वाला ४ पाठ ५ मृगमरीचिका ६ पंक्ति ७ पथ का धूल ८ उद्देश्यहीन ९ बल पेंच १० अत्यधिक ११ विस्तार १२ दौड़ का मैदान १३ एक दीवानापन १४ अनस्तित्व शून्य १५ जंगल १६ मरुस्थल १७ बिजली १८ प्रतीक १९ भौतिक २० वास्तविकता २१ निरंतर २२ पराजय २३ उत्साह हौसला २४ शिकायत २५ धन्यवाद २६ फल २७ निराशा २८ आशा २९ ज्ञान का घर ३० आँख से दिल तक ३१ जादू ३२ दृष्टि ३३ आश्चर्य ३४ कालिमा ३५ स्वप्न ३६ निष्फल ३७ कृपा ३८ शरण ३९ विस्तार ४० सच ४१ कर्तव्य भूमिका ४२ अद्वैत ४३ दर्शन।

मकसूदे[1]-मा[2] ज़ दैरो हरम[3] जुज़[4] हबीब[5] नीस्त[6]
हर जा[7] मुनेम सजद[8] बुदा[9] आस्ताँ[10] रसद[11]

मगर यह बुढापे का ज़माना था। इब्तिदाई[12] दौर[13] म गालिब के लिए सीधे सादे मुसलमान का अकीद[14] अज्ज़े तमन्ना[15] था—एक बद गली जो इसान के लिए रास्ता नही बन सकती थी—

किस बात पँ मगरूर[16] हैं, ऐ अज्ज़े तमन्ना
सामाने दुआ[17] वहशत[18], व तासीरे-दुआ[19] हेच[20]

खुदा तक सही मानो म रसाई[21] उसी की हो सकती है जो अपनी इसानियत को बेतकल्लुफ[22] कर दे, शिकायत करे, गुनाहो का मोतरिफ[23] हो, बदगी मे दोस्ती का लुत्फ पैदा करे, मौका मिले तो तज़[24] से भी परहज़ न करे। बदगी में बे तकल्लुफी की मिसालें देखिए—

हर रग मे जला 'असद'[25]-ए फितना इतज़ार[26]
परवान ए तजल्ली[27]-ए-शम्म ए ज़हूर[28] था

खुर[29] शबनम आशना[30] न हुआ वरना मैं 'असद'
सर ता कदम[31] गुज़ारिशे[32] ज़ौके सुजूद[33] था

वुसअते रहमते हक[34] देख कि बख्शा जावे
मुझ सा काफिर कि जो मन्नूने मआसी[35] न हुआ

'असद' सौदा ए सर सब्ज़ी[36] से है तसलीम[37] रगीं तर[38]
कि किश्ते खुश्क[39] उसका अब्रे ब्रपरवा खिराम[40] उसका

---

१ लक्ष्य २ मेरा ३ मदिर मस्जिद से ४ सिवाय ५ प्रिय ६ कुछ नही ७ प्रत्येक स्थान पर जहाँ भी ८ सिर झकाना ९ उसकी १० चौखट ११ उपस्थित होना आ जाना १२ प्रारम्भिक १३ युग १४ मान्यता विश्वास १५ कामना की विनम्रता (विवशता) १६ घमडी १७ प्रार्थना की सामग्री १८ घबराहट अशाति १९ दुआ का असर २० बेकार तुच्छ २१ पहुँच २२ अनौपचारिक २३ स्वीकार करने वाला २४ व्यग्य २५ ग़ालिब का पहला उपनाम असद ही था—वसे यह उनके नाम का पहला भाग भी है २६ फितनो का इतज़ार करने वाला २७ प्रकाश प्रेमी परवाना २८ (परम सत्य के) प्रकट होने का दीपक २९ सूरज ३० आग का जानवर ३१ सिर से पाँव तक ३२ विनय प्रस्तुत ३३ सिर झुकाने की आनदमय अभिरुचि ३४ ईश्वर की कृपा का विस्तार ३५ गुनाहो का कुतन ३६ हरे भरे होने का उन्माद ३७ अपनी स्थिति की स्वीकृति, सताप ३८ अधिक रगीन ३९ सूखा खेत ४० बेपरवा चलने वाला बादल।

इस इतखाब[1] के शुरू मे एक गजल है जिसमे खुदा और बद ए आज़ाद[2] का ताल्लुक ऐसे अदाज म पेश किया गया है जिसका जवाब मुझे और किसी जबान म नही मिला है, मगर यह समझना चाहिए कि 'गालिब' का दिल जज्ब ए दीनी[3] की कैफियतो से ना आश्ना[4] था। यह भी कह सकते थे—

पए नज्रे-करम[5] तुहफा[6] है शर्मे ना रसाई[7] का
ब खू[8] गल्तीद[9] ए-सदरग[10] दावा पारसाई[11] का

ऐ 'असद' बेजा[12] है नाजे सजद ए अर्ज़े नियाज[13]
आलमे-तसलीम[14] मे ये दावा आराई[15] अबस[16]

खबर निग[17] को निग चश्म[18] को अदू[19] जाने
वो जल्व कर कि न मैं जानू और न तू जाने

नकामी ए निगाह[20] है वर्के नजारा सोज़[21]
तू वो नही कि तुझको तमाशा करे कोई

ता-चद[22] पस्त हिम्मती[23] ए तबए[24] आरजू[25]
या रब मिले बलदी[26] ए दस्ते दुआ[27] मुझे

अलबत्ता इसी जज्ब ए दीनी ने मजहबो की शक्ल इख्तियार[28] करके इसानो मे जो तफरीक[29] पदा की थी उसे वह हक बजानिब[30] मानने पर तयार न थे, और जाहिदो[31] की सुहबत[32] उन्हे किसी हाल मे गवारा न थी। उनका फारसी का एक शेर है—

---

१ चयन २ पवित्र ३ धार्मिक मनोभाव ४ अपरिचित ५ मेहरबानियो को समर्पित करने के लिए ६ उपहार भेंट ७ न पहुच पाने की शर्म ८ खून में ९ डूबा हुआ १० शतरंगी ११ पवित्रता १२ अनुचित १३ समर्पण कर के सिर झुकाने पर गर्व करना १४ स्वीकृति ससार १५ गर्वोक्तियाँ करना (सजाना) १६ बेकार १७ दृष्टि १८ आँख १९ दुश्मन २० दृष्टि की विफलता २१ दृश्य को जला देने वाली बिजली २२ कब तक २३ साहस की कमी २४ स्वभाव २५ और अधिक माँगना इच्छा २६ ऊचाई २७ दुआ के लिए उठे हुए हाथो की २८ ग्रहण करना २९ भेद भाव ३० उचित ठीक ३१ पवित्र आत्मा ३२ सम्पर्क साथ।

सुखन कोत' मराहम' दिल व तकवा' माइलस्त' अम्मा'
जे नगे-ज़ाहिद' उफ्तादम' व-काफिर' माजरा ए-हा'

अपनी इंसानियत भी उन्हें अज़ीज़' थी। गुस्से में वह कह सकते थे—

ख ए आदम'' दारम'' आदमज़ाद'' अम''
आशकारा'' दम'' ज़ इस्याँ'' मी'' जनम''

लेकिन उन्हें छेड़ा न जाता तो वह इंसान से कह सकते थे कि नग़्म और नश्श और नाज़ का परस्तार' बनकर रह, ख़ल्क'' को पारसाई'' करने दे—

नग़्म है महवे-साज़'' यह, नश्श है बेनियाज़'' रह
रिन्दे-तमाम नाज़'' रह, ख़ल्क को पारसा'' समझ

यही इंसानियत है जो उन्हें इश्क की तरफ ले जाती है कि दुनिया एक वहशत कदा' है और वह रोशनी से महरूम'' रहती अगर इंसान शोल-ए इश्क को अपनी ज़िन्दगी का साज़ो-सामाँ न बनाता—

हमने वहशतकद ए-बज़्मे जहाँ मे जूँ शम्म
शोल ए इश्क को अपना सरो-सामाँ समझा

इश्क तमन्ना की शक्ल इख़्तियार करता है तो आलमे इम्काँ'' इंसान के लिए तंग' हो जाता है—

है कहाँ तमन्ना का दूसरा क़दम या रब
हमने दश्ते इम्काँ'' को एक नक़्शे-पा'' पाया

हसरत'' बन जाता है तो अंजाम'' की परवा नहीं करता, उसकी ख़ुदराई'' की इंतिहा'' नहीं रहती—

---

१ ६ संक्षेप में मेरा दिल भी धर्म की ओर अग्रसर था, लेकिन धर्मोपदेशक की दीनदारी या धर्म प्रदर्शन देखकर मैं काफ़िर हो गया १० प्रिय ११ १६ आदम का बेटा हूँ आदम जैसी आदतें रखता हूँ और इसलिए बराबर गुनाह करता हूँ २ पूजा करने वाला २१ दुनिया २२ धर्म का पालन २३ साज (वाद्ययंत्र) में रिगम २४ निश्चिंत लापरवाह २५ पूर्ण सौन्दर्य का शराब पीने वाला शराबी २६ सदाचारी २७ विरक्तता का घर २८ वंचित २९ संभावनाओं का संसार ३० छोटा सीमित ३१ संभावनाओं का जंगल ३२ पाँव का निशान ३३ कामना अभिलाषा ३४ परिणाम ३५ आत्म श्रृंगार ३६ सीमा अंत।

हजार काफ़िल ए-आरज [1] बयाबाँ मर्गे [1]—
हनोज[2] महमिले[3] हसरत ब दोशे-खुदआराई[4]

यह मसअला[5] बहस-तलब[6] है कि ऐसा इश्क सिर्फ मजाजी[7] हो सकता है उसमें हकीकी[8] इश्क बन जाने का भी माद्दा[9] है। ग़ालिबन इस शेर का कि—

मैं दौरगर्द[10] अर्जे रसूमे[11] नियाज[12] हूँ
दुश्मन समझ ले[13] निगहे आश्ना[14] न माँग

मतलब यह था कि मैं रसूमे नियाज अदा करने के चक्कर में पड़ गया हूँ इससे ज्यादा की सलाहियत[15] मुझमें नहीं है मैं निगाहे आश्ना पैदा नहीं कर सकता। अब मुझे इख्तियार है कि मुझे दुश्मन समझ ले। 'ग़ालिब' को अपनी इंसानियत की वुसअतें[16] नापने की फुरसत न थी—

यक[17] बार इम्तहाने हवस[18] भी जरूर है
ऐ जोशे इश्क[19]-बाद ए-मद[20] आजमा मुझे

शाइर का मजाजी इश्क[21], चाहे वह इंसानियत की वादी ए-खयाल[22] में मस्तानावार घूम रहा हो, एक मुखातिब[23], एक माशूक के बग़ैर बेचैन रहता है—

तम्साले[24]-जल्व[25] अर्ज कर, ऐ हुस्न, कब तलक
आईन ए-खयाल[26] को देखा करे कोई

'ग़ालिब' के दूसरे दौर में मजाजी माशूक की हस्ती जानी-पहचानी है, उसके एक तरफ 'ग़ैर' या 'रक़ीब' दूसरी तरफ आईना है उसके दरवाजे पर दरबान बैठा रहता है, उसे खत लिखे जाते हैं चाहे मतलब कुछ न हो। उसके नाजो-अदाज के बहुत से खाके[27] मतबूआ[28] दीवान में मिलते हैं। यह बताना बहुत मुश्किल है कि पहले और दूसरे दौर के मजाजी इश्क और माशूक में कितना और

---

१ बयाबाँ में मर जाने वाला २ अब तक ३ जनाजा ४ आत्म-शृंगार (आत्माभिव्यक्ति) के कंधों पर ५ समस्या, मसला ६ विवादास्पद ७ पार्थिव ८ आत्मिक (ईश्वरीय आध्यात्मिक) ९ (मूल) तत्त्व १० चक्कर में फँसा हुआ ११ समर्पण के संस्कार १२ पूरा करने का इच्छुक १३ नमित १४ मैत्रीपूर्ण दृष्टि १५ योग्यता १६ विस्तार १७ एक १८ लालसा की परीक्षा १९ प्रेमोन्माद २० मनुष्य की परीक्षा लेने वाली शराब २१ इहलौकिक प्रेम २२ कल्पना-लोक २३ जिसे सम्बोधित किया जा सके २४ बिम्ब प्रतिबिम्ब २५ छवि लीला दृश्य २६ विचारों का दर्पण कल्पना जगत् २७ रूपरेखा चित्र २८ प्रकाशित।

कसा फ़र्क है। तग़ाफ़ुल' की कफ़ियत पर पहले दौर का एक शेर है—

है किस्वते'-उरूजे'-तग़ाफ़ुल कमाले'-हुस्न
चश्मे सिय हे-म.' निगह सोगवार-तर'

दूसरे दौर का बहुत मारूफ़' शेर है—

बहुत दिनो मे तगाफ़ुल ने तेरे पैदा की
वो एक निगह कि बज़ाहिर' निगाह से कम है

यहाँ एक जगह तयम्मुस' की जवानी दूसरी जगह उसकी पुख्तगी'' बहर'' के इन्तख़ाब'' और अल्फ़ाज़ के तरन्नुम'' स ज़ाहिर हो जाती है। पहले दौर की इसी ग़ज़ल का एक शेर है जो जवानी के जोश को और ज्यादा नुमायाँ'' करता है—

कातिल ब-अरमे-नाज़'' व दिल अज़'' ज़ख्म दर गुदाज़''
शमशीर आबदार'' निगाह आबदार-तर

और शाइर अपने बारे मे कहता भी है—

सीमाब' बेकरार'', 'असद' बेकरार तर

पहले दौर की एक ग़ज़ल है जिसमे शायद बिला इरादा मुलाकात और गुफ़्तगू'' का एक नक्शा पेश कर दिया गया है। पहले शाइर अपने-आपसे कहता है कि आहो ज़ारी'' से कुछ हासिल न होगा—

असर कमन्दी ' ए फ़रियादे-ना
ज़ाहिदे-''नाल '' कमीगाहे''

फ़िर मुलाकात होती है . . . है कि द -

---

१ उोश २ परिधान
७ शोकाकुल ८ प्रसिद्ध ६
११ पारा १४ संगीतमयता
प्रदर्शन का इरादा किये हुए १
२१ तड़पता हुआ २२ वार्तालाप
लिए इस्तेमाल की जाने वाली रस्सी
स्थल २९ उद्देश्य।

इश्क की जल्व-रेज़ी[1] है, जितना मेरे इश्क का हौसला[2] उतना आपका हुस्न, [illegible] आईने को न देखिए, उसमे क्या धरा है। फिर ज़रा और शोख होकर कहता है कि आपके नाज़ का सारा जादू लिबास की तगी मे है—

> बकद्रे[3]-हौसल[4] ए इश्क जल्व रेज़ी है
> वगरन खान ए आईना[5] की फज़ा[6] मालूम
>
> बहार, दर गिरवे[7] गुचा[8] शहर जौलां[9] है
> तिलिस्मे[10]-नाज व जुज़[11] तगी ए-क़बा[12] मालूम

फिर एक कहर आलूद[13] के निगाह के जवाब मे कहता है कि—

> तकल्लुफ[14] आईन ए-दो जहां[15] [illegible] है
> सुरागे[16]-यक निगहे कहर-आलूद[17] [illegible]

रुख्सत होते हुए कहा जाता है—

> 'असद' फरेफ्त[18]-ए-इन्तखाबे[19]-तर्ज़[20] [illegible]
> वगरन दिलबरी-[21]ए-वाद-ए-वफ़ा[22] मालूम

कलाम के आखिरी इन्तखाब मे 'गालिब' ने ये शेर छोड़ दिए, [illegible] उनके यह शेर भी—

> तिलिस्मे[23]-खाके-कमीगाह[24] [illegible] जहां सौदा[25]
> व मर्ग,[26] तकया[27]-ए-आवारगी-[28]फ़ना[29] मालूम

'गालिब' का इब्तिदाई[30] कलाम मुश्किल समझा जाता है, और उनके मुश्किल होने मे शुबह[31] नहीं। उनको उस रास्ते पर चलना [illegible] नहीं था जिस पर सब चलते थे, और सबसे अलग बात कहने की कोशिश मे वह ऐसे नक्श[32] बनाने मे

---

१ निष्पत्ति २ के मान से ३ साहस ४ [illegible] ५ शीशा ६ [illegible] ७ [illegible] ८ बेडी ९ जादू १० मिजाज ११ लिबास का [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] दिखावा १४ दो दुनियाओं का [illegible] १५ [illegible] १६ [illegible] १७ [illegible] दृष्टि १८ आसक्त १९ चुनाव [illegible] २० [illegible] २१ [illegible] २२ [illegible] २३ [illegible] का वचन २४ के अतिरिक्त २५ [illegible] २६ [illegible] २७ [illegible] २८ मृत्यु २९ सहारा ३० [illegible] ३१ [illegible] ३२ [illegible] ३४ चित्र।

उलझ जाते हैं जिनको अलफाज में कलम से बनाया ही नहीं जा सकता। इन्तिखाई कलाम के उस मजमूए[1] म, जिसे जनाब अरसी साहब ने अपने एडीशन[2] म 'गजीन ए माना'[3] का उनवान[4] दिया है, बहुत से अशआर ऐसे हैं जो सिर्फ मुश्किल हैं और माना[5] के एतबार[6] से काबिले कद्र[7] नही हैं, लेकिन उसम ऐसे मतालिब[8] भी हैं जो शायद आसान, आम फहम[9] जबान मे अदा[10] ही नही हो सकते थे—

दूदे[11] शम्म ए कुश्त[12] ए गुल[13] बज्म सामानी[14] अबस[15]
यक शुब[16] आशुफ्त[17]-नाजे-सुम्बुलुस्तानी[18] अबस

है हवस[19] महमल[20] बदोशे[21]-शोखी ए-साक ए मस्त
नक्श ए-मय[22] के तसव्वुर[23] मे निगहबानी[24] अबस

जब कि नक्शे-मुद्दआ[25] होवे न जुज[26] मौजे सराब[27]
वादी ए हसरत[28] मे फिर आशुफ्त[29] जौलानी[30] अबस

बज्मे मयनोशी[31] का तसव्वुर कीजिए। शाइर का दिल बुझा-बुझा सा है, गोया एक फूल था, जिसके रग शम्म की तरह रौशन थे, मायूसियो[32] और गमो ने उसके शोले को गुल कर दिया है, अब शाइर के दिल म इतनी जान नही कि महफिल म जान डाल सके, फिर इससे क्या फायदा कि वह रात भर के लिए बिखरे हुए बालो के खयाल म दीवाना हो जाए। मगर बज्म है, साकी है, साकी की मस्त आँखो की शोखी ने शाइर की हवस को अपने कधो पर सवार कर लिया है और यह खयाल कि साकी और उसकी शोखी सिर्फ नशे का एक तसव्वुर[33] है हवस और शोखी की निगरानी न कर सकेगा। लेकिन निगरानी न कर सका तो उससे क्या हासिल होगा? जब मतलब का पूरा होना भी एक धोखा है, सराब की एक मौज, तो फिर हसरत की वादी मे बहकते फिरना बेकार है।

---

१ सकलन २ सस्करण ३ अर्थों का खजाना ४ शीर्षक ५ अर्थ ६ दृष्टि से ७ सम्मान्य ८ अथ (मतलब का बहुवचन) ९ सबकी समझ मे आनेवाली १० वर्णित चित्रित ११ धुआँ १२ के प्रकार का १३ फल १४ सभा का चयन १५ बेकार १६ शका १७ उद्विग्न १८ अलकें १९ वासना लालसा २० कजावा डोली २१ कध पर २२ मदहोशी २३ कल्पना २४ चौकीदारी २५ उद्देश्य चिह्न २६ सिवाय २७ मग मरीचिका की लहर २८ लालसा की घाटी २९ विकल ३० दौड़ते (भटकते) फिरना ३१ वह महफ़िल जहाँ शराब पी जाती है ३२ निराशाओ ३३ अपारा।

अगर हम समझें कि शाइरी सिफ खयाल-आराई[1] है, वल्कि 'गालिब' की आदत और उस ज़माने के हालात को सामने रखें तो मालूम होगा कि ये तीनो शेर हकीकी[2] तास्सुरात[3] पेश करते हैं जिन्हें बयान करने के लिए बहुत मुनासिब[4] अंदाज़[5] और इस्तआरे[6] इस्तेमाल किए गए हैं। मसलन्[7] जिस किसी ने खिलते हुए गुलाब के फूल देखे हैं और फिर उन्हें मुरझाते, उनके शोलो को बुझते और उनकी अंजुमन[8] को बेरौनक[9] होते हुए देखा है उसे 'दूदे शम्म ए गस्त ए गुल' एक मुश्किल तरकीब[10] नही, बल्कि एक बहुत ही लतीफ[11] तश्बीह[12] मालूम होगी।

'गालिब' का सबसे आला[13] शाइराना इस्तआरा[14], जो उनके तखय्युल[15] की तखलीक[16] और उनके कलाम का खालिक[17] भी है, इन्सान है, और वह बेशतर[18] अपनी इन्सानियत की गूनागूं[19] कैफियतो मे महव[20] नज़र आते है। इन्सान वह मुकाम[21] है जहाँ से उनके तसव्वुरात[22] और उनकी आरज़ुओ के काफिले रवाना होते हैं और सारी बादिय-पमाई[23] और 'दरियाकशी'[24] के बाद फिर उसी मुकाम पर वापस आ जाते हैं। इन्सान बाग है और फूलो का हुजूम है दश्त[25] और सहरा है, माशूक के लिए तडपता हुआ आशिक है, वुजूद[26] और अदम[27] की बाज़ी का मुहरा है, आगही[28] का शिकार है, बागी है तकदीर की चक्की मे पिसा हुआ दाना है, एक तमाशाई है जो दूर खडा दुनिया के कारोबार को देखता है कभी इस पर तंज़[29] करता है, कभी चुटकियो मे उडाता है। इन्सान गुनहगारी का एक हसीन मुजस्समा[30] है जो रहमत के दिल को मोह लेता है, एक दीवाना जो किसी भी वक्त कयामत[31] बरपा कर सकता है। बेशक 'गालिब' ने इन्सान को दरयाफ्त[32] नही किया, शाइर का मनसब[33] यह होता है कि इन्सान की नज़र मे वह कुव्वत[34] पैदा करे जिससे वह अपने आपको और अपनी दुनिया को हर पहलू से देख सके। 'गालिब' ने इस मनसब का हक अदा किया, शौक को, जो इन्सानियत का जौहर[35] है, आलमे वुजूद[36] की सैर करना सिखाया और उसे हिम्मत दिलाई कि मुस्करा-कर या खफा होकर जिन्दगी की ऐसी तमाम शर्तों को नामंज़ूर करे जिनसे उसकी आज़ादी महदूद[37] होती हो या उसके मरतबा-ए-इन्सानी[38] मे कमी पैदा होती हो।

---

१ कल्पना का बनाव शृंगार करना काल्पनिक २ वास्तविक ३ अनुभूतियाँ ४ उचित ५ शैली ६ रूपक ७ उदाहरणार्थ ८ महफ़िल ९ शोभाहीन १० रचना रचना प्रणाली ११ सूक्ष्म १२ उपमा १३ श्रेष्ठ १४ काव्य रूपक १५ कल्पना १६ रचना कृति १७ स्रष्टा १८ अधिकांश १९ रंगारंग विभिन्न २० तल्लीन २१ स्थल २२ कल्पनाओं २३ जंगल २४ नदी पी जाना २५ जंगल २६ अस्तित्व २७ शून्य अनस्तित्व २८ ज्ञान २९ व्यंग्य ३० मूर्ति ३१ प्रलय ३२ खोजना खोजा ३३ काम कर्तव्य ३४ शक्ति ३५ सार ३६ अस्तित्वलोक ३७ सीमित ३८ मानवीय सम्मान।

चयन

गदा[1] ए-ताकते तकरीर[2] हैं जबा तुझ से
कि खामुशी को है पैराय[3] ए बयां[4] तुझ से

फसुदगी[5] मे है फरियादे बेदिला[6] तुझ से
चिरागे सुबह-ओ गुले मोसमे खिजां तुझ से

बहारे-हैरते[7] नज्जारा[8], सख्तजानी[9] है
हिना[10] ए पा[11] ए अजल[12], खूने-कुश्तगा[13] तुझ से

परी ब शीशा[14] ओ अक्से[15] रुख[16] अन्दर आईना
निगाहे हैरते-मश्शात[17] खूंफिशा[18] तुझ से

तरावते[19]-सहर ईजादी[20]-ए असर[21] यकसू[22]
बहारे नाला[23] व रंगीनी ए फुगां[24] तुझ से

चमन-चमन गुले आईन[25] दर कनारे हवस[26]
उमीद महवे[27] तमाशा ए गुलसिता[28] तुझ से

---

१ भिखारी २ वाक्शक्ति ३ शली ४ वणन ५ उदासी ६ दुखी दिलो की ७ आश्चय ८ दशन ९ कठिन १० मेहदी ११ पर १२ मौत १३ कुचले हुओ का खून १४ शीशे म बन्द परी—अर्थात शराब १५ प्रतिबिम्ब १६ मुख १७ श्रृंगार करने वाली १८ रक्ताभ १९ शीतलता २० अनुभूतिपरक २१ प्रभाव २२ एकाग्रचित्तता (१९ २२ अनुभूतिपरक प्रभाव की शीतलता की एकाग्रचित्तता) २३ आत्तनाद का बसत २४ आहो की रगीनी २५ दपण के [illegible] २६ वासना के आलिंगन म २७ तल्लीन २८ गुलशन का तमाशा।

नियाज़[1], पर्दा ए इज़हारे[2] खुदपरस्ती[3] है
जबीने[4] सजद फ़िशाँ[5] तुझ से, आस्ताँ[6] तुझ से

वहान-जूई[7]-ए रहमत[8], कमीगरे[9]-तकरीब[10]
वफ़ा ए-हौसला[11] व रंजे इम्तिहाँ[12] तुझ से

'असद' तिलिस्मे-कफ़स[13] में रहे क़यामत है
खिराम[14] तुझ से, सबा[15] तुझ से, गुलसिताँ तुझ से

जज़्ब[16]-ए-बे इख़्तियारे[17] शौक़[18] देखा चाहिए
सीन ए शमशीर से बाहर है दम शमशीर का

जुनूँ[19] गर्म इन्तज़ार[20] व नाल बेताबी कमन्द[21] आया
सवेदा[22], ता ब-लब[23], ज़ंजीरिए[24] दूदे[25] सपन्द[26] आया

तग़ाफ़ुल[27], बदगुमानी[28], बल्कि मेरी सख़्तजानी[29] से
निगाहे बेहिजाबे[30] नाज़ को बीमे ग़ज़न्द[31] आया

जराहत[32]-तुहफ़ा[33], अल्मास[34] अर्मुग़ाँ[35], दाग़े जिगर हदिया[36]
मुबारकबाद, 'असद', ग़मख़्वारे[37] जाने दर्दमन्द[38] आया

---

१ विनय २ अभिव्यक्ति ३ आत्म पूजन ४ माथा ५ साष्टांग प्रणाम करने वाला ६ ड्योढ़ी ७ बहाना ढूँढना ८ कृपा ९ घात १० प्रसंग ११ साहस का साथ १२ परीक्षा का दुख १३ पिंजरे का मायाजाल १४ मस्तानी चाल १५ प्रात समीर १६ भावातिरेक १७ व्याकुल १८ अभिलाषा १९ उन्माद, धुन २० प्रतीक्षारत २१ नाल =आह, बेताबी=व्याकुलता कमंद=रस्सी २२ दिल का दाग २३ होठों तक २४ शृंखला बनाता हुआ २५ धुआँ २६ आतिशदान २७ उपेक्षा २८ असंतोष मनोमालिन्य २९ सबल जिजीविषा ३० निरावरण ३१ कष्ट का डर ३२ चोट ३३ उपहार ३४ हीरा ३५ भेंट ३६ उपहार ३७ सुहृदय मित्र सहानुभूति रखने वाला ३८ दुखी प्राण।

पूछा था गरचे[1] यार ने अहवाले-दिल[2], मगर
किस को दमागे[3]-मिन्नते[4]-गुफ्तो[5]-शुनूद[6] था

खुर[7] शबनम-आइना[8] न हुआ, वरना मैं 'असद'
सर-ता-कदम[9] गुजारिशे[10]-जौके सजूद[11] था

है कहाँ तमन्ना का दूसरा कदम, या रब?
हमने दश्ते-इम्काँ[12] को एक नक्शे-पा[13] पाया

इश्क से तबीअत ने जीस्त[14] का मजा पाया
दर्द की दवा पाई, दर्दे-बेदवा[15] पाया

सादगी ओ पुरकारी[16], बेखुदी[17]-ओ-हुशियारी
हुस्न को तगाफुल में जुरअत आजमा[18] पाया

गुन्चा[19] फिर लगा खिलने, आज हमने अपना दिल
खूँ किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया

शौक, हर रंग[20], रकीबे[21] सरो सामाँ[22] निकला
कैस, तस्वीर के परदे में भी उरियाँ[23] निकला

बू-ए गुल[24] नाल ए-दिल[25], दूदे चरागे महफिल[26]
जो तिरी बज्म से निकला, सो परीशाँ निकला

---

१ यद्यपि २ दिल का हाल ३ समझ ४ चाटुकारिता ५ ६ कहना सुनना, वार्तालाप ७ सूरज ८ ओस का जानकार ९ सिर से पाँव तक १० [illegible] ११ सिर झुकाने की आनंदमय अभिरुचि १२ संभावनाओं का जगत १३ पाँव का निशान १४ जीवन १५ वह दर्द जिसकी कोई दवा न हो १६ चालाकी १७ ध्यानशून्यता मस्ती १८ हिम्मत की परीक्षा लेने वाला १९ कली २० हर तरह, हर स्थिति में २१ प्रतिद्वंद्वी २२ साज सामान २३ नंगा २४ फूल की सुगंध २५ दिल की आह २६ महफिल के चिराग का धुआँ।

सागरे[1]-जल्व[2]-ए-सरशार[3] है हर जर्रं-ए-खाक[4]
शौके-दीदारे-बला आईन-सामाँ[5] निकला

शोरे-रुस्वाई[6]-ए-दिल देख कि यक नाल-ए-शौक[7]
लाख परदे मे छुपा फिर वही उरियाँ[8] निकला

मैं भी माजरे[9] जुनू हूँ, 'असद'-ए-खाना-खराब[10]
पेशवा[11] लेने मुझे घर से बयाबाँ[12] निकला

दह्र[13] मे नक्शे-वफा[14] वजहे-तसल्ली[15] न हुआ
है यह वो लफ्ज कि शर्मिन्द-ए-मानी[16] न हुआ

मैंने चाहा था कि अन्दोहे-वफा[17] से छूटू
वो सितमगर मेरे मरने पे भी राजी न हुआ

दिल-गुजर-गाहे[18] खयाले मय-ओ-सागर ही सही
गर नफस[19], जाद[20]-ए-सर-मजिले तकवी[21] न हुआ

किस से महरूमी-ए-किस्मत[22] की शिकायत कीजे
हम ने चाहा था कि मर जाएँ, सो वो भी न हुआ

वुसअते[23]-रहमते-हक[24] देख, कि बख्शा जावे
मुझ सा काफिर कि जो ममनूने[25]-मआसी न हुआ[26]

---

१ प्याला २ दशन ३ भरपूर ४ धूलिकण ५ दपण का प्रबध करने वाला ६ बदनामी ७ शौक की आह ८ नग्न ९ विवश १० बर्बाद ११ अगवानी करन १२ उजडे हुए वन म १३ ससार १४ निवाह का चिन्ह १५ सतुष्टि का कारण १६ सार्थक १७ वफा के दुख १८ रास्ता १९ सांस २० रास्ता २१ परलोक की मंजिल २२ दुर्भाग्य २३ विस्तार २४ ईश कृपा २५ कृतज्ञ २६ गुनाहों का।

दीद-ता-दिल[1] है यक आईना चरागां[2] किसने
खलवते[3]-नाज पे पेराय[4]-ए-महफिल बाँधा

ना-उमीदी[5] ने बतकरीबे[6]-मजामीने[7] खुमार[8]
कूच[9]-ए मौज[10] को खमयाज-ए-साहिल[11] बांधा

मुतरिबे-दिल[12] ने मेरे तारे-नफस[13] से, 'गालिब'
साज पर रिश्ता, प ए-नग्म[14]-ए-'बेदिल'[15] बांधा

प-ए-नज्रे-करम[16], तुहफा[17] है शर्मे ना-रसाई[18] का
ब-खूं[19] गलतीद[20]-ए-सदरंग[21] दावा पारसाई[22] का

दरेग[23], ऐ नातवानी[24], वरना हम जब्त आश्नायां[25] ने
तिलिस्मे रंग[26] मे बांधा था अहदे[27] उस्तवार[28] अपना

अगर आसूदगी[29] है मुद्दआ[30] ए रंजे बेताबी[31]
निसारे[32]-गर्दिशे[33]-पैमान[34] ए मय, रोजगार[35] अपना

गिल है शौक को दिल मे भी तंगी ए-जा[36] का
गुहर[37] मे महव[38] हुआ, इज्तिराब[39] दरिया का

---

१ दृष्टि से दिल तक २ प्रकाशित, रौशन ३ एकांत ४ ढंग ५ निराशा ६ सिलसिले म ७ विषयो के ८ मस्ती का उतार ९ गली १० लहर ११ तट का अंत सीमा, अँगडाई १२ दिल का गायक १३ साँस के तार १४ नग्मे के लिए १५ बेदिल' नामक शाइर से सिलसिला मिलाने के लिए १६ उसकी कृपा के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए १७ उपहार १८ न पहुंच पाने की शर्म १९ खून मे २० सराबोर २१ शतरंगी २२ पवित्रता, सच्चरित्रता २३ बस कर २४ दुर्बलता २५ सब्र करने वाला २६ रंग के माया जाल म २७ निश्चय २८ दृढ २९ संतोष ३० उद्देश्य ३१ व्याकुलता ३२ न्योछावर ३३ आवर्तन, दौर ३४ मदिरापात्र ३५ जीवन व्यापार ३६ जगह की कमी ३७ हीरा ३८ डूब गई ३९ व्याकुललता।

सुराग' आवार ए-अर्ज़े दो-आलम' शारे महशर' हूँ
पर-अफ़शां' है गुबार' आं' सूए सहरा ए-अदम' मेरा

न हो वहशत-कशे -दर्से'-सरावे' सत्तर''-आगाही''
गुबारे राह'' हूँ, बेमुद्दआ'' है पेचो-ख़म'' मेरा

सरापा'' रहने-इश्क़''-ओ नागुज़ीरे'' उल्फ़ते-हस्ती''
इबादत' बर्क़'' की करता हूँ, और अफ़सोस हासिल'' का

ब-क़द्रे-ज़र्फ़'' है, साक़ी, ख़ुमारे-तिश्न -कामी'' भी
जो तू दरिया-ए-मय'' है, तो मैं ख़मयाज़ा'' हूँ साहिल'' का

लबे-ख़ुश्क'' दर-तश्नगी'' मुदगा' का
ज़ियारतकद'' हूँ दिल आज़ुदगा'' का

हम'' नाउमीदी'', हम बदगुमानी''
मैं दिल हूँ फ़रेबे वफ़ा ख़ुदगा'' का

शगुफ़्तन'' कमीगाहे''-तक़रीब जूई''
तसव्वुर हूँ बेमूजिब'' आज़ुदगा' का

---

१ तलाश करना भेद २ दोनो दुनियाओ का भेद पाने की आतुरता मे बावरा ३ प्रलय का हाहाकार ४ पख फैलाए हुए ५ धूल ६ वह ७ शून्य के मरुस्थल की ओर ८ घबराने वाला ९ पाठ १० मृगमरीचिका ११ पंक्ति १२ ज्ञान १३ पथ की धूल १४ निरुद्देश्य १५ बल पच १६ सिर से पाँव तक १७ प्रेम धरोहर १८ अवश्यभावी १९ जीवन प्रेम २० पूजा २१ बिजली २२ खलिहान उपलब्धि फसल २३ सामर्थ्यानुसार २४ प्यास का ख़ुमार २५ शराब की नदी २६ अत सीमा, अँगडाई २७ तट २८ सूखे होठ २९ प्यास ३० मुर्दों ३१ तीर्थस्थान ३२ परेशान, पीडित ३३ पूर्ण ३४ निराशा ३५ पूर्ण सदेश, असतोष ३६ प्रेम का धोखा खाए हुए ३७ खिलना ३८ घात-स्थल ३९ आयोजन ४० के लिए ४१ कल्पना ४२ अकारण।

गरीबे सितम[1] दीद ए बाज[2] गस्तन[3]
सुखन[4] हूँ, सुखनवर लब आवुदगा[5] का

सरापा[6] यक आईना दारे[7]-शिकस्तन[8]
इरादा हूँ, यक आलम अफसुदगाँ[9] का

ब सूरत[10] तकल्लुफ, ब मानी तास्सुफ[11]
'असद', मैं तबस्सुम[12] हूँ पजमुदगाँ[13] का

लताफत[14] बे-कसाफत[15], जल्व पैदा कर नही सकती
चमन, जगार[16] है आईन-ए बादे-बहारी[17] का

हरीफे[18] जोशिशे[19] दरिया[20] नही, खुद्दारिए साहिल[21]
जहा साकी हो तू, बातिल[22] है दावा होशियारी का

हमने वहशतकद[23]-ए बज्मे जहाँ मे, जू शम्म
शोल ए-इश्क[24] को अपना सरो सामा[25] समझा

मिली न वुसअते[26]-जौलाने[27] यक जुनू हम को
अदम[28] को ले गए दिल मे गुबार सहरा[29] का

देखी वफा ए फुरसते रजो निशाते[30] दह्र[31]
खमयाजा[32] यक, दराजी ए उम्रे-खुमार[33] था

---

१ शोकग्रस्त २ खुली आँख ३ हो जाना ४ कथन ५ होठो पर लाया हुआ ६ आपादमस्तक ७ प्रकट ८ टूटना ९ बुझा हुआ १० प्रकटत ११ अफसोस १२ मुस्कराहट १३ मुर्झाए हुए लोग १४ सूक्ष्मता १५ मलिनता के बिना १६ जग १७ बसतऋतु की वायु का दपण १८ रोकने वाला प्रतिद्वन्द्वी १९ ज्वार २० नदी २१ तट का आत्माभिमान २२ मिथ्या २३ जगली घर, डरावना (डर-) घर २४ प्रेम अगार २५ माल-असबाब २६ विस्तार २७ दौड का मैदान २८ अनस्तित्व २९ रेगिस्तान ३० खुशी ३१ दुनिया ३२ दो फैले हुए हाथों के बीच की जगह ३३ खुमार (मस्ती) की उम्र लम्बी होना।

सुराग[1] आवार ए-अज्जे[2] दो-आलम शोरे महशर[3] हूँ
पर-अफशाँ[4] है गुबार[5] आँ[6] सूए सहरा ए-अदम[7] मेरा

न हो वहशत-कशे[8]-दर्स[9]-सराबे[10] सत्तर[11]-आगाही[12]
गुबारे राह[13] हूँ, बेमुद्दआ[14] है पेचो खम[15] मेरा

सरापा[16] रहने इश्क[17]-ओ नागुजीरे[18]-उल्फते हस्ती[19]
इबादत[20] बर्क[21] की करता हूँ, और अफसोस हासिल[22] का

ब-कद्रे-जर्फ[23] है, साकी, खुमारे-तिश्न-कामी[24] भी
जो तू दरिया-ए-मय[25] है, तो मैं खमयाजा[26] हूँ साहिल[27] का

लबे-खुश्क[28] दर-तश्नगी[29] मुर्दगां[30] का
जियारतकदा[31] हूँ दिल आजुर्दगां[32] का

हम[33] नाउमीदी[34], हम बदगुमानी[35]
मैं दिल हूँ फरेबे वफा खुर्दगां[36] का

शगुफ्तन[37] कमीगाहे[38]-तकरीब[39] जूई[40]
तसव्वुर[41] हूँ बेमूजिब[42] आजुर्दगां का

---

१ तलाश करना भेद २ दोनो दुनियाओ का भेद पाने की आतुरता म आवरा ३ प्रलय का हाहाकार ४ पख फलाए हुए ५ धूल ६ वह ७ शून्य के मरुस्थल की ओर ८ घबराने वाला ९ पाठ १० मृगमरीचिका ११ पक्ति १२ ज्ञान १३ पथ की धूल १४ निरुद्देश्य १५ बल पेच १६ सिर स पाव तक १७ प्रेम धरोहर १८ अवश्यभावी १९ जीवन प्रेम २० पूजा २१ बिजली २२ खलिहान उपलब्धि फसल २३ सामर्थ्यानुसार २४ प्यास का खुमार २५ शराब की नदी २६ अत सीमा, अँगडाई २७ तट २८ सूखे होठ २९ प्यास ३० मुर्दों ३१ तीर्थस्थान ३२ परेशान, पीडित ३३ पूर्ण ३४ निराशा ३५ पूर्ण सदेश, असतोष ३६ प्रेम का धोखा खाए हुए ३७ खिलना ३८ घात-स्थल ३९ आयोजन ४० के लिए ४१ कल्पना ४२ अकारण।

गरीबे सितम[1]-दीद ए बाज[2] गश्तन[3]
सुखन[4] हूँ, सुखनवर लब-आवुर्दगा[5] का

सरापा[6] यक आईना दारे[7]-शिकस्तन[8]
इरादा हूँ, यक आलम अफसुर्दगा[9] का

ब-सूरत[10] तकल्लुफ, ब-मानी तास्सुफ[11]
'असद', मैं तबस्सुम[12] हूँ पज्रमुदगाँ[13] का

लताफत[14] बे-कसाफत[15], जल्व पैदा कर नही सकती
चमन, जगार[16] है आईन-ए बादे-बहारी[17] का

हरीफे[18]-जोशिशे[19]-दरिया[20] नही, खुद्दारिए साहिल[21]
जहाँ साकी हो तू, बातिल[22] है दावा होशियारी का

हमने वहशतकद[23]-ए बज्मे जहाँ मे, जूं शम्म
शोल ए-इश्क[24] को अपना सरो सामा[25] समझा

मिली न वुसअते[26]-जौलाने[27] यक जुनूं हम को
अदम[28] को ले गए दिल मे गुबार सहरा[29] का

देखी वफा ए फुरसते रजो निशाते[30] दह्‌र[31]
खमयाजा[32] यक, दराजी ए उम्रे-खुमार[33] था

---

१ शोकग्रस्त २ खुली आँख ३ हो जाना ४ कथन ५ होठो पर लाया हुआ ६ आपादमस्तक ७ प्रकट ८ टूटना ९ बुझा हुआ १० प्रकटत ११ अफसोस १२ मुस्कराहट १३ मुर्झाए हुए लोग १४ सूक्ष्मता १५ मलिनता के बिना १६ जग १७ वसतऋतु की वायु का दपण १८ रोकन वाला प्रतिद्वद्वी १९ ज्वार २० नदी २१ तट का आत्माभिमान २२ मिथ्या २३ जगली घर, डरावना (डर-) घर २४ प्रेम अगार २५ माल-असवाब २६ विस्तार २७ दौड का मदान २८ अनस्तित्व २९ रेगिस्तान ३० खुशी ३१ दुनिया ३२ दो फैले हुए हाथो के बीच की जगह ३३ खुमार (मस्ती) की उम्र लम्बी होना।

ज़र ज़र्रे, सागरे मयख़ाना-ए-नैरंग[1] है
गर्दिशे-मजनू[2], व चश्मकहाए-लैला[3] आश्ना[4]

शौक, है सामाँ तराज़े-नाज़िशे-अरबाबे इज्ज़[5]
ज़र्रे सहरा दस्तगाह ओ क़तरा दरिया आश्ना[6]

मैं और एक आफत का टुकडा वह दिले वहशी कि है
आफियत[7] का दुश्मन और आवारगी का आश्ना

सरासर[8] ताखतन[9] को शशजहत[10] यह अर्सा जौलाँ[11] था
हुआ वामांदगी[12] से रहरवाँ[13] की, फर्क मंजिल का

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मयस्सर[14] नहीं इंसाँ होना

गिरिया[15] चाहे है ख़राबी[16] मेरे काशाने[17] की
दरो-दीवार से टपके है बयाबाँ होना

इश्रते[18] क़त्लगहे[19] अहले-तमन्ना[20] मत पूछ
ईदे-नज्ज़ारा[21] है, शमशीर का उरियाँ[22] होना

हर रग मे जला 'असद' ए फिक्रे इंतज़ार[23]
परवान-ए-तजल्ली[24]-ए-शम्मे-ज़हूर[25] था

१ दुनिया के शराबघर का प्याला २ मजनू की भटकन ३ लैला की आँखो के संकेत ४ परिचित मित्र ५ विनम्र लोगो [illegible] गव की सामग्री जुटाने वाला ६ प्रत्येक कण मरुस्थल की ओर प्रत्येक बूंद सागर की विशालता लिए हुए है ७ सुख चैन शांति ८ निरंतर ६ दौडते रहना १० [illegible] दिशाएँ (चारो दिशाएँ और ऊपर व नीचे) ११ मैदान १२ थकन १३ पथ प्रदर्शक १४ प्राप्य म १५ रुदन १६ बर्बादी १७ घर १८ सम्पन्नता १९ हत्याघर २० इच्छा अभिलाषा करने वाले २१ दृश्य की ईद (प्रसन्नता) २२ नंगा २३ जिस फिक्रों की प्रतीक्षा हो, पतंगा २४ प्रकाश २५ जीवन दीप।

हर गाम[1] आब्ले[2] से है, दिल, दर तहे-कदम[3]
क्या बीम[4] अहले दर्द[5] को सख्ती ए राह[6] का

रहमत[7] अगर कुबूल[8] करे, क्या बईद[9] है
शर्मिन्दगी से उज्र[10] न करना गुनाह का

दिल मिरा सोजे निहाँ[11] से बे-महाबा[12] जल गया
आतिशे ख़ामोश[13] के मानिन्द, गोया जल गया

दिल मे जौके वस्ल[14]-ओ यादे यार[15] तक बाकी नही
आग इस घर मे लगी कि जो था जल गया

अर्ज कीजे जौहर अंदेशा[16] की गर्मी कहाँ ?
कुछ खयाल आया था वहशत[17] का कि सहरा जल गया

दिल नही, तुझको दिखाता, वरना, दागो की बहार
इस चरागाँ[18] का, करूँ क्या, कार फरमा[19] जल गया

मैं हूँ अफसुर्दगी[20] की आरजू[21], 'गालिब', कि दिल
देख कर तर्जे तपाके-अहले-दुनिया[22] जल गया

रब्ते[23]-यक शीराज -ए वहशत[24] है, अज्जा ए-बहार[25]
सब्ज[26] बेगान, सबा[27] आवारा, गुल ना-आश्ना[28]

---

१ कदम २ फफोला ३ कदमो के नीचे कुचला हुआ ४ निराश ५ दर्द से पीडित लोग ६ मार्ग की कठिनाइयाँ ७ कृपा ८ स्वीकार ९ मुश्किल १० बहाना, शिकवा ११ आतंरिक जलन १२ एकदम निर्भयता पूर्वक १३ मूक अग्नि १४ मिलन की चाह १५ प्रिय की स्मृति १६ चिंतन तत्त्व १७ जंगलीपन जंगल १८ दीपमाला १९ दीपक जलाने वाला कार्यकर्त्ता २० उदास २१ अभिलाषा २२ दुनिया के लोगो के व्यवहार का ढंग २३ सबंध २४ उन्माद के संग्रह का बाँधने वाला सूत्र (डोरा) २५ वसंत के तत्त्व २६ हरियाली २७ प्रात समीर २८ अपरिचित।

दम लिया था न कयामत ने हनोज[1]
फिर तेरा वक्ते-सफर याद आया

कोई वीरानी सी वीरानी है
दश्त[2] को देख के घर याद आया

मने मजनू पे लडकपन मे 'असद'
संग[3] उठाया था कि सर याद आया

तौफीक[4] ब अन्दाज ए-हिम्मत[5] है अजल[6] से
आंखो मे है वो कतर कि गुहर न हुआ था

जब तक कि न देखा था कदे यार का आलम
मैं मुतकिद[8] ए फित्न ए-महशर[9] न हुआ था

दरिया ए-मआसी[10] तुनक आबी[11] से हुआ खुश्क
मेरा सरे दामन[12] भी अभी तर न हुआ था

अर्जे नियाजे इश्क[13] के काबिल नही रहा
जिस दिल पे नाज[14] था मुझे वो दिल नही रहा

जाता हूं दागे हसरते हस्ती लिए हुए
हूं शम्म ए-कुश्त[15], दरखुरे महफिल[16] नही रहा

वा[17] कर दिए हैं शौक ने बन्दे नकाबे हुस्न[18]
गैर-अज निगाह[19] अब कोई हाइल[20] नही रहा

---

१ अभी तक २ जगल ३ पत्थर ४ सामर्थ्य ५ साहस के अनुरूप ६ सष्टि का आरभ ७ मोती ८ विश्वास करने वाला ९ कमायत का फितना १० पाप की नदी ११ पानी की कमी १२ दामन का सिरा १३ प्रेम याचना १४ गव १५ बुझी हुई शमा १६ महफिल के योग्य १७ खोलना १८ सौदय के नकाब के बद १९ निगाह के अतिरिक्त २० बाधक (बाधा)।

गो मैं रहा रहीने[1] सितमहाए-रोजगार[2]
लेकिन तिरे खयाल से गाफिल[3] नही रहा

हासिले उल्फत[4] न देखा जुज़[5] शिकस्ते आरजू[6]
दिल ब दिल पैवस्त[7], गोया[8], यक लबे अफसोस था

कम जानते थे हम भी गमे इश्क को पर अब
देखा, तो कम हुए पे, गमे रोजगार था

अहबाब[9], चारसाजी ए वहशत[10] न कर सके
जिन्दाँ[11] मे भी, खयाल, बयाबाँ नवद[12] था

महरम[13] नही है तू ही, नवाहाए-राज[14] का
याँ वरना जो हिजाब[15] है, परद है साज़ का

रगे - शिकस्त,[16] सुब्हे - बहारे - नज़ारा है
यह वक्त है शगुफ्तने[17] - गुलहाए - नाज़[18] का

दोस्त गमख्वारी मे मेरी, सअई[19] फरमावेंगे क्या ?
जख्म के भरने तलक, नाखुन न बढ जावेगे क्या ?

बेनियाजी[20] हद से गुजरी, बन्दापरवर, कब तलक
हम कहेंगे हाले दिल,[21] और आप फरमावेंगे "क्या ?"

---

१ पीडित २ ससार के अत्याचारों से ३ उदासीन ४ प्रेम (मित्रता) की उपलब्धि ५ सिवाय ६ अभिलाषा की पराजय ७ दिल से मिला हुआ दिल ८ मानो ९ मित्र १० उन्माद का उपचार ११ जेल १२ जगल मे घूमना (भटकना) १३ जानने वाला १४ भेदभरी आवाजो १५ पर्दा १६ उडा हुआ रग १७ खिलने १८ नाजो-अदा रूपी फूल १९ सहायता, का यत्न २० उदासीनता, उपेक्षा २१ दिल का हाल।

हजरते नासेह[1] गर आवें, दीद-ओ दिल फर्शे राह[2]
कोई मुझको यह तो समझा दो कि समझावेंगे क्या ?

गर किया नासेह ने हम को कैद, अच्छा यूँ सही
ये जुनून इश्क[3] के अंदाज[4] छुट जावेंगे क्या ?

खान जादे जुल्फ[5] हैं, जंजीर से भागेंगे क्यों ?
हैं गिरफ्तारे-वफा,[6] जिन्दाँ[7] से घबरावेंगे क्या ?

है अब इस मामूरे[8] में कहते गमे उल्फत[9] 'असद'
हम ने यह माना कि दिल्ली में रहे, खावेंगे क्या ?

इशरते कतर[10] है, दरिया में फना[11] हो जाना
दर्द का हद से गुजरना है, दवा हो जाना

अब जफा से भी है महरूम[12] हम, अल्ला अल्ला
इस कदर-दुश्मने-अरबावे-वफा[13] हो जाना

हवस[14] को है निशाते कार[15] क्या क्या
न हो मरना, तो जीने का मजा क्या ?

निगाहे बेमुहाबा[16] चाहता हूँ
तगाफुलहाए-तम्की-आजमा[17] क्या ?

---

१ उपदेशक महोदय २ (उनके स्वागत में) आँखें और दिल बिछे हुए हैं ३ प्रेमोन्माद ४ रंग ढंग ५ जुल्फों के बंदी ६ प्रेम में बंदी ७ कारागार, जेल ८ नगर ९ प्रेम के दुखों का अकाल १० बूँद का ऐश्वर्य ११ विलीन १२ वंचित १३ चाहने वालों का शत्रु १४ लालसा १५ काम करने की उमंग १६ निःसंकोच दृष्टि १७ संतोष की परीक्षा लेने वाली उपेक्षा।

नफस[1] मौजे[2]-मुहीते[3] बेखुदी[4] है
यगाफुलहाए साकी[5] का गिला-क्या ?

दिमागे-अत्रे पैराहन[6] नही है
गमे-आवारगीहाए सबा[7] क्या ?

सुन, ऐ गारतगरे[8] जिन्से-वफा[9] सुन
शिकस्ते कीमते दिल[10] की सदा क्या ?

यह कातिल वादा ए सब्र-आज़मा[11] क्यो
यह काफिर फित्न ए ताकत रुबा[12] क्या ?

बला ए जॉ[13] है, 'गालिब', उसकी हर बात
इबारत[14] क्या, इशारत[15] क्या, अदा क्या ?

'असद' सौदा ए सरसब्जी[16] से है तस्लीम[17] रगीतर[18]
किकिश्ते खुश्क[19] उसका, अब्रे बेपरवा खिराम[20] उसका

मैं और बज्मे मय[21] से यू तिश्न काम[22] आऊँ
गर[23] मैंने की थी तोबा, साकी को क्या हुआ था ?

दरमाँदगी[24] मे 'गालिब' कुछ बन पडे तो जानूँ
जब रिश्त बेगिर[25] था, नाखुन गिर कुशा[26] था

---

१ सांस २ तरग ३ सागर ४ मस्ती ५ साकी की उपेक्षा ६ पहनने के वस्त्र के इत्र का ध्यान ७ प्रभात समीर की आवारगी का दुख ८ लुटेरा ९ प्रेम रूपी धन १० दिल की कीमत का टूटना ११ सताप की परीक्षा लेने वाला वचन १२ शक्ति चुराने वाला फितना १३ जान के लिए मुसीबत १४ लिखावट १५ सकेत १६ हरे भरे होने का उन्माद १७ अपनी स्थिति की स्वीकृति, स तोष १८ अधिक रगीन १९ सूखा खेत २० लापरवाह चलन वाला बादल २१ शराब की महफिल २२ प्यासा २३ यदि २४ दुख २५ जिसमे कोई गाठ-गुत्थी न हो २६ गाठ खोलने वाला।

घर हमारा, जो न रोते तो भी, वीरां[1] होता
बहर[2] गर बहर न होता, तो बयाबां होता

तुम से बेजा[3] है मुझे अपनी तबाही का गिला
इस में कुछ शाइब-ए-ख़ूबी-ए तक़दीर[4] भी था

क़ैद में है, तेरे वहशी को, वही ज़ुल्फ़ की याद
हां, कुछ एक रंजे गरांबारी-ए-ज़ंजीर[5] भी था

बिजली इक कौंद गयी आँखों के आगे तो क्या?
बात करते, कि मैं लब तिश्न-ए-तक़रीर[6] भी था

रेख़्ते[7] के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो, 'ग़ालिब'
कहते हैं, "अगले ज़माने में कोई 'मीर' भी था"

तेरे वादे पे जिये हम, तो यह जान झूठ जाना
कि ख़ुशी से मर जाते, अगर एतबार[8] होता

कोई मेरे दिल से पूछे, तीरे नीमकश[9] को
यह ख़लिश[10] कहां से होती, जो जिगर के पार होता

यह कहां की दोस्ती है कि बने हैं दोस्त नासेह[11]
कोई चारसाज़[12] होता, कोई ग़मगुसार[13] होता

---

१ बरबाद, उजाड़ २ समुद्र ३ अनुचित ४ किस्मत की ख़ूबी का हाथ ५ बेड़ी के बोझ का दुख ६ भाषण सुनने के उत्सुक ७ दिल्ली की ठेठ उर्दू बोली ८ विश्वास ९ आधा खींचा हुआ तीर १० चुभन पीड़ा ११ उपदेशक १२ उपचारक १३ सहानुभूति रखने वाला।

रगे संग[1] से टपकता वो लहू कि फिर न थमता
जिसे गम समझ रहे हो, यह अगर शरार[2] होता

गम अगरचे जाँ गुसल[3] है, पै कहाँ बचें? कि दिल है
गमे-इश्क गर न होता, गमे-रोजगार होता

कहूँ किससे मैं कि क्या है? शबे-गम[4] बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना, अगर एक बार होता

हुए मर के हम जो रुस्वा[5], हुए क्यों न गर्के दरिया[6]
न कभी जनाज़ा उठता, न कहीं मजार होता

ये मसाइले-तसव्वुफ[7], यह तेरा बयान 'गालिब'
तुझे हम वली[8] समझते, जो न बादख्वार[9] होता

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझ को होने ने, न होता मैं, तो क्या होता

हुई मुद्दत कि 'गालिब' मर गया, पर याद आता है
वो हर बात पर कहना कि "यूँ होता, तो क्या होता?"

दर्द, मिन्नत कशे दवा[1] न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ

---

१ पत्थर की नस २ चिनगारी ३ प्राणघातक ४ विषाद रात्रि ५ बदनाम ६ नदी में डूबे ७ आध्यात्मिकता की समस्याएँ ८ औलिया ९ शराबी १० दवा का आभारी।

है खबर गर्म उनके आने की
आज ही घर में बोरिया न हुआ

क्या वो नमरूद[1] की ख़ुदाई थी
बंदगी[2] में मेरा भला न हुआ

जान दी, दी हुई उसी की थी
हक़[3] तो यह है कि हक़[4] अदा न हुआ

बंदगी में भी वुह आजाद-ओ ख़ुदबीं[5] हैं कि हम
उलटे फिर आए, दरे-काबा[6] अगर वा[7] न हुआ

सीने का दाग है वो नाला[8] कि लब तक न गया
ख़ाक का रिज़्क[9] है, वो क़तरा कि दरिया न हुआ

क़तरे में दजला[10] दिखाई न दे, और जुज़्व[11] में कुल[12]
खेल लड़कों का हुआ, दीदए-बीना[13] न हुआ

थी खबर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुरज़े
देखने हम भी गए थे, पै तमाशा न हुआ

उरूजे नाउमीदी[14] चश्मे ज़ख़्मे चर्ख़[15] क्या जाने
बहारे बेख़िज़ा[16] अज[17] आहे बेतासीर[18] है पैदा

---

१ एक प्राचीन बादशाह जो अपने आपको ख़ुदा कहता था २ पूजा,
आराधना ३ सच ४ कर्त्तव्य भूमिका ५ स्वच्छन्द और अभिमानी ६ काबे का
दरवाज़ा ७ खुला ८ आह रुदन ९ ख़ुराक १० एक प्रख्यात नदी ११ अंश
१२ पूर्ण १३ देखने वाली आँखें १४ निराशा का उत्थान १५ आकाश के घाव
की आँख १६ बिना पतझड़ की बहार १७ १८ प्रभावहीन विलाप (रुदन)।

दूदे' शम्मे-कुश्त'-ए-गुल', बज्म-सामानी' अबस' ४
यक शुब' आशुफ्त'-नाजे-गुम्गुलस्तानी' अबस

है हवस', महल' वदोशे''-शोखी-ए-साकी-ए-मस्त
नश्श-ए-मय'' के तसव्वुर'' म निगहबानी'' अबस

जब कि नक्शे-मुद्दआ'' होने न जुज'' मौजे-सराब''
वादी-ए-हसरत''मे फिर आशुफ्त'' जौलानी' अबस

महमले'' पैमान-ए फुरसत'' है बर दोशे'' हुबाब''
दावा ए दरियाकशी'' व नश्श पैमाई' अबस

यक निगाहे गम'' है, जू शम्म सर-ता-पा'' गुदाज'
बहरे'-अज खुद'' रफ्तगाँ'' रजे-खुदआराई'' अबस

ऐ 'असद' बेजा'' है नाजे सजद ए-अर्जे नियाज''
आलमे-तसलीम'' म यह दावा आराई'' अबस

हूँ दागे-नीम रगी-ए-शामे-विसाले-यार''
नूरे चरागे-बज्म'' से जोशे-सहर है आज

---

१ धुआँ २ के प्रकार का ३ फूल ४ सभा का चयन ५ बेकार ६ शका ७ उद्विग्न ८ अलकें ९ वासना लालसा १० कजावा, डोली ११ कधे पर १२ मदहोशी १३ कल्पना १४ चौकीदारी १५ उद्देश्य चिह्न १६ सिवाय १७ मगमरीचिका की लहर १८ लालसा की घाटी १९ विकल २० दौडते (भडकते) फिरना २१ कजावा २२ फुरसत का जाम, प्याला २३ कधो पर २४ बुलबुला २५ नदी का पार करन (खीचन) का दावा २६ नशे की स्थिति म घूमना २७ सुलगती हुई दृष्टि २८ आपादमस्तक २९ पिघलती हुइ ३० ३१ उन लोगो के लिए जो खुद को त्याग चुके है ३२ खुद पसन्दी का दुख ३३ अनुचित ३४ झुकना ३५ वास्तविक ससार ३६ दावा करना ३७ मैं महबूब से मिलन न होन के कारण धुंधली शाम के निशान की तरह हूँ ३८ महफिल के चिराग का प्रकाश ३९ सुबह के आगमन का जोश (उमीद)।

ता सुब्ह[1] है ब मंज़िले-मकसद[2] रसीदनी[3]
दूदे - चरागे - खाना[4], गुबारे-सफर है आज

आता है एक पार-ए दिल हर फुगां[5] के साथ
तारे - नफस,[6] कमदे - शिकारे-असर[7] है आज

सैरे मुल्के हुस्न[8] को, मयखाने हा नज्रे खुमार[9]
चश्मे-मस्ते-यार[10] से, है गरदने मीना[11] पै बाज[12]

कत[13] ए सफरे - हस्ती व आरामे-फना[14] हेच[15]
रफ्तार नही वेशतर अज[16] लग्जिशे - पा[17] हेच

हंस्त हग[18] इसरार पै मजबूरे - खामुशी[19]
हस्ती नही जुज[20] बस्तने[21] पैमाने वफा[22] हेच

तम्साल[23] गुदाज[24] आईन है इबरते-बीनश[25]
नज्जार तहय्युर[26], चमनसिताने-बका[27] हेच

गुलजारे - दमीदन[28], सररसितान[29] रमीदन[30]
फुरसत तपिश व होस्ल-ए-नश्वो - नुमा[31] हेच

---

१ सुबह तक २ मंजिल और लक्ष्य तक ३ पहुंच ४ घर के चिराग का धुआं ५ विलाप ६ सास, सासो का सिलसिला ७ प्रभाव को जकड रखा है ८ सौदय नगर की सर के लिए ९ समूचे मयखाने का खुमार को समर्पित कर दो १० प्रेमिका की मस्त नजर ११ सुराही की गदन पर १२ खिराज कर १३ तोडना १४ मौत का आराम (आसूदगी) १५ तुच्छ १६ मे १७ पर की डगमगाहट १८ पूण १९ मौन रहने को विवश होना २० सिवाय, अतिरिक्त २१ बाधना २२ प्रेम का वायदा २३ प्रतिभा २४ नम २५ बुद्धिमत्ता का दुख २६ आश्चय २७ जीवन-उपवन २८ खिला हुआ उपवन २९ बुझा हुआ अंगारा ३० बुझना ३१ बढन, फूलन या विकास करन का हौसला।

आहगे-अदम[1] नाल ब कुहसार[2] गरो[3] है
हस्ती मे नही शोखी-ए-ईजादे-सदा[4] हेच

किम वात पै मगरूर[5] है ऐ इज्ज-तमन्ना[6] ?
सामाने दुआ वहशत[7] वो तासीरे-दुआ[8] हेच

हुस्न गमजे[9] की कशाकश[10] से छुटा मेरे वाद
वारे[11] आराम से है अहले-ज़फा[12] मेरे वाद

मनसबे - शेफ्तगी[13] के कोई काबिल न रहा
हुई माजूली ए-अन्दाजो - अदा[14] मेरे वाद

शम्म वुझती है, तो उसमे से धुआ उठता है
शोल ए-इश्क[15] सियपोश[16] हुआ मेरे वाद

दर खुरे-गज[17] नही, जौहरे वेदाद[18] को जा[19]
निगाहे-नाज़[20] है सुरमे[21] से खफा, मेरे वाद

है जुनूं, अहले - जुनू[22] के लिए आगोशे-विदा[23]
चाक होता है गरीबां से जुदा, मेरे वाद

"कौन होता है हरीफे-मय-मर्द अफगने इश्क ?"[24]
है मुकरर[25] लबे-साकी पै सला,[26] मेरे वाद

---

१ अनस्तित्व की लय २ पहाड ३ पहुँचा हुआ है ४ आवाज खोज निकालने की शोखी ५ गर्वोन्मत्त ६ अभिलाषा की कमी ७ दीवानगी ८ दुआ का प्रभाव ९ नाज-नखरो १० खीचतान ११ पूर्ण १२ जफ़ा करने वाले १३ आसक्ति का पद १४ नाज-नखरे जाते रहे १५ प्रेम का अगारा १६ राख हो जाना (काले वस्त्र पहन हुए) १७ प्रार्थना के योग्य १८ निष्ठुर तरह १९ जगह २० सुदर आँख २१ सुरमा २२ उन्मत्त व्यक्ति २३ विदा की गोद २४ मनुष्य घातक प्रेम की मदिरा पीने का साहस कौन करता है २५ दुबारा फिर से २६ आवाज।

हलाके बेखबरी,[1] नरम - वजूदो - अदम[2]
जहाँ व अहले-जहाँ[3] से जहाँ-जहाँ फरयाद[4]

जवाबे - सगदिलीहाए - दुश्मना[5] हिम्मत
ज़े[6] दस्ते - शोश दिलीहाए-दोस्ताँ[7] फरयाद

है दिलबरी कमीगर[8] ईजादे - यक निगाह[9]
कारे बहाना जूइ[10] चश्मे हया[11] बुलंद[12]

साबित हुआ है गरदने - मीना[13] पै खूने खल्क[14]
लरजे है मौजे मय[15], तेरी रफ्तार देख कर

बिक जाते हैं हम आप मताए सुखन[16] के साथ
लेकिन अयारे[17] तब[18]ए खरीदार देख कर

इन आबलों से पाँव के घबरा गया था मैं
जी खुश हुआ है राह को पुरखार[19] देख कर

गिरती थी हम प बर्के-तजल्ली,[20] न तूर[21] पर
देते हैं बाद[22], ज़र्फे[23]-कदहख्वार[24] देख कर

मकसद[25] है नाजो-गमज़[26], वले[27] गुफ्तगू मे काम
चलता नही है दश्न ओ-खंजर[28] कहे बगर

---

१ अज्ञान का शिकार २ अस्तित्व और अनस्तित्व का गीत ३ दुनिया वाले ४ हर जगह फरियाद करते घूमते हैं ५ शत्रुओं की कठोर हृदयता का जवाब ६ के ७ दोस्तो की साफ दिली ८ वार करने वाला ९ एक नजर की ईजाद १० बहाना बनाने का काम ११ शर्मीली आँख १२ ऊँची १३ सुराही की गर्दन १४ दुनिया की हत्या १५ शराब की लहर १६ काव्य रूपी धन १७ कसौटी १८ तबीयत १९ काँटो से भरी हुई कंटकाकीर्ण २० ईश्वरीय ज्योति की बिजली २१ वह पहाड़ विशेष जिस पर खुदा ने मूसा को दर्शन दिए थे २२ शराब २३ साहस २४ पीने वाला २५ उद्देश्य २६ प्रेमिका के नाज-नखरे व हाव भाव २७ मगर २८ इल्ज़ाम और खंजर।

हरचंद[1] हो मुशाहिद-ए-हक[2] की गुफ्तगू
बनती नही है, बाद-ओ सागर[3] कहे बगैर

है बस कि हर एक उनके इशारे मे निशाँ और
करते हैं मुहब्बत, तो गुजरता है गुमाँ और

या रब, वो न समझे हैं, न समझेंगे मेरी बात
दे और न दिल उनको, जो न दे मुझको जुबाँ और

हरचद सुबुक-दस्त[4] हुए बुतशिकनी[5] मे
हम तो अभी राह मे है संगे-गराँ[6] और

पाते नही जब राह, तो चढ जाते हैं नाले
रुकती है मेरी तब्अ[7], तो होती है रवाँ और

बीनश[8], ब सई[9]-ए-जब्ते-जूनूं[10] नौबहारतर[11]
दिल दर गुदाज नाल[12] बकाह[13] आबदारतर[14]

कातिल ब-अज्मे-नाज[15] ओ-दिल अज[16] जख्म दरगुदाज[17]
शमशीर आबदार वो निगह आबदारतर

है किस्वते[18]-उरूजे-तगाफुल[19], कमाले-हुस्न[20]
चश्मे-सिय ब-मर्गे-निगह सोगवारतर[21]

---

१ यद्यपि २ भगवत दशन ३ शराब और प्याला ४ सिद्धहस्त ५ मूर्तिभजन ६ भारी पत्थर ७ तबीयत ८ प्रतीत होता है ९ कोशिश से १० पागलपन का जब्त ११ अधिक १२ विलाप के कारण पिघल जाने वाला १३ चीखो-पुकार १४ अधिक जीवित है १५ नाज दिखाने पर कृतसकल्प १६ से १७ नम कमजोर १८ लिबास १९ उपेक्षा २० सौंदय का कमाल २१ दुखी।

ऐ चर्ख[1], खाक बरसरे[2] - तामीरे[3] - काइनात[4]
लेकिन बिना[5] -ए-अहदे वफा[6] उस्तुवारतर[7]

आईन दागे-हैरत वो हैरत शिकजे यास[8]
सीमाब[9] बेकरार वो 'असद' बेकरारतर

हरीफे[10] मतलबे मुश्किल नही फुसूने[11] नियाज़[12]
दुआ कुबूल हो, या रब, कि उम्र खिज़्[13] दराज़[14]

न हो ब हरज[15], बयाबाँ[16] नवर्दे[17]-वहमे वजूद[18]
हनोज़[19] तेरे तसव्वुर[20] मे है नशेबो-फराज[21]

न गुले-नग्म[22] हूँ, न प रद-ए साज
मैं हूँ अपनी शिकस्त[23] की आवाज

तू और आराइशे - खमे - काकुल[24]
मैं और अदेशाहाए - दूर दराज[25]

लाफे[26] - तमकी[27] फरेबे साद दिली[28]
हम है और राजहाए[29]-सीन -गुदाज[30]

हूँ गिरफ्तारे - उल्फते - सय्याद[31]
वरना बाकी है ताकते - परवाज़[32]

---

१ आकाश चक्र २ लगा हुआ ३ निर्माण ४ ब्रह्माण्ड ५ कारण, आधार ६ वफा का सकल्प ७ सुदढ ८ निराशा ९ पारा १० प्रतिद्वद्वी, शत्रु ११ माया जाल १२ प्रार्थना, इच्छा भेंट १३ लम्बी आयु के फरिश्ते की उम्र १४ लम्बी १५ बेहूदगी १६ बियाबान, उजाड १७ सफर तय करने वाला १८ अस्तित्व १९ अभी तक २० ध्यान कल्पना २१ ऊँच नीच २२ गीत सुमन २३ पराजय २४ घुघराले केशो का श्रृगार २५ भविष्य की आशकाएँ २६ दावा २७ सहन-शक्ति २८ सरल हृदयता का धोखा २९ रहस्य ३० भग्न हृदय ३१ शिकारी के प्रेम म बदी ३२ उडन की शक्ति।

असदुल्ला खाँ तमाम[1] हुआ
ऐ दिरेगा[2] वह रिन्दे शाहिदबाज़[3]

फरेबे-सनअते इजाद[4] का तमाशा देख
निगाह् अक्सफरोश[5] व खयाल आईन साज[6]

हनोज ऐ असरे दीद[7], नगे-रुस्वाई[8]
निगाह फित्न खिराम[9] व दरे दो आलम[10] बाज[11]

हुजूमे-फिक्र[12] से दिल मिस्ले-मौज[13] लरजे है
कि शीश[14] "नाजुक व सहबा[15] ए अवगीन[16] गुदाज[17]

'असद' से तर्के वफा[18] का गुमा[19] वो माना है
कि खेंचिए परे-ताइर[21] से सूरते-परवाज

आह् को चाहिए इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है, तेरी जुल्फ के सर[23] होने तक

दामे हर मौज[24] मे है, हल्क ए सद कामे नहंग[25]
देखें, क्या गुजरे हैं कतरे[26] पै गुहर[27] होने तक

आशिकी सब्र-तलब औ तमन्ना बेताब
दिल का क्या रग करूँ, खूने जिगर होने तक

---

१ समाप्त खत्म २ हाय, अफसोस ३ सौंदय की शराब पीने वाला शराबी ४ आविष्कार कला का धोखा ५ प्रतिबिम्ब बेचने वाला (वाली) ६ दपण बनाने वाला ७ दष्टि आख ८ बदनामी ९ छोटे छोटे कदमो से चलने वाली १० दोना लोको का दरवाजा ११ एक प्रसिद्ध पक्षी वाज १२ चिन्ताओ की भीड १३ तरग या लहर की तरह १४ दपण, काँच १५ शराब १६ शराब की सुराही १७ मांसल पिघलने वाला १८ प्रेम विच्छेद १९ भ्रम २० अथ २१ पक्षी २२ उडने की शक्ति २३ विजित २४ प्रत्येक तरग का जाल २५ सौ जबडो वाले मगरमच्छ का घेरा २६ बूद २७ मोती।

हमने माना कि तगाफुल[1] न करोगे, लेकिन
खाक हो जाएँगे हम, तुमको खबर होने तक

परतवे खुर[2] से है शबनम को फना[3] की तालीम[4]
मैं भी हूँ एक इनायत की नजर[5] होने तक

यक नजर बेश[6] नही, फुरसते-हस्ती[7] गाफिल[8]
गर्मी ए-बज्म[9] है, रक्से शरर[10] होने तक

गमे हस्ती[11] का 'असद' किससे हो जुज[12] 'मर्ग[13] इलाज
शम्म हर रग म जलती है सहर[14] होने तक

गर तुझ को है यकीने इजाबत[15], दुआ न मांग
यानी बगैरे यक दिले बेमुद्दआ[16] न माग

आता है, दागे हसरते-दिल[17] का शुमार याद
मुझसे मेरे गुनह[18] का हिसाब, ऐ खुदा न माग

मैं दौरगर्दे[19]-अर्जे-रसूमे[20]-नियाज[21] हूँ
दुश्मन समझ, वले[22] निगहे-आश्ना[23] न माग

गम नही होता है आजादो[24] को बेश अज-यक[25] नफस[26]
बर्क[27] से करते है रौशन[28] शम्म-ए-मातमखान[29] हम

१ उपेक्षा २ सूरज का प्रकाश ३ समाप्त हो जाना, मर जाना ४ शिक्षा ५ कृपा दृष्टि ६ अधिक ७ जीने की अवधि ८ बेसुध, असावधान ९ महफिल की गर्मी १० चिंगारी का नृत्य ११ जीवन का दुख १२ सिवाय १३ मृत्यु १४ सुबह सवेरा १५ क्यामत के दिन क्षमा कर दिए जाने का विश्वास १६ कामना रहित दिल के अतिरिक्त १७ दिल की हसरतों के दाग १८ अपराध १९ चक्कर मे फंसा हुआ २० समर्पण के संस्कार २१ पूरा करने का इच्छुक २२ लेकिन २३ मत्रीपूर्ण दृष्टि २४ फकीरों स्वतंत्र व्यक्तियों २५ एक से अधिक २६ साँस २७ बिजली २८ प्रकाशित २९ शोक भवन की शमा।

असर कमदी[1] ए फरयादे ना रसा[2], मालूम
गुबारे[3]-नाल[4], कमीगाहे[5]-मुद्दआ[6], मालूम

वक्द्रे[7]-हौसल-ए-इश्क[8] जल्वरेजी[9] है
वगरन खान ऐ-आईना[10] की फज़ा[11] मालूम

बहार, दरगिरवे[12] गुचा[13], शहर जौलाँ[14] है
तिलिस्मे नाज़[15], वजुज[16] तगी ए कबा[17] मालूम

तिलिस्मे-खाके कमीगाह[18] यक जहाँ सौदा[19]
वमर्गे[20], तकिय[21] ए आशाइशे[22] फना[23] मालूम

तकल्लुफ[24], आईन ए दो जहाँ[25] मदारा[26] है
सुरागे[27]-यक निगहे-कहर-आशना[28] मालम

'असद' फरेपत[29]-ए इन्तखाबे[30] तर्जे[31] जफा
वगरना दिलवरी[32] ए वाद ए वफा[33] मालूम

ब नाल[34] हासिले दिलबस्तगी[35] फराहम[36] कर
मता[37] ए-खान-ज़जीरे[38], जुज सदा[39], मालूम

---

१ ऊँची दीवार या मुडेर पर चढने के लिए इस्तमाल की जाने वाली रस्सी २ न पहुँचने वाली ३ धूल ४ आह ५ घात स्थल ६ उद्देश्य ७ के मान से प्रेम का साहस ८ निष्पत्ति १० दपण घर ११ शाभा १२ गिरवी १३ कली १४ बेडी १५ नाज नखरा का जादू १६ सिवाय १७ लिबास की तगी १८ घातस्थल की धूल का जादू १९ उ माद २० मत्यु २१ सहारा २२ एश्वय २३ अत, मत्यु मिट जाना २४ बनावट दिखावा औपचारिकता २५ दो दुनिताओ का दपण २६ विनम्रता २७ रहस्य २८ प्रकोप वाली दष्टि २९ आसक्त ३० चयन ३१ शैली ढब ३२ आकषण ३३ वफा का वचन ३४ आत्तनाद ३५ प्रेम की उपलब्धि ३६ एकत्र ३७ पूंजी, माल अस्बाब ३८ ज़जीर की कडी या घेरा ३९ आवाज, फकीर की आवाज ।

अज' आनजा' कि हसरत कशे-यार' हैं हम
रक़ीबे' तमन्ना-ए-दीदार' हैं हम

रसीदन', गुले-बागे वामांदगी' हैं
अबस' मह्फ़िल आरा ए रफ्तार' हैं हम

नफ़स' हो न माजूले''-शोला दरूदन
कि ज़ब्ते तपिश'' से शरक़रार'' है हम

तमाशा ए-गुलशन, तमन्ना ए चीदन''
बहार आफ़रीना'', गुनहगार हैं हम

न जौके-गरीबां'', न परवा-ए-दामां''
निगह आश्ना ए गुलो ख़ार'' हैं हम

'असद', शिकय कुफ़्रो-दुआ'' नासपासी'
हुजूमे तमन्ना'' से नाचार'' हैं हम

गुंच ए ना शगुफ़्त ''को दूर से मत दिखा कि यूं
बोस को पूछता हूं मैं, मुंह से मुझे बता कि यूं

पुरसिशे-तर्ज़े दिलबरी''कीजिए क्या कि बिना कहे
उसके हर एक इशारे से निकले है यह अदा कि यूं

---

१ से २ अन्यत्र ३ प्रेमी या प्रेमिका की इच्छा रखने वाले ४ प्रतिद्वंद्वी ५ दर्शन की अभिलाषा ६ पहुंचना ७ थकावट, निस्सहायता ८ व्यर्थ ९ गति का संवारने वाले १० श्वास ११ अपदस्थ १२ जलन का प्रकट न होने देना १३ आग का काम धंधा करने वाले १४ चुनना १५ धन्यवाद १६ दामन का शौक १७ आंचल की चिन्ता १८ फूल और कांटों के मित्र १९ कुफ़्र और दुआ २० कृतघ्नता २१ अभिलाषाओं की भीड़ २२ विवश २३ अविकशित कली २४ दिल छीनने का ढंग पूछना।

बज्म मे उसके रू-ब रू, क्यो न खामोश बैठिए
उसकी तो खामोशी मे भी, है यही मुद्दआ[1] कि यूँ

मैंने कहा कि "वज्मे नाज[2] चाहिए गैर से तिही"[3]
सुनके सितमजरीफ[4] ने मुझको उठा दिया कि यूँ

मुझसे कहा जो यार ने, "जाते है होश किस तरह?"
देख के मेरी बेखुदी, चलने लगी हवा कि यूँ

कब मुझे कूए-गैर[5] मे रहने की वजअ[6] याद थी?
आईन दार बन गई हैरतें[7]-नक्शे-पा[8] कि यूँ

जो यह कहे कि रेख्त[9] क्योकर हो रश्के फारसी?[10]
गुफ्त ए 'गालिब'[11] एक बार पढ के उसे सुना कि यूँ

इस सादगी पे कौन न मर जाए, ऐ खुदा
लडते हैं और हाथ मे तलवार भी नही

हम से खुल जाओ ब-वक्ते मयपरस्ती[12] एक दिन
वरना हम छेडेंगे, रखकर उज्रे-मस्ती[13] एक दिन

गर्रे-ए-ओजे-बिना-ए आलमे-इम्काँ न हो
इस बुलंदी[15] के नसीबो मे है पस्ती[16], एक दिन

कर्ज की पीते थे मय, लेकिन समझते थे कि हाँ
रग लावेगी हमारी फाक मस्ती[16] एक दिन

---

१ उद्देश्य २ नाज की महफिल ३ खाली ४ हँसी हँसी म ही अत्याचार करने वाला ५ पराए व्यक्ति (रकीब) की गली ६ प्रणाली, ढँग ७ आश्चर्य ८ पद चिह्न ९ उर्दू १० फारसी के बराबर ११ गालिब का कलाम १२ शराब पीते वक्त १३ मस्ती का बहाना करके १४ दुनिया को अपने महान् होने का गर्व १५ उत्थान (ऊँचाई) १६ पतन।

नग्म हाए गम[1] को भी, ऐ गनीमत जानिए
बे सदा[2] हो जाएगा, यह साज़े-हस्ती[3] एक दिन

तमाशा कि ऐ महवे आईनदारी[4]
तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं

बनाकर फकीरो का, हम भेस, 'गालिब'
तमाशा - ए - अहले - करम[5] देखते है

जमाना सख्त कम आज़ार[6] है ब-जाने 'असद'[7]
वगरना हम तो तवक्को[8] ज़ियाद[9] रखते हैं

जब करम[10] रुख़सते[11] बेबाकी ओ-गुस्ताखी[12] दे
कोई तकसीर[13] बजुज़[14] खिज्लते तकसीर[15] नहीं

थी वो इक शख्स के तसव्वुर[16] से
अब वो रानाई ए खयाल[17] कहा?

हुआ हूँ इश्क की गारतगरी[18] से शर्मिन्दा
सिवाए हसरते तामीर[19], घर मे खाक नही

रौनके-हस्ती है, इश्के खान वीरांसाज[20] से
अजुमन बे शम्म है, गर बर्क[21], खिरमन[22] मे नही

१ गम के गीत २ मौन ३ शरीर ४ आईना देखने म मस्त ५ दानियों का तमाशा ६ तकलीफ पहुँचाने वाला ७ असद की जान की कसम ८ अपेक्षा ९ अधिक १० कृपा (की मूर्ति) प्रेयसी ११ विदाई १२ उन्मुक्तता और उद्दंडता १३ अपराध १४ सिवाय १५ अपराध पर लज्जित होना १६ कल्पना, विचार १७ कल्पना सौंदय, विचार सौंदय १८ बरबादी १९ निर्माण की लालसा २० प्रेम के उजडे हुए घर २१ बिजली २२ भूसा निकला हुआ अनाज।

कम नही वो भी खराबी मे, पै वुसअत[1] मालूम
दश्त[2] मे है मुझे वो ऐश कि घर याद नही

करते किस मुंह से हो गुरबत[3] की शिकायत 'गालिब'
तुम को बे-महरी-ए-याराने-वतन[4] याद नही

आज हम अपनी परेशानी-ए-खातिर[5] उनसे
कहने जाते तो है, पर देखिए, क्या कहते है

अगले वक्तो के है ये लोग, इन्हे कुछ न कहो
जो मयो-नग्म[6] को अंदोहे-रुबा[7] कहते है

है परे सरहदे-इदराक[8] से, अपना मस्जूद[9]
किब्ले[10] को अहले-नजर[11], किब्ला नुमा[12] कहते है

किस मुंह से शुक्र कीजिए इस लुत्फे खास[13] का ?
पुरसिश[14] है, और पा-ए-सुखन[15] दरमियाँ नही

मिलती है खू-ए यार[16] से नार[17] इल्तिहाब[18] मे
काफिर हूँ, गर न मिलती हो राहत अजाब[19] मे

कब से हूँ, क्या बताऊँ, जहाने-खराब मे
शबहाए-हिज्र[20] को भी रखू, गर हिसाब मे

ता फिर न इंतजार मे, नीद आए उम्र भर
आने का अहद[21] कर गए, आए जो ख्वाब मे

---

१ विस्तार २ जगल ३ प्रवासी होने की ४ देशवासियों की निष्ठुरता ५ दिल की परेशानी ६ शराब और गीत (सगीत) ७ दुख दर्द को चुराने वाला ८ बुद्धि की सीमा ९ ईश्वर जिसे सिज्दा किया जाए १० काबा ११ बुद्धिमान लोग १२ कुतुबनुमा १३ विशेष आनन्द १४ आदर-सत्कार, पूछताछ १५ साहित्य का हस्तक्षेप १६ प्रेयसी का स्वभाव १७ आग (नरक) १८ लपट १९ दुख २० वियोग की रातें २१ वायदा।

लाखो लगाव, एक चुराना निगाह का
लाखो बनाव, एक बिगडना इताब[1] मे

'गालिब' छूटी शराब, पर अब भी कभी कभी
पीता हूँ रोजे अब्रो[2]-सबे-माहताब[3] मे

कल के लिए कर आज न खिस्सत[4] शराब मे
यह सू ए जन[5] है, साकी ए-कौसर[6] के बाब[7] मे

हैं आज क्यो जलील[8] कि कल न थी पसद
गुस्ताखी ए-फरिश्त, हमारी जनाब मे[9]

रौ[10] मे है रख्शे-उम्र[11] कहा देखिए थमे
नै[12] हाथ बाग पर है, न पा[13] है रकाब मे

अस्ले[14] शहूदो[15] शाहिदो[16]-मशहूद[17] एक हैं
हैरॉ हूँ, फिर मुशाहिद[18] है किस हिसाब मे[19]

है मुश्तमिल[20] नमूदे सुवर[21] पर वुजूदे-बहर[22]
याँ क्या धरा है कतर ओ-मौजो हुबाब[23] मे

---

१ क्रोध २ जिस दिन बादल छाया हो ३ चॉदनी रात ४ कजूसी ५ अविश्वास ६ कौसर स्रोत का साकी (खुदा) ७ प्रकरण, सदभ, अध्याय ८ तुच्छ अपमानित ९ खुदा न इसान बनाया और बाकी लार्गो ने उसे सिज्दा (प्रणाम) करने को कहा। एक फरिश्ते ने यह आदेश मानने से इन्कार किया तो खुदा न उसे स्वग से निकाल दिया और वह शतान बना। उसी आर सकेत करते हुए कहा है कि कभी वह समय था जब हमारे अर्थात मनुष्य के हुजूर म फरिश्ते की उद्दडता भी गवारा नही थी पर आज वही मनुष्य इतना अपमानित क्यो हो रहा है। १० गति ११ आयु का घोडा १२ न १३ पर १४ वास्तविकता, सचाई १५ उपस्थित, प्रकट १६ दशक १७ दृश्य, जिसे देखा जाए १८ अवलोकन १९ का क्या महत्त्व है २० निभर २१ रूप का प्रकट होना २२ समुद्र का अस्तित्व २३ बूद, लहर और बुलबुला।

शम इक अदा ए-नाज है अपने ही से सही
हैं कितने बेहिजाब[1] कि यू है हिजाब[2] मे

है गैबे गैब[3] जिसको समझते है हम शहूद[4]
हैं ख्वाब मे हनोज[5], जो जागे है ख्वाब मे

चलता हूँ थोडी दूर हर एक तेजरौ[6] के साथ
पहचानता नही हूँ अभी राहबर[7] को मैं

क्यो गरदिशे मुदाम[8] से घबरा न जाए दिल?
इसान हूँ, पियाल-ओ-सागर नही हूँ मैं

या रब जमाना मुझको मिटाता है किस लिए?
लौहे-जहा[9] पे हर्फे-मुकर्रर[10] नही हूँ मैं

दोनो जहान दे के वो समझे कि खुश रहा
याँ आ पडी यह शर्म कि तकरार[11] क्या करें

थक थक के हर मुकाम पे दो चार रह गए
तेरा पता न पाएँ तो नाचार[12] क्या करें

क्या शम्म के नही हैं हवा-ख्वाह[13], अहले बज्म[14]
हो गम ही जा गुदाज[15], तो गमख्वार[16] क्या करें

---

१ बेपर्दा २ पर्दा ३ छुपा हुआ ४ प्रकट ५ अभी तक ६ तेज चलने वाला, तीव्रगामी ७ पथ प्रदर्शक ८ हमेशा का चक्कर ९ संसार रूपी तख्ती १० दुबारा लिखा गया अक्षर ११ झगडा १२ असहाय बेबस १३ शुभचिन्तक १४ महफ़िल वाले १५ जान घुलाने वाला १६ शुभचिंतक सहानुभूति रखने वाला।

सब कहाँ, कुछ लाल-ओ गुल मे नुमायाँ[1] हो गई
खाक मे क्या सूरते होगी कि पिन्हाँ[2] हो गई

याद थी हम को भी रगारग बज्म आराइयाँ[3]
लेकिन अब नक्शो निगारे[4]-ताक निसियाँ[6] हो गई

नीद उसकी है, दिमाग उसका है, राते उसकी हैं
तेरी जुल्फ जिसके बाजू पर परीशा हो गई

जाँ फिजा है बाद[8], जिसके हाथ मे जाम आ गया
सब लकीरे हाथ की गोया रगे-जाँ हो गई

हम मुवह्हिद[9] हैं, हमारा केश[10] है तर्के रुसूम[11]
मिल्लत[12] जब मिट गई, अज्जा-ए-ईमाँ[13] हो गई

रज से खूगर[14] हुआ इसाँ तो मिट जाता है रज
मुश्किल मुझ पर पडी इतनी कि आसाँ हो गई

दैर[15] नही, हरम[16] नही, दर[17] नही, आस्ताँ[18] नही
बैठे हैं रहगुजर[19] पे हम, कोई हमे उठाए क्यो

जब वो जमाले[20]-दिलफरोज[21], सूरते[22] मेहरे[23] नीमरोज[24]
आप ही हो नज्जारा-साज[25], परदे मे मुँह छुपाए क्यो

कैदे हयातो[26] बन्दे-गम[27] अस्ल मे दोनो एक हैं
मौत से पहले आदमी गम से निजात[28] पाए क्यो

---

१ प्रकट २ गुप्त छिप गइ ३ महफिल सजाना ४ बेल-बूटे ५ ताक आला ६ विस्मृत ७ प्राणवधक ८ शराब ६ एकश्वरवादी १० धम ११ प्रथा त्याग १२ सम्प्रदाय १३ धम के अग १४ अभ्यस्त १५ मदिर १६ काबा १७ दरवाजा १८ चौखट १९ रास्ता २० सौदय २१ मनमोहक २२ सदृश्य, की तरह २३ सूरज २४ दोपहर २५ जलाने वाला २६ जीवन का बधन २७ दुख का बधन २८ मुक्ति।

हाँ वो नही खुदा-परस्त, जाओ वो वेवफा सही
जिसको हो दीनो दिल[1] अजीज[2] उसकी गली मे जाए क्यो

'गालिव'-ए खस्ता[3] के वगैर कौन से काम वद है
रोइये जार-जार क्या, कीजिए हाय-हाय क्यो

गुल, गुंचगी[4] मे गर्के दरिया ए रग[5] है
ऐ आगही[6], फरेबे-तमाशा[7] कहाँ नही

दैरो[8]-हरम[9], आईन ए-तकरारे-तमन्ना
वामांदगी[10]-ए-शौक तराशे है पनाहे[11]

मैं चश्मे-वा कुशाद[12] व गुलशन नजर-फरेब[13]
लेकिन अबस[14] किशवनमे खुरशीद[15] दीद[16] हूँ

हूँ गर्मी-ए निशाते[17] तसव्वुर[18] से नग्म सज[19]
मैं अदलीबे[20]-गुलशने ना आफरीद[21] हूँ

पानी से सग गुज़ीद[22] डरे जिस तरह 'असद'
डरता हूँ आदमी से कि मरदुम-गुजीद[23] हूँ

फुतादगी[24] मे कदम उस्तुवार[25] रखते है
वरगे-जाद[26] सरे कूए-यार[27] रखते है

---

१ धम और दिल २ प्रिय ३ बुरे हाल वाला ४ कली रूप म ५ रग की नदी मे डूबा हुआ ६ ज्ञान ७ तमाशे (प्रदशन) का धोखा ८ मदिर, बुतखाना ९ काबा, अत पुर १० थकावट ११ आश्रय १२ आँखें फैलाए १३ आखो को धोखा देने वाला १४ व्यथ १५ सूरज १६ आख १७ आनद १८ कल्पना १९ सुमधुर स्वर म गाने वाला २० बुलबुल २१ ऐसा बाग जिसका अस्तित्व ही न हो २२ कुत्ते का काटा हुआ २३ आदमी का काटा हुआ (सताया हुआ) २४ गिरा हुआ होना २५ दृढ २६ पगडडी २७ यार की गली की ओर।

तिलिस्मे[1] मस्ती ए दिल औ सू ए-हुजूमे सिरिश्क[2]
हम एक मयकद[3] दरिया के पार रखते हैं

निगाहे - दीद - ए-नक्शे-कदम है, जाद -ए-राह[4]
गुजश्तगां[5], असरे - इंतजार रखते हैं

'असद' हैरत कशे[6]-यक दागे मुश्क-अदूद[7] है, यारब
लिबासे शम्म पर इत्रे सयेदैजूर[8] मलते हैं

हुई हैं आब[9], शर्मे-कोशिशे-बेजा[10] से, तदबीरें[11]
अकरेज़े[12] तपिश हैं, मौज[13] की मानिन्द, जंजीरें

बे दिमागी, होल जू ए तर्के तनहाई नही
वरना क्या मौजे नफस[14], जंजीरे रुसवाई[15] नही

किसको दूं, यारब, हिसाबे सोजनावीहा ए दिल[16]?
आमदो-रफ्ते नफस[17], जुज[18] शोल पैमाई[19] नही

है आदमी, ब जाए खुद[20], इक महशरे खयाल[21]
हम अंजुमन[22] समझते हैं, खलवत[23] ही क्यो न हो

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो
हमसुखन[24] कोई न हो, और हमजबां[25] कोई न हो

बे दरो दीवार सा इक घर बनाया चाहिए
कोई हमसाया[26] न हो, और पासबां[27] कोई न हो

---

१ जादू २ आंसू ३ मदिरालय ४ पगडंडी ५ पूर्वज ६ आश्चर्यचकित ७ लेपना ८ अमावस्या ९ पानी १० अनुचित ११ उपाय १२ सबक, लज्जित करने वाला १३ तरंग १४ श्वास १५ बदनामी की जंजीर १६ दिल की जलन का हिसाब १७ सांस का आना जाना १८ सिवाय १९ आग खाना २० अपने आप में २१ विचारों की प्रलय २२ महफिल २३ एकांत २४ साथ बोलने वाला २५ वही भाषा बोलने वाला २६ पड़ोसी २७ पहरेदार, रक्षक।

पडिये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाइये तो नौहा ख्वा[1] कोई न हो

जब मयकदा[2] छुटा तो फिर अब क्या जगह की कैद
मस्जिद हो, मदरिसा[3] हो, कोई खानकाह[4] हो

सुनते है जो बहिश्त[5] की तारीफ, सब दुरुस्त
लेकिन खुदा करे वो तेरी जल्व-गाह[6] हो

गई वो बात कि हो गुफ्तगू, तो क्योकर हो
कहे से कुछ न हुआ, फिर कहो, तो क्योकर हो

अदब है और यही कशमकश[7], तो क्या कीजे
हया[8] है और यही गो मगो[9], तो क्योकर हो

तुम्ही कहो कि गुजारा सनम-परस्तो[10] का
बुतो[11] की हो अगर ऐसी ही खू[12], तो क्योकर हो

उलझते हो तुम, अगर देखते हो आईन
जो तुम से शहर मे हो एक दो, तो क्योकर हो

वफादारी बशर्ते-उस्तुवारी[13] अस्ले ईमाँ है
मरे बुतखाने[14] मे तो काबे मे गाडो बिरहमन को

न लुटता दिन को, यो कब रात को यूँ बेखबर सोता
रहा खटका न चोरी का, दुआ देता हूँ रहज़न[15] को

---

१ रोने वाला २ शराबघर ३ स्कूल ४ मुसलमान फकीरो (साधुओ) के रहने का स्थान, मठ ५ स्वर्ग ६ दर्शन-स्थान ७ खींचतान ८ लज्जा ९ असमंजस १० मूर्तिपूजक (प्रेमी) ११ मूर्ति (प्रेमिका) १२ आदत, प्रवृत्ति, रग-ढग १३ स्थायित्व की शर्त के साथ १४ मंदिर १५ लुटेरा, बटमार।

किसी को दे के दिल कोई नवा-सजे फुगां[1] क्यो हो
न हो जब दिल ही सीने मे, तो फिर मुंह मे जबां क्या हो

वो अपनी खू[2] न छोडेंगे, हम अपनी वज़अ[3] क्यो छोडें
सुबुक सर बनके क्या पूछे कि "हमसे सरगिरां[5] क्यो हो?"

किया गमख्वार[6] ने रुस्वा[7] लगे आग इस मुहब्बत को
न लाए ताब[8] जो गम की, वो मेरा राज़दां[9] क्यो हो

वफा कैसी ? कहां का इश्क ? जब सर फोड़ना ठहरा
तो फिर ऐ संग दिल[10] ! तेरा ही संग आस्तां[11] क्यो हो

यह फित्न आदमी की खान-वीरानी[12] को क्या कम है
हुए तुम दोस्त जिसके, दुश्मन उसका आसमां क्यो हो

निकाला चाहता है काम क्या तानो से तू 'गालिब'
तेरे बे महर[13] कहने से, वो मुझ पर मेहरबां क्यो हो

जुज़[14] दिल सुरागे दर्द[15] ब दिले-खुफ्तगां[16] न पूछ
आईन अज कर, सतो-खाले-बयां[17] न पूछ

हिन्दोस्तान साय-ए-गुल[18]-पा पा ए-तख्त[19] था
जाहो[20]-जलाले[21] अहदे[22]-विसाले[23]-बुतां[24] न पूछ

---

१ आर्त्तनाद करने वाला २ आदत ३ रीति ४ दीन हीन ५ नाराज ६ सहानुभूति रखने वाला ७ बदनाम ८ सहनशक्ति ९ भेद जानने वाला, मित्र १० कठोर हृदय ११ चौखट का पत्थर १२ घर की बरबादी १३ निष्ठुर १४ सिवाय १५ दर्द का पता १६ सोया हुआ १७ बालने का ढंग १८ फूल की छाया १९ शासन केन्द्र राजधानी २० प्रतिष्ठा २१ प्रताप २२ प्रतिज्ञा

परवाज[1], यक तब[2] ए-गमे-तसखीरे नाल[3] है
गर्मी ए नब्जे-खारो[4]-खसे आशियाँ[5] न पूछ

तू मश्के नाज[6] कर, दिले परवान है बहार
बेताबी ए तजल्ली[7] ए-आतिश-बजा[8] न पूछ

गफलत मता[9] ए-किफ्फ[10]-ए मीज़ाने[11]-अदल[12] है
यारब, हिसावे-सख्ती ए ख्वाबे-गराँ[13] न पूछ

हर दागे-ताजा यक दिले-दाग इतजार है
अर्जे-फिजा[14]-ए-सीन-ए-दर्द इम्तहाँ न पूछ

कहता था कल वो मरहमे-राज़[15] अपने से कि आह
दर्दे-जुदाई ए-असद अल्लाह खाँ न पूछ

है सब्ज-जार[16] हर दरो-दीवारे-गमकद[17]
जिसकी बहार[18] ये हो फिर उसकी खिज़ाँ[19] न पूछ

नाचार[20] बेकसी[21] की भी हसरत[22] उठाइये
दुश्वारिये-रहो[23]-सितमे हमरहा[24] न पूछ

जोशे दिल है,मुझ से हुस्ने,फितरते[25] 'बेदिल'न पूछ
कतरे[26] से मयखान ए दरिया ए बेसाहिल[27] न पूछ

---

१ उडान २ गर्मी ३ वशीभूत करना वशीभूत ४ आत्तनाद ५ काटा ६ नीड ७ हाव भाव ८ प्रकाश, आभा ९ प्रेमी जिसके अदर आग ही आग हो १० पूजी सरमाया ११ बधुत्व १२ तराज़ू १३ न्याय (१२ १३) वह तराज़ू जिसम क्यामत के दिन अच्छे बुरे कम तौले जाएंगे १४ बहुमूल्य १५ वातावरण १६ भेद जानन वाला १७ जहा हरियाली ही हरियाली हो १८ ग़म का घर १९ बसत २० पतझड २१ असहाय २२ दुख कष्ट २३ निराशा, इच्छा, अभिलाषा २४ माग की कठिनाइया २५ सहायात्री के अत्याचार, जुल्म २६ प्रकृति, स्वभाव २७ बूद २८ अनुपलब्ध।

पहन गरदनहा[1] ए दिल, वज्मे-निशाते[2]-गर्दबाद[3]
लज्जते-अर्जे कुशादे[4]-उक्द-ए-मुश्किल न पूछ

आबला[6], पैमान-ए-अदाज़े-तशवीश[7] था
ऐ दिमागे नारसा[8], खुमखान[9]-ए मजिल न पूछ

नै[10] सबा[11] बाले-परी[12], नै शोल[13]-सामाने जुनूँ
शम्म से जुज[14] अर्जे-अफसूने[15] गुदाज़े[16]-दिल न पूछ

यकमिज[17] बरहम[18]-ज़दन, हश्र दोआलम[19] फितन[20] हैं
याँ सुरागे-आफियत[21], जुज दीद ए बिस्मल[22] न पूछ

वज्म है यक पन्ब-ए-मीना[23], गुदाज़े-रब्त[24] से
ऐश कर, गाफिल, हिजाबे[25]-नश्श ए महफिल न पूछ

ता[26] तखल्लुस[27] जाम-ए-शगरनी अरजानी[28], 'असद'
शाइरी जुज साजे-दरवेशी[29] नही, हासिल[30] न पूछ

शिकव ओ शुक्र को समर[31] बीमो-उमीद[32] का समझ
खान ए आगही[33] खराब, दिल न समझ बला समझ

---

१ गर्दिशें २ राग रग और खुशी की महफिल ३ चक्रवात ४ विस्तृत ५ जटिलता ६ फफोला ७ चि ता, डर, व्याकुलता ८ जो पहुँच न सके ९ मदिरालय, शराबघर १० न न, ११ शीतल, मद और सुगंधित हवा १२ बाल और पख *१३ अगारा १४ के अलावा* १५ इन्द्रजाल *१६ पिघलाने वाला* १७ पलक १८ अस्त व्यस्त क्रुद्ध १९ दोनो लोको का परिणाम २० उपद्रव, विद्रोह २१ सुख चैन, शाति २२ आहत घायल २३ शराब की सुराही २४ लगाव, मत्री २५ सकोच, शम, ओट, पर्दा २६ तक, तलक २७ उपनाम २८ सस्तापन २९ फकीरी सन्यास ३० उपलब्धि ३१ फल, परिणाम ३२ आशा निराशा ३३ ज्ञान, सूचना परिचय पहचान।

शौके इनां[1] गसल अगर दर्मे जुनूं[2] हवस[3] करे
जाद[4]-ए-सैरे दो जहां, यक मिज ख्वावे पा[5] समझ

ऐ व सरावे-हुस्ने खल्क[6] तश्न-ए-सई[7] ए इम्तहां
शौक को मुनफइल[8] न कर, नाज[9] को इल्तिजा[10] समझ

शोखी ए हुस्नो इश्क है आईन-दारे[11] हमदिगर[12]
खार[13] को बेनियाम[14] जान, हम को बरहन-पा[15] समझ

कुल्फते[16] रब्ते[17] ईनो-आं[18], गफलते मुद्दआ[19] समझ
शौक करे जो सर गरां[20], महमले[21]-ख्वाबे-पा समझ

नग्म है, महवे साज[22] रह, नश्श है, बेनियाज[23] रह
रिन्दे[24] तमामे नाज[25] रह, खल्क[26] को पारसा[27] समझ

नै[28] सरो-बर्गे-आरजू[29], नै रस्मे-गुफ्तगू[30]
ऐ दिलो जाने-खल्क तू, हमको भी आशना[31] समझ

क्या पूछे है बरखुदगलतीहा[32]-ए अजीजां[33]?
ख्वारी को भी इक आर[34] है, आली नसबों[35] से

---

१ बागडोर, लगाम २ उन्माद का उपदंश ३ लालसा, उत्कंठा ४ पगडंडी ५ पाँव का स्वप्न या अभिलाषा ६ सृष्टि का सौंदर्य मृगतृष्णा की तरह है ७ प्रयत्न, पराक्रम ८ लज्जित ९ घमंड, हाव भाव १० प्रार्थना, निवेदन ११ शीशाघर १२ परस्पर १३ काँटा १४ आपे से बाहर, नंगी तलवार १५ नंगे पाँव १६ दुःख कष्ट १७ लगाव १८ इस उस, यह वह १९ उद्देश्य २० अप्रसन्न २१ ऊँट पर बाँधने का कजावा जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं २२ साज में तल्लीन २३ निश्चिन्त, निस्पृह २४ शराबी २५ सम्पूर्ण सौंदर्य २६ सृष्टि २७ इन्द्रिय निग्रही, जाहिद २८ न, न २९ ध्यान की अभिलाषा ३० वार्तालाप ३१ परिचित, मित्र ३२ कम होते हुए भी अपने को बहुत अधिक समझना यानी बड़ी गलतियाँ ३३ प्रियजन ३४ घृणा, लज्जा ३५ कुलीन।

ताकत फसान ए-वाद, अदेश शोल ईजाद'
ऐ गम हनोज़' आतिश' ! ऐ दिल हनोज़ खामी' !

हर चद उम्र गुजरी आजुदगी' मे, लेकिन
है शहरे-शोक को भी, जू शिकव नातमामी'

है यास' मे 'असद' को साकी से भी फरागत'
दरिया से खुश्क गुजरी मस्तो की तिश्न कामी'

है पेचतावे' -रिश्त -ए-शम्म -ए-सहरगही"
खजलत" गुदाजी"-ए-नफ़से"-नारसा" मुझे

ता चद पस्त-फितरती"-ए-तब्ब -ए-आरजू'
यारव, मिले बुलन्दी"-ए दस्ते-दुआ" मुझे

यक बार इम्तहाने-हवस' भी जरूर है
ए जोशे इश्क, बाद -ए-मद" आजमा मुझे

'असद',जमीयत्ते दिल" दरकनारे बेखुदी खुशतर"
दो आलम आगही", सामने यक रवाबे-परीशां है

आतिश अफरोजी"-ए-शोल ए-ईमा तुझ से
चश्मक आराई" ए सद शहरे-चरागा' मुझ से

---

१ आविष्कार २ अभी तक ३ आग ४ अपरिपक्वता, अनुभवहीनता ५ दुख, पीडा उदासी ६ अपूणता ७ निराशा ८ छुटकारा, मुक्ति ९ प्यास १० गुत्थी, उलझन ११ सुबह की १२ लज्जा १३ पिघलाने वाला पिघलन की प्रक्रिया १४ प्राणवायु आत्मा १५ न पहुँच सकने वाला १६ तुच्छ प्रकृति वाला, कमीना १७ अभिलाषा करने की आदत १८ ऊँचाई १९ दुआ के लिए उठे हाथ २० इच्छा, अभिलाषा २१ शराबी, खूब शराब पीने वाला २२ आत्म सतोष २३ उत्तम २४ ज्ञान २५ अग्नि प्रज्वलित करने वाला २६ सकेत २७ प्रकाशमान, रौशन ।

निगह, मैमारे-हसरतहा[1] चे आबादी ? चे वीरानी ?
कि मिज़गाँ[2] जिस तरफ वा[3] हो, कफे दामाने सहरा[4] है

बसरतीहा[5] - ए-फंदे - जिन्दगी मालूमे - आज़ादी
शरर[6] दर बदे दामे रिश्त - ए - रगहा ए खारा[7] है

'असद' बहारे - तमाशा - गुल्सिताने - हयात[8]
विसाले - लाल[9] - एजाराने[10] - सरो - कामत[11] है

शोखी - ए-मिज़राबे - जौलाँ[12], आबयारे - नग्म[13] है
बर[14] गुरेज़े[15] - नाख़ुने - मुतरिब[16], बहारे - नग्म है

किस से, ऐ गफलत, तुझे ताबीरे - आगाही[17] मिले
गोशहा[18] सीमाबी[19] - ओ - दिल बेक़रारे - नग्म है

साज़े - ऐशे - बेदिली है, खान - वीरानी[20] मुझे
सैल[21], याँ फूके[22] - सदाए - आबशारे[23] - नग्म है

खुद - फरोशीहा-ए हस्ती[24] बस कि जा ए-खन्द[25] है
हर शिकस्ते कीमते - दिल[26] मे सदा - ए - खन्द[27] है

नक्शे इबरत[28] दर नज़रहा[29], नक्दे-इशरत[30] दर बिसात[31]
दो जहाँ वुसअत[32], बक़द्रे यक फिजा ए-खन्द[33] है

---

१ निराशा का निर्माण करने वाली २ पलक ३ खुलना ४ रेगिस्तान का खुला विस्तार ५ कठिनाइयो से ६ अग्निकण ७ एक बहुत ही कठार पत्थर ८ जीवन उपवन ९ एक लाल फूल, पोस्त का फूल १० एज़ारे ११ तन मन १२ इधर उधर घूमना १३ गीत १४ पर, ऊपर १५ बचाव उपेक्षा १६ गायक १७ परिचय या नान का फल १८ भाग १९ पार का, पारे से सबधित २० भाग्यहीनता, घर बार और धन दौलत का नाश २१ सैलाब, प्लावन २२ फूक आवाज २३ झरना निझर २४ अस्तित्व की गद्दारी २५ अट्टहास, मुस्कान के प्राण २६ परास्त मन २७ मुस्कान की पुकार २८ मानसिक खेद २९ नजरो म ३० आनद रूपी धन ३१ सामथ्य ३२ विस्तार ३३ मुस्कान का माहोल ।

जा-ए-इस्तेहज़ा'है, इशरतकोशी'-ए-हस्ती, 'असद'
सुब्हो-शबनम, फुरसते-नश्वो-नुमा ए-ख़द' ह

तम्साले-जल्व' अर्ज़ कर, ऐ हुस्न, कब तलक
आईन -ए -ख़याल' को देखा करे कोई?

अर्ज़े - सिरिश्क' पर है, फिज़ा-ए-ज़माना' तग
सहरां' कहां कि दावते - दरिया' करे कोई

ज़जीर याद पडती है जादे' को देख कर
इस चश्म'' से हनोज़'' निगह यादगार है

निगाहे-इबरत-अफसू'', गाह'' बर्क'' व गाह मश्अल है''
हुआ हर ख़ल्वतो''-जलवत'' से हासिल'' ज़ौके तनहाई''

नै हसरते - तसल्ली, नै ज़ौके - बेकरारी
यक दद ओ सद दवा है, यक दस्त'' ओर सद''दुआ है

रुख़्सारे-यार''की जो खुली जल्व -गस्तरी''
ज़ुल्फे - सियाह'' भी शबे महताब'' हो गई

ख़बर निगह को निगह चश्म को अदू' जाने
वो जल्व कर कि न म जानू ओर न तू जाने

---

१ हंसी उडाना २ आनद प्राप्ति का प्रयत्न ३ मुस्कान का विकसित होना ४ बनाव सिंगार की उपमाओ से ५ कल्पनाओ का दपण ६ आसू ७ ज़माने का माहौल ८ रेगिस्तान ६ नदी की दावत १० पगडडी ११ आख १२ अभी तक १३ इन्द्रजाल १४ कभी १५ बिजली १६ मशाल १७ एकात १८ भीड १९ प्राप्त, उपलब्ध २० एकात का आनद २१ हाथ २२ सौ २३ प्रेमिका के कपोल २४ सौदय, बनाव सिंगार २५ काले केश २६ चांदनी रात २७ शत्रु।

जबाँ से अर्जे-तमन्ना- खामशी मालूम
मगर वो खान-वरअदाज गुफ्तगू[1] जाने

बादशाही का जहाँ ये हाल हो, 'गालिब' तो फिर
क्यो न दिल्ली मे हर इक नाचीज़ नव्वाबी करे

यक दरे वर रू-ए-रहमत[2] बस्त[3] दौरे शशजिहत[4]
नाउमीदी है, खयाले-खान-वीराँ[5] क्या करे

तोड बैठे जब कि हम जामो-सुबू[6], फिर हमको क्या
आसमाँ से बाद ए गुलफाम[7] गर बरसा करे

हैरत हिजाबे[8]-जल्व-ओ वहशत[9] गुबारे चश्म[10]
पा-ए-नजर ब-दामाने-सहरा न खीचिए

वामाँदगी[11] बहान औ दिलबस्तगी[12] फरेब[13]
दर्दे-तलब[14] ब-आब्ल-ए पा[15] न खीचिए

है बेखुमार नश्श-ए-खूने-जिगर, 'असद'
दस्ते-हवस[16] ब-गर्दने-मीना[17] न खीचिए

वामाँद[18] ए-ज़ौके-[19] तरबे[20] - वस्ल[21] नही हैं
ऐ हसरते[22]-बिस्यार[23], तमन्ना[24] की कमी है

---

१ वार्तालाप २ दया, कृपा, करुणा ३ बंधा हुआ ४ छहा दिशाएँ (चार दिशाएँ और ऊपर व नीचे) ५ अभागे की कल्पना ६ शराब का प्याला व सुराही ७ पुष्पागी सुगंधित शराब ८ पर्दा, आट, लज्जा ९ भय, आदमियो से भडकना, सबसे अलग रहना १० आख का गुबार ११ थकावट लाचारी १२ प्रेम १३ धोखा १४ इच्छा, अभिलाषा, याचना १५ पाँव के फफोले १६ लालसा का हाथ १७ शराब की सुराही की गर्दन की ओर १८ पस्त, थका हुआ १९ आनद २० हर्ष, आह्लाद २१ प्रेमी प्रेमिका का मिलन, सयोग २२ कामना, लालसा २३ अत्यधिक २४ आकाक्षा, अभिलाषा।

मिज[1] पहलू-ए-चश्मे-जल्व-ए-इद्राक[2] बाकी है
हुआ वो शोल[3] दाग और शोखी ए खाशाक[4] बाकी है

गुदाज[5] सई[6] ए-बीनश[7] शुस्तो शू[8] से नक्शे-खुदकामी[9]
सरापा[10] शबनम आईं[11], यक निगाहे-पाक[12] बाकी है

चमनजारे-तमन्ना[13] हो गया सर्फे-खिजां[14] लेकिन
बहारे-नीम रंग-आहे-हसरतनाक[15] बाकी है

न हैरत चश्मे साकी की न सुहबत[16] दौरे सागर की
मेरी महफिल मे, 'गालिब', गर्दिशे-अफलाक[17] बाकी है

लाल ओ गुल[18] बहम आईन ए-अफलाके बहार[19]
हूँ मैं वो दाग कि फूलो मे बसाया है मुझे

दर्दे इज़हारे-तपिश[20] किसवती-ए गुल[21] मालूम
हूँ मैं वो चाक[22] कि कांटो मे सुलाया है मुझे

बेदिमागे-तपिश[23] ओ अज दो आलम[24] फरयाद
हूँ मैं वो खाक कि मातम मे उडाया ह मुझे

जामे हर-जर है सरशारे[25]-तमाशा मुझ से
किस का दिल हूँ कि दो आलम[26] मे लगाया है मुझे

---

१ पलक २ अगोचर वस्तुओ का अनुभव ज्ञान ३ अगारा ४ राख, खाक ५ मासलपन, पिघलने वाला ६ प्रयत्न, पराक्रम ७ दृष्टि ८ सफाई धुलाई ९ स्वच्छदता १० आपाद मस्तक ११ ओस १२ पवित्र दृष्टि १३ आकाक्षा का उपवन १४ पतझड की भेंट १५ लालसामय १६ साथ १७ सुबह के उजालो की गर्दिश १८ फूल १९ बसत २० हार्दिक व्यथा की अभि यक्ति का दद २१ फूल का लिबास २२ दरार, विदीण २३ जलन की अप्रसन्नता २४ दोनो जगत २५ परिपूण लबरेज़ २६ दोना जगत ।

जोशे - फरयाद[1] से लूंगा दीत ख्वाब, 'असद'
शोखी -ए नग्म[2] - ए - 'बेदिल' ने जगाया है मुझे

जुनूं[3] रुसवाई[4] -ए - वारस्तगी[5] जंजीर बेहतर है
बकद्रे मसलहत[6], दिल - तंगी - ए - तदबीर[7] बेहतर है

खुशा[8] ! खुदबीनी[9]-ओ-तदबीरो-गफलत[10] नक्दे अंदेश[11]
बदीने[12]-इज्ज[13] अगर, बदनामी ए-तकदीर[14] बेहतर है

दिले-आगाह[15] तस्की - खेज[16] बेदर्दी न हो, यारब
नफस[17], आईन दारे - आहे - बेतासीर बेहतर है

खुदाया[18] चश्म - ता - दिल[19] दर्द है, अफसूने - आगाही[20]
निगह, हैरत सवादे - ख्वाबे - बेताबीर[21] बेहतर है

दरूने[22] -जौहरे - आईन[23], जूं[24] बर्गे हिना[25], खूं है
बुता[26], नक्शे खुदआराई[27], हया[28] तहरीर[29] बेहतर है

दरयूज[30] -ए - सामानहा -ए बे - सरो सामानी[31]
ईजादे - गिरीबांहा[32], दर पर्द[33] -ए - उरयानी[34]

---

१ प्रार्थना का जोश २ गीत के सौंदर्य ३ पागलपन, उन्मत्तता ४ बदनामी ५ स्वच्छन्दता ६ परामर्श ७ उपाय, तरकीब ८ अहो, क्या खूब, वाह वाह ९ अहंकार, अपने को सब कुछ समझना १० निश्चेष्टता ११ आशंका रूपी धन १२ धर्मपूर्वक १३ सम्मान १४ भाग्य की बदनामी १५ परिचित, ज्ञात १६ संतोषदायक, सान्त्वनाप्रद १७ श्वास १८ हे ईश्वर ! १९ आँख से दिल तक २० ज्ञान का इन्द्रजाल २१ वह स्वप्न जिसका फल बता पाना संभव न हो २२ हृदय आत्मा २३ दर्पण पर पड़ी हुई धारियाँ २४ ज्यों २५ मेंहदी का पत्ता २६ प्रतिमा, प्रेमिका २७ अपने-आपको बनाने-सँवारने की क्रिया २८ लज्जा २९ लिखना, लेखन ३० भीख माँगना भिक्षाटन ३१ निर्धनता ३२ कुर्ते व कमीज का गला ३३ पर्दे में ३४ नग्नता ।

तम्साले[1]-तमाशाहा[2], इकवाले तमन्नाहा[3]
इज्जे[4] - अर्के - शर्मे, ऐ आईन - हैरानी

दावा-ए-जुनूं[5] बातिल[6], तस्लीम[7] अबस[8] हासिल[9]
परवाज़े-फना[10] मुश्किल, मैं इज्जे-तनआसानी[11]

बेगानगी-ए-खूहा[12], मौजे-रमे-आहूहा[13]
दामे-गिल-ए-उल्फत[14]-जंजीरे-पशेमानी[15]

परवाज़[16] तपिश[17] रंगे, गुलज़ार[18] हम[19] तंगे
खूं हो कफसे दिल[20] में, ऐ ज़ौके पुरअफ्शानी[21]

सग[22] आमदो सख्त[23] आमद[24], दर्दे सरे खुद्दारी[25]
माज़ूरे[26]-सुबुक्सारी[27], मजबूरे-गरांजानी[28]

गुलज़ारे तमन्ना हूँ, गुलचीने-तमाशा हूँ
सद[29] नल[30], 'असद', बुलबुल दरबंदे[31] जबांदानी[32]

ख्वाबे-गफलत[33] ब-कमीगाहे[34] नज़र पिनहां[35] है
शाम, साए से बतराज़े-सहर[36] पिनहां है

---

१ आकृति २ दमन ३ अभिलाषा का सौभाग्य ४ सम्मान ५ पागलपन का दावा ६ व्यर्थ झूठ ७ स्वीकार करना ८ निरर्थक ९ उपलब्धि १० मृत्यु की उड़ान ११ आलस, निकम्मापन १२ स्वभाव प्रकृति १३ हरिणों के दौड़ने की तरंग १४ प्रेम स्नेह १५ लज्जा पश्चात्ताप शर्मिन्दगी १६ उड़ान १७ जलन मनस्ताप १८ उपवन, उद्यान १९ समस्त समूचा २० दिलरूपी पिंजड़ा २१ स्वयं को पूर्णतः प्रकट करने का शौक २२ पत्थर २३ कठिन २४ आगमन २५ स्वाभिमान २६ विवश लाचार २७ सांसारिक बंधनों से मुक्ति २८ आलस्य, काहिली २९ सौ ३० आर्त्तनाद ३१ चारदीवारी ३२ भाषा-ज्ञान ३३ असतर्कता ३४ शिकार की ताक में बैठने का स्थान ३५ गुप्त, छिपा हुआ ३६ सुबह की तरह।

दो जहाँ[1], गर्दिशे यक सुब्हे[2] इसरारे[3] नियाज़[4]
नक्दे[5] सद दिल ब-गरेबाने सहर[6] पिनहाँ है

खलवते[7]-दिल मे न कर दखल[8] 'वजुज़'[9], सज्द ए शौक[10]
आस्ताँ[11] मे सिफ्ते[12] आईन दर पिनहाँ है

होश ऐ हर्ज़ दिरा[13], तुहमते[14] बेदर्दी-चन्द[15]
नाल[16] दर गिर्दे तमन्ना ए असर पिनहा है

वहमे[17]-गफलत मगर एहरामे[18]-फसुदन[19] बाधे
वरना हर सग के बातिन[20] मे शरर[21] पिनहाँ है

है अर्ज़-जौहरे खतो-खाले-हजार अक्स[22]
लेकिन अनोज[23] दामने[24] आईन पाक[25] है

हूँ खलवते[26] फसुदगी[27]-ए-इन्तज़ार मे
वो बदिमाग जिसको हवस[28] भी तपाक[29] है

मस्ती-व-जौके-गफलते-साकी, हलाक[30] है
मौजे शराब[31], यक मिज़[32]-ए-ख्वाबनाक[33] है

जोशे जुनू से कुछ नज़र आता नही, 'असद'
सहरा हमारी आख मे एक मुश्ते[34] खाक है

---

१ दोनों लोक २ सुमरनी, माला ३ आग्रह ४ भेंट, मुलाकात ५ पूँजी ६ सुबह ७ एकांत ८ प्रवेश, हस्तक्षेप ९ सिवाय १० शौक का सिज्दा (सिज्द) ११ दहलीज, चौखट १२ विशेषता १३ निःसार बातें करने वाला १४ लांछन, आरोप १५ कुछ १६ आर्तनाद १७ भ्रम १८ हाजियों का अंग-वस्त्र १९ खिन्नता, उदासी २० हृदय २१ अग्निकण, चिनगारी २२ प्रतिबिम्ब २३ अभी तक २४ आँचल २५ पवित्र २६ एकांत २७ खिन्नता, उदासी २८ कामना लालसा २९ प्रेम, प्यार, आवभगत ३० हत, वधित ३१ शराब की तरंग ३२ पलक ३३ स्वप्न दर्शन वाली ३४ एक मुट्ठी।

नजर-परस्ती[1]-ओ-बेकारी-ओ खुद आराई[2]
रकीबे[3] आईन है, हैरते तमाशाई[4]

जे खुद गुजश्तने[5] दिल कारवाने-हैरत है
निगह, गुबारे-अदबगाहे[6]-जल्व-फरमाई[7]

खराबे[8]-नाल ए बुलबुल, शहीदे-खन्द-ए-गुल[9]
हनोज[10] दावा-ए तमकीनो[11] बीमे[12]-रुस्वाई[13]

हजार काफिल-ए आरजू, बयाबाँ मर्ग[14]
हनोज महमले[15]-हसरत[16] बदोशे[17] खुदराई[18]

वहमे[19]-तरबे[20]-हस्ती, ईजादे-सिय मस्ती[21]
तिस्की[22]-दहे[23] सद[24] महफिल, यक सागरे-खाली[25] है

सद जल्व[26] रू-ब-रू[27] है, जो मिजगाँ[28] उठाइये
ताकत कहाँ कि दीद[29] का अहसाँ[30] उठाइये

या मेरे खस्मे-रश्क[31] को रुस्वा[32] न कीजिए
या पद-ए तबस्सुमे[33]-पिनहाँ[34] उठाइये

---

१ अपनी दृष्टि मे स्वय को बहुत कुछ समझने वाला २ दम्भी ३ प्रतिद्वन्द्वी ४ तमाशा देखने वाले (दर्शक) का आश्चर्य ५ गुजरने योग्य ६ साहित्य केन्द्र ७ बनाव सिंगार के साथ उपस्थिति, किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की उपस्थिति ८ विकृत, उन्मत्त ९ फूल की मुस्कान १० अभी तक ११ प्रतिष्ठा सम्मान, स्थिरता १२ भय, निराशा १३ बदनामी १४ मृत्यु १५ ऊँट पर बाँधने का कजावा जिसमे स्त्रियाँ बैठती हैं १६ अभिलाषा कामना १७ कंधो पर १८ स्वेच्छाचार १९ भ्रम २० आनंद, उल्लास २१ अत्यधिक मस्ती २२ सान्त्वना, संतोष २३ दस २४ सौ (दह सद=एक हजार) २५ शराब की एक खाली सुराही २६ दर्शन, प्रदर्शन, बना सँवरा सौन्दर्य २७ सामने २८ पलकें २९ दृष्टि आँख ३० अहसान ३१ ईर्ष्या ३२ बदनाम ३३ मुस्कान ३४ छिपी हुई।

विसाते[1] इज्ज[2] मे था एक दिल, यक कतर-ए खू[3] वो भी
सो रहता है ब - अदाजे - चकीदन[4] सरनिगू[5] वो भी

रहे उस शोख से आजुर्दे[6], हम चदे-तकल्लुफ[7] से
तकल्लुफ बर - तरफ, था एक अदाजे - जुनू वो भी

न करता काश नाल, मुझको क्या मालूम था हमदम
कि होगा बाइसे[8] - अफजाइशे[9] - दर्दे - दरू[10] वो भी

न इतना बुर्रिशे - तेगे - जफा[11] पर नाज फरमाओ
मेरे दरिया - ए - बेताबी[12] मे है इक मौजे खू[13] वो भी

मये इशरत[14] की ख्वाहिश साकी - ए - गर्दू[15] से क्या कीजे
लिए बैठा है इक दो चार जामे - वाजगू[16] वो भी

मेरे दिल मे है, 'गालिब', शौके वस्लो[17] शिकव ए-हिजरा[18]
खुदा वो दिन करे जो उससे मैं यह भी कहूं वो भी

दद से मेरे है तुझको बेकरारी, हाय हाय
क्या हुई जालिम, तेरी गफलत शिआरी[19], हाय हाय

तेरे दिल मे गर न था आशोबे-गम[20] का हौसला
तू ने फिर क्यो की थी मेरी गमगुसारी[21], हाय-हाय

---

१ पूजी, सरमाया सामर्थ्य, फश २ शक्तिहीनता, असमथता ३ लहू की एक बूद ४ टपकने की स्थिति म ५ अधोमुख ६ अप्रसन्न, रूठे हुए ७ कुछ औपचारिकता से ८ कारण ९ वद्धि १० भीतरी दद ११ अत्याचार रूपी तलवार की धार १२ बेताबी की नदी १३ लहू की लहर १४ सुख सुरा १५ आकाश का साकी, खुदा १६ औंधे प्याले (आकाश को औंधा प्याला कहा जाता है और इस्लाम के अनुसार आकाश सात है) १७ मिलन की लालसा १८ वियोग की शिकायत १९ उदासीनता का व्यवहार २० गम सहना २१ सहानुभूति।

क्यो मेरी ग़मख़ारी का तुझको आया था ख़याल
दुश्मनी अपनी थी दोस्तदारी[1], हाय हाय

उम्र भर का तूने पैमाने वफ़ा[2] बाँधा तो क्या
उम्र को भी तो नही है पायदारी[3], हाय हाय

ज़हर लगती है मुझे आबो-हवा-ए-ज़िन्दगी[4]
यानी तुझ से थी इसे नासाज़गारी[5], हाय हाय

गुलफ़िशानीहा ए नाज़े-जल्व[6] को क्या हो गया
ख़ाक पर होती है तेरी लालकारी[7], हाय हाय

शर्मे-रुस्वाई[8] से जा छुपना नक़ाबे-ख़ाक[9] मे
ख़त्म है उल्फ़त की तुझ पर पर्दादारी, हाय हाय

ख़ाक मे नामूसे-पैमाने-मुहब्बत मिल गई
उठ गई दुनिया से राहो-रस्मे-यारी, हाय हाय

हाथ ही तेग आज़मा[10] का काम से जाता रहा[11]
दिल पे इक लगने न पाया ज़ख़्मे कारी[12], हाय हाय

किस तरह काटे कोई शबहा-ए-तारे-बरशगाल[13]
है नज़र [illegible] कर्द[14] ए-अख़्तरशुमारी[15], हाय हाय

---

१ मित्रता २ प्रेम निभाने का प्रण ३ स्थिरता ४ जीवन की जलवायु ५ विरोध रास न आने की स्थिति ६ गर्वोन्मत्त सौंदर्य की अठखेलियों की पुष्प वर्षा ७ फल पत्तियों का शृंगार ८ बदनामी की शर्म ९ मिट्टी म धरती का आँचल (कब्र) १० तलवार का जोर आजमाने वाला ११ शक्ति हीन (बेकार) हो जाना १२ घातक (गहरा) घाव १३ बरसात की अँधेरी रातें १४ अभ्यस्त, आदी १५ तारे गिनना।

गोश[1] महजूरे[2] -पयामो[3] - चश्म महरूमे-जमाल[4]
एक दिल, तिस पर यह नाउम्मीदवारी[5], हाय हाय

इश्क़ ने पकडा न था, 'गालिब' अभी वहशत[6] का रग[7]
रह गया था दिल मे जो कुछ जौके-ख्वारी[8], हाय हाय

हर यक मकान को है मकी से शरफ[9], 'असद'
मजनू जो मर गया है तो जगल उदास है

किस पर्दे मे है आईन परदाज[10], ऐ खुदा!
रहमत[11] कि उज्रख्वाह[12]-लबे - बेसवाल[13] है

हस्ती[14] के मत फरेब मे आजाइयो, 'असद'
आलम[15] तमाम हल्क[16]-ए-दामे-खयाल[17] है

तुम अपने शिकवे की बातें न खोद खोद के पूछो
हजर करो[18] मेरे दिल से की इसमे आग दबी है

दिल, यह दर्दो आलम भी[19] तो मुग्तनिम[20] है, कि आखिर
न गिरय - ए - सहरी[21] है, न आहे नीमशबी[22] है

ढूढे है उस मुगन्नी[23]-ए-आतिश-नफस[24] को जी
जिसकी सदा[25] हो जल्व[26]-ए-बर्के-फना[27] मुझे

---

१ कान २ वंचित, तरसता हुआ ३ सवाद ४ दिव्य दर्शनों से वंचित ५ निराशा ६ उन्माद ७ रूप ८ मिटने की इच्छा ९ सम्मान, प्रतिष्ठा १० प्रकाश देन वाला ११ कृपा, दया, क्षमा १२ क्षमाप्रार्थी १३ मौन अधर १४ अस्तित्व, जीवन १५ ससार, दुनिया १६ कडी, घेरा १७ कल्पना-जाल १८ बचो, भय खाओ १९ दुख-दर्द २० ग़नीमत २१ प्रातःकालीन रुदन २२ आधी रात की आहें २३ गायक २४ आग बरसाने वाला २५ आवाज़ २६ चमक, सौंदर्य २७ मृत्यु लाने वाली बिजली।

मस्तान तै करूँ हूँ रहे वादी ए-खयाल[1]
ता[2] बाजगश्त[3] से न रहे मुद्दआ[4] मुझे

खुलता किसी पें क्यो मेरे दिल का मुआमला[5]
शेरो के इतखाब[6] ने रुस्वा[7] किया मुझे

एक हगामे पें मौकूफ़[8] है घर की रौनक
नौह ए गम[9] ही सही, नग्म ए शादी[10] न सही

न सताइश[11] की तमन्ना, न सिले[12] की परवा[13]
गर[14] नही हैं मेरे अशआर[15] मे मानी[16], न सही

रहा आबाद आलम, अहले हिम्मत[17] के न होने से
भरे हैं जिस कदर जामो सुबू[18] मयखाना खाली है

आगोश[19] - गुल - कुशाद[20] बराए - विदाअ[21] है
ऐ अदलीब[22] ! चल कि चले दिन बहार के

हर कदम दूरी - ए - मंजिल है नुमाया[23] मुझ से
मेरी रफ्तार से भागे है बयाबां[24] मुझ से

गर्दिशे - सागसे सद जल्व - ए रंगी[25] तुझ से
आईनदारी ए-यक दीद ए हैरां[26] मुझ से

---

१ कल्पना लोक का मार्ग २ तक, तलक ३ वापसी, लौटना ४ मतलब, गरज ५ रहस्य ६ चयन ७ बदनाम ८ निर्भर ९ दुखो का विलाप १० खुशी (शादी) का संगीत ११ प्रशंसा १२ बदनामी, प्रतिशोध १३ चिंता १४ अगर, यदि १५ शेर का बहुवचन १६ अर्थ १७ साहसी १८ प्याला और सुराही १९ गोद पहलू २० खिला हुआ फूल २१ विदा के लिए २२ बुलबुल २३ प्रकट २४ वीरान, बियावान २५ अदभुत सौंदर्य २६ आश्चर्यचकित दृष्टि।

निगहे-गर्म से इक आग टपकती है, 'असद'
है चरागाँ[1] खसो-खाशाके-गुलिस्ताँ[2] मुझ से

है वो ही बदमस्ती ए-हर जर्रे[3] का खुद उज्रख्वाह[4]
जिसके जल्वे[5] से जमीं-ता-आसमाँ[6] सरशार[7] है

आलम गुबारे-वहशते मजनूँ[8] है सर-ब-सर[9]
कब तक खयाले तुर्रए लैला[10] करे कोई

अफसुर्दगी[11] नहीं तरब अन्शा-ए इल्तिफात[12]
हाँ दर्द बन के दिल में मगर जा[13] करे कोई

रोने से, ऐ नदीम[14], मलामत[15] न कर मुझे
आखिर कभी तो उक्द-ए-दिल[16] वा[17] करे कोई

लख्ते जिगर[18] से है रगे-हर खार[19], शाखे-गुल[20]
ता चंद[21] बागबानी-ए-सहरा[22] करे कोई

नाकामी-ए-निगाह है बर्के-नाराज सोज[23]
तू वो नहीं कि तुझको तमाशा करे कोई

बेकारी-ए जुनूँ[24] को है सर पीटने का शग्ल[25]
जब हाथ टूट जाएँ तो फिर क्या करे कोई

---

१ प्रकाशित २ बाग का कूड़ा-करकट ३ प्रत्येक कण की मस्ती ४ क्षमा प्रार्थी ५ सौन्दर्य ६ धरती से आसमान तक ७ परिपूर्ण, मस्त ८ मजनूँ के उन्माद की धूल ९ आदि से अंत तक १० लैला की जुल्फों की कल्पना ११ उदासी खिन्नता १२ कृपा का आनंद पाने वाली १३ जगह १४ मित्र १५ भर्त्सना, निन्दा १६ दिल की गांठ १७ खोल १८ कलेजे का टुकड़ा १९ हर कांटे की नस २० गुलाब की डाली २१ कब तक २२ रेगिस्तान की बागबानी २३ दृष्टि की अवलोकन शक्ति को भस्म कर देने वाली २४ उन्माद की बेकारी २५ जी बहलाने का काम धंधा।

है ज़र्रे ज़र तंगी-ए-जा[1] से गुबारे-शौक[2]
गर दाम[3] ये है, वुसअते-सहरा[4] शिकार है

बेपर्दे सू ए-वादी ए मनजूं[5] गुजर न कर
हर ज़र्रे के नकाब में दिल बेकरार है

ऐ अंदलीब[6], यक कफ़े-खस[7] बहरे आशियां[8]
तूफ़ाने-आमद[9], आमदे-फस्ले-बहार[10] है

कुमरी[11], कफ़े खाकस्तरो बुलबुल[12] कफ़से - रंग[13]
ऐ नाला[14], निशाने जिगरे-सोख्त[15] क्या है

मजबूरी - ओ - दावा - ए - गिरफ्तारी-ए उल्फत[16]
दस्ते तहे संग[17] आमद[18], पैमाने-वफ़ा[19] है

नाकरदा[20] गुनाहो की भी हसरत[21] की मिले दाद
यारब, अगर इन करदा[22] गुनाहो की सज़ा है

मय से गरज़ निशात[23] है किस रूसियाह[24] को
इक गूना[25] बेखुदी मुझे दिन रात चाहिए

खिज़ां[26] क्या ? फस्ले गुल[27] कहते हैं किसको ? कोई मौसम हो
वही हम हैं, कफ़स[28] है और मातम बालो पर[29] का है

---

१ स्थान की कमी २ शौक का गुबार ३ फंदा, बंधन ४ रेगिस्तान का विस्तार ५ मजनू की घाटी की ओर ६ बुलबुल ७ खस का दाग ८ विशाल घोसला ९ तूफ़ान का आगमन १० बसंत का आगमन ११ एक प्रसिद्ध सफ़ेद पक्षी १२ जले हुए घोसले और बुलबुल की राख के दाग १३ घोसले का रंग १४ आर्त्तनाद, चीत्कार १५ जला हुआ १६ प्रेम में गिरफ्तार होने की विवशता और दावा १७ पत्थर के नीचे दबा हाथ १८ आगमन १९ वफ़ा का वादा २० जो किए नही गए २१ लालसा २२ किए हुए २३ आनंद, हर्ष, खुशी २४ पापी २५ थोडी-सी २६ पतझड २७ बसंत २८ पिंजरा २९ परो का शोक।

न लाई शोखी - ए - अदेश[1], तावे[2] - रजे नौमीदी[3]
कफे अफसोस मलना[4] अहदे - तजदीदे तमन्ना[5] है

अपनी हस्ती ही से हो, जो कुछ हो
आगाही[6] गर नही, गफलत[7] ही सही

देखना किस्मत कि आप अपने पै रश्क[8] आ जाए है
मैं उसे देखूं, भला कब मुझसे देखा जाए है

हाथ धो[9] दिल से यही गर्मी गर अदेशे[10] मे है
आबगीन[11] तुदी ए - सहबा[12] से पिघला जाए है

शौक को यह लत कि हरदम नाल खीचे जाइये[13]
दिल की वो हालत कि दम लेने से घबरा जाए है

दूर चश्मे-बद[14]! तेरी बज्मे - तरब[15] से वाह वाह
नग्म[16] बन जाता है वां[17] गर नाल[18] मेरा जाए है

गरचे है तर्जे तगाफुल[19], पर्द दारे राजे - इश्क[20]
पर हम ऐसे खोये जाते है कि वो पा जाए है

हो के आशिक वो परी रुख[21] और नाजुक बन गया
रग खिलता जाए है, जितना कि उडता जाए है

---

१ आशका २ सामर्थ्य, सहन-शक्ति ३, नई आशा ४ अफसास म हाथ मलना ५ नई अभिलाषा का वचन ६ चेतना ७ सज्ञाहीनता ८ ईर्ष्या ९ खो बठना १० चितन ११ शीशे का पात्र (दिल) १२ शराब की गर्मी १३ आत्तनाद करत रहिए १४ बुरी दृष्टि १५ आन द की महफिल १६ गीत १७ वहाँ १८ रुदन, विलाप १९ उपेक्षा का ढग २० प्रम क रहस्य का आवरण २१ परी-जसी सुन्दर।

साया मेरा मुझ से मिस्ले-दूद[1] भागे है 'असद'
पास मुझ आतिश-बजा[2] के किस से ठहरा जाए है

नसय-ओ-नक्दे-दो आलम[3] की हकीकत[4] मालूम
ले लिया मुझ से मेरी हिम्मते आली[5] ने मुझे

कसरत आराई ए-वहदत[6] है परस्तारी ए वहम[7]
कर दिया काफिर इन असनामे खयाली[8] ने मुझे

हवसे-गुल[9] का तसव्वुर[10] मे भी खटका न रहा
अजब आराम दिया बे-परो-बाली[11] ने मुझे

चाक मत कर जैब[12] बे-अय्यामे गुल[13]
कुछ उधर का भी इशारा चाहिए

मुनहसिर[14] मरने पै हो जिसकी उमीद
नाउमीदी उसकी देखा चाहिए

फिर मुछ उस उस दिल को बेकरारी है
सीन जोया-ए-ज़ख्मे-कारी[15] है

चश्म[16] दल्लाले-जिन्से-रुस्वाई[17]
दिल खरीदारे-जौके-ख्वारी[18] है

---

१ धुएँ की तरह २ जिसके दिल में आग लगी हो ३ परलोक और इहलोक ४ वास्तविकता, सचाई ५ अत्यधिक साहसिकता ६ एकत्व की अनेकरूपता ७ भ्रम की पूजा ८ काल्पनिक प्रतिमाएँ ९ फूल की लालसा १० कल्पना ११ पंखों के न होने १२ गिरेबान १३ बसंत के दिनों के बिना १४ निर्भर १५ गहरे घाव का ढूँढने वाला १६ आँख १७ बदनामी के सामान का दलाल १८ अपमान व उन्माद का खरीदार।

दिल हवा-ए-खिरामे नाज[1] से फिर
महशरिस्ताने[2] - वेककारी है

सँभलने दे मुझे, ए नाउमीदी, क्या कयामत है
कि दामाने खयाले यार छूटा जाए है मुझ से

मुद्दत हुई है यार को महमाँ किए हुए
जोशे-कदह[3] से बज्म चरागाँ[4] किए हुए

फिर वजअ-ए-एहतियात[5] से रुकने लगा है दम
वरसो हुए हैं चाक - गरेवाँ किए हुए

फिर गर्मं नालाहा-ए-शररवार[6] है रफस[7]
मुद्दत हुई है सैरे - चरागाँ[8] किए हुए

फिर पुरसिशे[9] जराहते[10] -दिल को चला है इश्क
सामाने सद हज़ार नमकदाँ[11] किए हुए

बाहमदिगर[12] हुए हैं दिलो-दीद[13] फिर रकीब
नज्ज़ार -ओ-खयाल का सामाँ किए हुए

दिल फिर तवाफे[14]-कू-ए सलामत[15] को जाए है
पिन्दार[16] का सनमकद[17] वीराँ किए हुए

---

१ प्रेमिका के चलने से प्रकपित हवा २ क्यामत का मैदान ३ प्याल
भरमार से ४ प्रकाशित ५ सावधानी की रीति ६ आग बरसाने
आत्तनाद म लीन ७ साँस ८ दीपोत्सव की सर ९ हाल चाल पूछना १०
११ लाखों नमकदान लिये हुए १२ आपस म १३ दिल ओर नजर १४
रमा १५ वह गली जहाँ भत्सना मिलती है (प्रेमिका की गली) १६
१७ देवालय।

फिर शौक कर रहा है खरीदार की तलब[1]
अर्जे - मत ए -अक्लो - दिलो जा[2] किए हुए

दौडे हैं फिर हर एक गुलो - लाल पर खयाल
सद - गुल्सितां निगाह का सामां किए हुए

मांगे है फिर किसी को लबे-बाम[3] पर हवस[4]
जुल्फे सियाह रुख पै परेशा[5] किए हुए

चाहे है फिर किसी को मुकाबिल[6] मे आरजू[7]
सुरमे से तेज दश्न -ए मिजगा[8] किए हुए

इक नौबहारे -नाज[9] को ताके है फिर निगाह
चेहरा फरोगे - मय से गुलिस्ता[10] किए हुए

फिर जी मे है कि दर पै किसी के पडे रहे
सर जेरे बारे - मिन्नते - दरबा[11] किए हुए

जी ढूंढता है फिर वही फुरसत, कि रात दिन
बैठे रहे तसव्वुर जानां[12] किए हुए

गालिब' हमे न छेड कि फिर जोशे अश्क[13] से
बैठे है हम तहय्या - ए तूफां[14] किए हुए

---

१ मांग २ वुद्धि हृदय और प्राणो की सम्पत्ति का समपण ३ छत की मुडेर
र ४ तीव्र लालसा ५ काली अलको को चेहरे पर बिखेरे हुए ६ सामन
कामना ८ पलको की कटारी ९ नवयौवन की बहार (माशूक)
० जिसका चेहरा शराब पीने से फूल की तरह हो गया है ११ दरबान के
भार के बोझ से झुका हुआ १२ प्रेयसी की कल्पना १३ आंसुओं का उबाल
४ तूफान बरपा कर देने का दृढ निश्चय।

फरियाद की कोई लै[1] नही है
नाल पावदे नै[2] नही है

हाँ, खाइयो मत फरेबे-हस्ती[3]
हर चद[4] कहे कि है, नही है

हस्ती है न कुछ अदम[5] है 'गालिब'
आखिर तू क्या है, ऐ, नही है

वहुत दिनो मे तगाफुल[6] ने तेरे पैदा की
वो इक निगह कि बजाहिर[7] निगाह से कम है

देखना तकरीर की लज्जत[8] कि जो उसने कहा
मैंने यह जाना कि गोया[9] यह भी मेरे दिल मे है

बस, हुजूमे नाउमीदी[10] खाक मे मिल जाएगी
यह जो इक लज्जत हमारी सइ ए बेहासिल[11] मे है

घर मे था क्या कि तेरा गम उसे गारत[12] करता
वो जो रखते थे हम इक हसरते तामीर[13] सो है

उग रहा है दरो दीवार[14] पै सब्ज[15] 'गालिब'
हम बयावाँ मे है और घर मे वहार आई है

१ स्वर विशेष, लय २ बासुरी का पावद ३ अस्तित्व का धोखा ४ यद्यपि, कितना ही ५ परलोक, अभाव अनस्तित्व ६ उपेक्षा ७ प्रकटत ८ आनद ९ मानो १० निराशाओ की भीड ११ व्यर्थ प्रयास १२ डुबाना, नष्ट करना १३ निर्माणेच्छा १४ दरवाजा और दीवार १५ घास झाडी।

वो बाद - ए - श्वान[1] की सरमस्तियाँ कहाँ
उठिए बस अब कि लज्जते-ख्वावे सहर[2] गई

देखो तो दिलफरेबी - ए - अदाजे - नक्शे - पा
मौजे - खिरामे यार भी क्या गुल क्तर गई

हर बुल्हवस[3] ने हुस्न परस्ती[4] शआर[5] की
अब आवरू - ए्व ए - अहले नजर[6] गई

जिन्दगी अपनी जब इस शक्ल से गुजरी 'ग़ालिब'
हम भी क्या याद करेंगे कि खुदा रखते थे

मिसाल यह मेरी कोशिश की है कि मुर्गे असीर[7]
करे कफस[8] मे फराहम[9] खस आशियां[10] के लिए

बकद्रे - शौक[11] नही, जर्फे तगना - ए गजल[12]
कुछ और चाहिए वुसअत[13] मेरे बया के लिए

कोई उम्मीद वर[14] नही आती
कोई सूरत नज़र नही आती

मौत का एक दिन मुअय्यन[15] है
नीद क्यो रात भर नही आती

आगे आती थी हाले दिल[16] प हँसी
अब किसी वात पर नही आती

---

१ रात की शराव २ सुबह के सपन का आनद ३ व्यसनी ४ सौदय की पूजा ५ आदत बना लो ६ सौन्दय के परख करने वाला की इज्जत ७ बन्दी पक्षी ८ पिजरा ९ उपलब्ध १० घासला नीड ११ मात्र शौक १२ गजल का पात्र छोटा है १३ विस्तार १४ प्रकट होना दिखाइ दना १५ निश्चित १६ दिल की स्थिति।

जानता हूँ मवावे ताअतो-जुहद[1]
पर तबीअत इधर नही आती

है कुछ ऐसी ही बात, जो चुप हूँ
वर्ना क्या-बात-कर नही आती

हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी
कुछ हमारी खबर नही आती

न शोले मे यह करिश्मा[2], न बर्क[3] मे यह अदा
कोई बताओ कि वो शोखे-तुदखू[4] क्या है ?

रगो मे दौडते फिरने के हम नही कायल
जब आँख से ही न टपका, तो फिर लहू क्या है ?

वाइज[5] न तुम पियो, न किसी को पिला सको
क्या बात है तुम्हारी शराबे तहूर[6] की !

गो वाँ[7] नही पै वाँ के निकाले हुए तो हैं
काबे से इन बुतो को भी निस्बत[8] है दूर की

क्या फर्ज है कि सबको[9] मिले एक सा जवाब
आओ न हम भी सैर करे कोहे-तूर[10] की

नुक्त चीं[11] है, गमे-दिल[12] उसको सुनाए न बने
क्या बने बात जहा बात बनाए न बने

---

१ ईश्वर पूजा और धार्मिक कर्म काड का पुण्य २ चमत्कार ३ बिजली ४ गुस्सैल ५ धर्मोपदेशक ६ वह पवित्र शराब जो स्वर्ग म मिलेगी ७ वहाँ ८ लगाव ९ जरूरी १० वह पहाड जिस पर हजरत मूसा ने ईश्वर का प्रकाश देखा था ११ हर बात म दोष निकालने वाला, अर्थात् माशूक १२ दिल का ग़म, दुख।

कह सके कौन कि यह जल्वगरी[1] किसकी है ?
पर्दा छोडा है वो उसने कि उठाए न बने

नहीं निगार[2] को उल्फत, न हो, निगार तो है
रवानी ए रविशो - मस्ती ए अदा[3] कहिए

नही बहार को फुरसत, न हो, बहार तो है
तरावते[4] - चमनो - खूबी - ए- हवा कहिए

सफीना[5] जब कि किनारे पैं आ लगा 'ग़ालिब'
खुदा से क्या सितमो जौरे नाखुदा[6] कहिए

हजारो ख्वाहिशे ऐसी कि हर ख्वाहिश पैं दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान[8], लेकिन फिर भी कम निकले

भरम खुल जाए जालिम तेरे कामत[9] की दराजी[10] का
अगर इस तुर ए पुर पेचो खम का पेचो खम[11] निकले

हुई जिनसे तवक्को[12] खस्तगी[13] की दाद[14] पाने की
वो हम से भी जियादा खस्त ए तेगे सितम[15] निकले

है हवा मे शराब की तासीर
बाद नोशी[16] है बादपैमाई[17]

दहर[18] जुज[19] जल्व -ए-यकताई ए-माशूक[20] नही
हम कहाँ होते, अगर हुस्न[21] न होता खुद-बीं[22]

---

१ सौंदय सुदरता २ सुदरी ३ मथर गति का सौंदय एव अदा की मस्ती ४ ठडक ५ नाव ६ नाविक के जोर जुल्म ७ अभिलाषा ८ इच्छा, लालसा। ९ कद १० ऊँचाई ११ बल खाए हुए बालों का बल १२ अपेक्षा १३ घायल अवस्था १४ प्रशसा १५ अत्याचार की तलवार से घायल १६ शराब पीना १७ हवा खाना १८ काल युग, समय १९ अलावा, सिवाय २० प्रेमिका का अद्वितीय सौंदय २१ सौंदय २२ आत्मदर्शी, अहकारी।

बेदिलीहा-ए तमाशा, कि न इबरत[1] है, न ज़ौक[2]
बेकसीहा[3]-ए-तमन्ना, कि न दुनिया है, न दीं[4]

हर्ज़[5] है, नग्म-ए-ज़ेरो-बमे[6]-हस्ती ओ-अदम[7]
लग्व[8] है, आईन-ए-फ़र्के-जुनूनो-तमकीं[9]

नक्श-ए-मानी[10] हम[11] खमयाज़[12] ए-अर्ज़-सूरत[13]
सुखने-हक[14] हम पमान-ए ज़ौके तहसीं[15]

लाफ़े[16]-दानिश[17] गलत व नफ़्फ़ ए इबादत[18] मालूम
दुर्दे[19]-यक सागरे गफ़लत[20] है, चे[21] दुनिया व चे दीं

• •

---

१ मानसिक दुख २ आनन्द ३ दुख, कष्ट (बहुवचन) ४ धर्म ५ व्यर्थ ६ तलो-ऊपर उथल-पुथल ७ अस्तित्व और अनस्तित्व ८ झूठ ९ गंभीरता १० अर्थ ११ समस्त १२ परिणाम अंगड़ाई १३ रूपानद १४ अधिकार की बात १५ प्रशंसा १६ डींगें, शेखी १७ बुद्धिमत्ता १८ आराधना का लाभ १९ तलछट २० असतर्कता की सुराही २१ चाह।